भूमिहार ब्राह्मण समाज

[ऐतिहासिक विवरण, ब्राह्मणों की एकता तथा
मूल गोत्रादि विवेचन सहित]

卐

लेखक—

श्री चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद

卐

प्रकाशक—
श्री चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद
श्रीरामपुर अयोध्या, पत्रा०–बैनी, जिला–समस्तीपुर

卐

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

भूमिहार ब्राह्मण समाज

★

● द्वितीय संस्करण—१९८९
(संशोधित एवं परिवर्द्धित)

★

★

● लेखक तथा प्रकाशक—
चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद
श्रीरामपुर अयोध्या, पत्रा०-वैनी
जिला-समस्तीपुर-८४८१३१

★

● मूल्य—१६.०० रुपये मात्र।

★

● मुद्रक—श्री विजय प्रेस, रमना, मुज०।

प्राक्कथन

भूमिहार ब्राह्मण समाज का यह संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण पाठकों के सामने है। आशा है, पाठक इसे भी पसन्द करेंगे। इसमें जानकारी की बहुत सी बातें बढ़ा दी गयी है तथा विशिष्ट व्यक्तियों की सूची हटा दी गयी है—क्योंकि विशिष्ट व्यक्तियों के परिचयात्मक विवरण से युक्त एक अलग पुस्तक 'ब्रह्मर्षि वंश' भाग २ के नाम से प्रकाशित हो गयी है।

पुस्तक प्रकाशित हो रही है यह जानकर स्वतंत्रता सेनानी, हिन्दी-उर्दू के विशिष्ट कवि, सत्यासत्य महाकाव्य तथा अन्य काव्य ग्रन्थों के प्रणेता बन्धुवर पं० श्री कृष्णराय 'हृदयेश' (गाजीपुर) ने सहयोग के लिए पहलकर एक सौ रु० भेजकर मेरे तथा समाज के प्रति अगाध प्रेम का परिचय दिया है। इसी प्रकार मुकुन्दपुर (वैशाली) के शिक्षक श्री मदन प्र० सिंह ने भी एक सौ रु० भेजकर समाज प्रेम का परिचय दिया है। अतएव दोनों बन्धु धन्यवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त 'ब्रह्मर्षिवंश' भाग २ से प्राप्त राशि दो हजार रुपये भी सहयोग के रूप में व्यवहृत हुआ है। इसके लिए श्री मधुसूदन चौधरी : मुखिया श्रीरामपुर अयोध्या) भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने 'ब्रह्मर्षिवंश' भाग २ के प्रकाशन में सहयोग किया था। शेष राशि की व्यवस्था लेखक ने स्वयं की है।

चौधरी राजनारायण शर्मा

श्रीरामपुर अयोध्या

पत्रा०—वैनी (समस्तीपुर)

कोई हानि नहीं है, चाहे वह स्वजाति की करे चाहे अन्य जाति की। यह ब्राह्मण का कर्म है। इसमें कोई हानि नहीं है।'' इसी क्रम में मेरठ के त्यागी ब्राह्मण श्री चौधरी रघुवीर नारायण सिंह की अध्यक्षता में १९२६ में पटना में सम्पन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा ने स्वामी जी के पुरोहिती अन्दोलन की पुष्टि कर दी। ब्राह्मणों में दल भेद मिटाने और स्वाबलम्बन की दृष्टि से भूमिहार ब्राह्मण भी थोड़ी संख्या में अपने ही ब्राह्मण समाज की पुरोहिती करने लगे। यद्यपि सैकड़ों वर्षों से हजारीबाग के चतरा अनुमंडल में खरबार राजपूत, चन्दावत राजपूत, माहुरी वैश्य एवं कायस्थों की पुरोहिती अभी तक ये भूमिहार ब्राह्मण ही करते आ रहे हैं। नालन्दा तथा बिहारशरीफ के भी कुछ भूमिहार ब्राह्मण वैश्यों की पुरोहिती करते आ रहे हैं तथा अनेक बाधाओं के बावजूद अपने खानदानी पेशे को न छोड़ सके। इसी प्रकार अयाचक ब्राह्मण होते हुए भी बिजनौर जिले के गजरौल, खानपुर आदि के त्यागी रवे राजपूतों की पुरोहिती करते रहे हैं।

पुरोहिती करनेवाले दल के ब्राह्मणों में भी कुछ वंश में कभी पुरोहिती वृत्ति नहीं अपनायी गयी, जैसे मैथिल ब्राह्मण में ही श्रोत्रिय तथा अन्य। सरयूपारीण ब्राह्मणों में भी मध्य प्रदेश आदि में बस गये पराशर गोत्रीय हस्तगामे के पांडेय आदि। अब तो पुरोहिती करनेवाले वंश के भी बहुत से लोग इसे छोड़ने लगे हैं। इसमें कोई नियम नहीं है कि जो ब्राह्मण पुरोहिती करते थे, वे न छोड़ें और जो पुरोहिती न करते थे वे न करें' अच्छा तो यही होता कि ब्राह्मण मात्र पूर्व की तरह अपने कर्म-धर्म में स्वाबलम्बी बनते।

—:०:०:—

भूमिहार ब्राह्मण समाज

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१ ब्राह्मण—	(१-३२)
[क] उत्पत्ति एवं कर्म	१
[ख] द्विविध ब्राह्मण	६
[ग] दशविध ब्राह्मण	८
[घ] भूमिहार ब्राह्मण	९
२ ब्राह्मणों की एकता—	(३२-६९)
[क] विद्वानों के विचार	३२
[ख] भूमिहार ब्राह्मण—मैथिल ब्राह्मण	४०
[ग " कान्यकुब्ज ब्राह्मण	४९
[घ] " सरयूपारीण ब्राह्मण	५५
[ङ] " जुझौतिया ब्राह्मण	५९
[च] " सारस्वत ब्राह्मण	६०
[छ] " बंगाली ब्राह्मण	६१
[ज] " गौड़ ब्राह्मण	६२
[झ] " पर्वतीय ब्राह्मण	६३
[ञ] " त्यागी ब्राह्मण	६३
[ट] " महियाल ब्राह्मण	६५
[ठ] " चित्पावन ब्राह्मण	६६
३ मूल	६९
४ गोत्र	७१
५ उपाधि	७५
६ पुरोहिती	७९

●

ब्राह्मण

(उत्पत्ति एवं कर्म)

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त तथा शुक्ल यजुर्वेद के १० वें मंत्र में ब्राह्मण की उत्पत्ति इस प्रकार कही गयी है :—

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् , बाहु राजन्यः कृतः ।
ऊरुतदस्य यद्वैश्यः, पद्भ्यां शूद्रो अजायत् ॥

ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण[1] वाहु से क्षत्रिय, जंघे से वैश्य और पांव से शूद्र उत्पन्न हुए ।
यह ईश्वर की मानसिक सृष्टि हुई—बाद में मैथुनी सृष्टि हुई ।
मनु जी ने भी कहा है :—

"लोकानां तु विवृद्ध यर्थं मुख वाहुरुपादतः ।
ब्राह्मणां क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत् ॥"

कुछ विद्वानों के अनुसार पहले एक वेद, एक अग्नि और एक ही वर्ण था । वर्णों में कोई विशेषता नहीं है । संपूर्ण संसार ब्रह्ममय उत्पन्न हुआ । पीछे कर्मानुसार वर्ण की उत्पत्ति हुई :-

एक एव पुरा वेद प्रणवः सर्ववाङ्मयः ।
देवोनारायणोनान्यः एकोऽग्नि वर्ण एव च ॥
न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्रह्ममयं जगत् ॥
ब्राह्मणं पूर्वं सृष्टं हि कर्मणा वर्णतां गतम् ॥

१—ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण का अर्थ आजकल के किसी खास नामधारी ब्राह्मण वर्ग से न होकर वर्तमान काल के गौड़, मैथिल, कान्यकुब्ज, सारस्वत, सरयूपारीण, जुझौतिया, भूमिहार, सनाढ्य, त्यागी, महियाल, चित्पावन, नम्बूदरी, अनावले आदि सभी ब्राह्मणों की उत्पत्ति से है । वैदिक काल तथा मनु के समय तक कर्म या देशपरक नामकरण नहीं हुआ था इस लिए शास्त्रों में ब्राह्मण, अग्रजन्मा, विप्र, द्विजोत्तम आदि शब्द ही व्यवहार में मिलता है, गौड़, मैथिल, कान्यकुब्ज, भूमिहार, सारस्वत आदि का नहीं ।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

वर्ण की उत्पत्ति कर्म से या जन्म से मानें, लेकिन यह निश्चित है कि प्राचीन काल में ही वर्ण विभाग स्थापित हो चुका था और जन्म से ही जाति का बोध होता चला आ रहा है। सम्पूर्ण संसार में इसी की मान्यता भी है। हारित स्मृति इसी को पुष्ट करता है :—

"ब्राह्मण्यां ब्राह्मणेनैवमुत्पन्नो ब्राह्मणः स्मृतः।"

जिसका अर्थ है ब्राह्मणी के रज से और ब्राह्मण के वीर्य से जो उत्पन्न हुआ, उसे ब्राह्मण कहते हैं।

ब्राह्मण सभी वर्णों में श्रेष्ठ माने जाते रहे हैं, मनु जी ने भी अपनी स्मृति में ऐसा ही कहा है :–

"भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः नरेषु ब्राह्मणः स्मृताः॥"

जीव में प्राणधारी, प्राणधारियों में बुद्धिमान, बुद्धिमानों में मनुष्य तथा मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं।

शास्त्रों के अनुसार मोह, अहंकार, संग, परिग्रह, राग, द्वेष आदि से मुक्त तथा सत्य, तप, इन्द्रिय निग्रहयुक्त और सब जीवों पर दया करने वाले को ही सच्चा ब्राह्मण कहा गया है :–

निर्ममो निरहंकारो, निःसंगो निःपरिग्रहः।
रागद्वेष विनिर्मुक्तस्तं देवा ब्राह्मणं विदुः।
सत्यंब्रततपो ब्रह्म ब्रह्मचेन्द्रिय निग्रह :।
सर्व भूते दया ब्रह्म एतद् ब्राह्मण लक्षणम्॥"

उपर्युक्त लक्षणों से युक्त ब्राह्मण गण ब्रह्मावर्त और ब्रह्मर्षि देश में निवास करते थे। मनुस्मृति में उन देशों का वर्णन इस प्रकार है :—

"सरस्वती दृषद्वत्योर्देव नद्योयदन्तरम्।
तंदेव जिर्मितं देश ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥

सरस्वती और दृषद्वती देव नदियों के बीच का जो देश देवताओं का रचा है, उसको ब्रह्मावर्त कहते हैं।

"कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पाञ्चालाः शूरसेनका :।
एष ब्रह्मर्षि देशो वै ब्रह्मावर्तातदन्तरः॥"

कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल (पंजाब) और शूरसेन (मथुरा का प्रान्त) ये ब्रह्मर्षियों के निवास योग्य देश ब्रह्मावर्त के पास हैं।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

इसी लिए तो मनु जी ने इस देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों से पृथ्वी पर्यन्त के सभी व्यक्ति को अपना-अपना आचार सिखने का उपदेश दिया है :-

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥"

शास्त्रों में ब्राह्मणों के छः कर्म बताये गये हैं :-

"अध्यापनमध्ययनं याजनं यजनं तथा ।
दानं प्रतिहंचैव विशुद्धाच्च प्रतिग्रहः ॥ (मनुस्मृति)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान तथा प्रतिग्रह ।

"षण्णांतु कर्मणामस्य त्रीणि कर्माणि जीविका ।
याजनाध्यापने चैव विशुद्धांच्च प्रतिग्रहः ॥ (मनुस्मृति)

छः कर्मों में से यज्ञ कराना, पढ़ाना और शुद्धजनों का प्रति ग्रह करना ये तीन कर्म जीविका के लिए है ।

अत्रि स्मृति में भी लिखा है :-

"कर्म विप्रस्य यजनं दानमध्ययनं तपः ।
प्रतिग्रहोऽध्यापनं च याजनं चेति वृत्तयः ॥"

ब्राह्मण के कर्म तो यज्ञ, दान और अध्ययन तीन ही हैं । प्रतिग्रह, पढ़ाना और यज्ञ कराना तीन जीविकायें हैं ।

मनु जी ने कहा है :-"प्रतिग्रह समर्थोऽपि प्रसंगं तत्र वर्जयेत् ।[१]
प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्रह्मतेजं दुष्य जीवनम् ॥"

प्रतिग्रह में समर्थ होने पर भी प्रतिग्रह का नाम न ले, क्योंकि उससे ब्रह्मतेज का नाश हो जाता है ।

पराशर स्मृति के अनुसार ब्राह्मणों के छः कर्म ये हैं :-

'सन्ध्या स्नानं जपो होमो देवतानाम् च पूजनम् ।
आतिथ्यं वैश्वदेवं च षट् कर्माणि दिने दिने ॥'

दिन रात्रि की सन्ध्या और स्नान, गायत्री का जप, अग्निहोत्र, देवों (शिव,विष्णु आदि) का पूजन , अतिथिसत्कार तथा बलि वैश्वदेव ये छः कर्म नित्य करने चाहिये ।

१—श्री रमाकान्त झा लिखित 'मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था' के पृष्ठ २३ में भी ब्राह्मणों के लिए यजन, अध्ययन और दान तीन को विशिष्ट तथा याजन अध्यापन तथा प्रतिग्रह को वृत्ति के रूप में निकृष्ट बताया गया है ।

पराशर स्मृति में ही लिखा है :—षट्कर्म सहितो विप्रः कृषिकर्म च कारयेत्। सन्ध्या आदि छः कर्म करनेवाला ब्राह्मण जीविका के लिए कृषि कर्म करवाये।

वैदिक काल तथा मनु के समय तक ब्राह्मणों में कोई भेदोपभेद न था। एम० ए० शेरिंग ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू' के ब्राह्मण जातियां' शीर्षक में लिखा है :—जिस प्रकार ब्राह्मण इस समय एक दूसरे से भिन्न हैं, पहले ऐसा नहीं था। मनु के समय तक वे अविभक्त थे, क्योंकि उनकी स्मृति में उनका भिन्न होना पाया नहीं जाता।" पीछे चलकर जब सभी वेदों का अध्ययन संभव था तब जो जिस वेद का अध्ययन किया, वे तदनुसार ही समवेदी, यजुर्वेदी आदि करके परिचय देने लगे तब वेदानुसार ही उनके भेद थे।

बाद में ब्राह्मणों ने शास्त्रों के साथ शस्त्रों में भी निपुणता प्राप्त की और शास्त्रों के अतिरिक्त शस्त्रों की शिक्षा भी देने लगे। भगवान परशुराम का उद्घोष 'अग्रतः चतुरो वेदाः, पृष्ठतः सशरं धनुः। इदं ब्रह्म इदं क्षत्रं शापादपि शरादपि।' भी इसकी पुष्टि करता है। साथ ही ब्राह्मण सैनिक, शासक और भूमि के अधिपति बने। यह स्वभाविक भी है, क्योंकि 'ब्राह्मणोजाय मानो हि पृथिव्यामधि जायते।' अर्थात् ब्राह्मण उत्पन्न होते ही सारी पृथ्वी का अधिकारी होता है।

महाभारत, शान्ति पर्व, अध्याय ७२ में भी पुरुरूवा द्वारा वायु देवता से यह पूछने पर कि यह पृथ्वी धर्म दृष्टि से ब्राह्मण की है था क्षत्रिय की तो वायु देवता ने कहा कि इस पृथ्वी की सारी चीजें ब्राह्मण की ही है' ऐसा उल्लिखित है।

यह सर्व बिदित है कि भगवान परशुराम ने २१ वार आततायी राजाओं का विनाश कर सारी पृथ्वी कश्यप आदि ब्राह्मणों को दान कर दी थी :—

"भुजवल भूमि भूप विनु कीन्हा।
विपुलवार महिदेवन दीन्हा॥

बाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड के ६७ वें सर्ग में राज्य करनेवाले ब्राह्मणों के सम्बन्ध में लिखा है :—

"व्यतीतायां तु शर्वर्यामादित्यस्योदये ततः।
समेत्य राज्य कर्तारः सभामीयुर्द्विजातयः॥
मार्कण्डेयोऽथ मौदगल्यो बामदेवश्च कश्यपः।
कात्यायनों गौतमश्च जावालिश्च महायशाः॥"

भूमिहार ब्राह्मण समाज

उस दिन रात्रि बीतने पर राज्य करने वाले महान ब्राह्मण मार्कण्डेय, मौद्गल्य, वामदेव, कश्यप, कात्यायन और जाबालि प्रभृति मिलकर सभा में आये।

भगवान राम ने भी ब्राह्मणों को यज्ञ कराने के बदले दक्षिणा स्वरूप जमीन[३] दी थी और धर्मारण्य में ब्राह्मण राज्य करते थे।

आचार्य द्रोण भी द्रुपद से राज्य छीनकर आधा भाग के राजा हुए थे तथा शस्त्रों की शिक्षा भी देते थे और महाभारत युद्ध में सेनापतित्व भी किया था। इन सब बातों से स्पष्ट है कि जमीन शासन और सेना से ब्राह्मणों का सम्बन्ध प्राचीन काल से रहा है।

पं० सूर्यनारायण शर्मा भू० पू० विधायक लिखित 'सैनिक ब्राह्मण' के पृष्ठ ५१ के अनुसार :--'पंजाब के बाहीक नामक विभाग में ही पहले पहल आयुध जीवी ब्राह्मणों का संघ स्थापित हुआ था। जैसा कि पाणिनी ने अपने सूत्र में लिखा है--'आयुध जीवी संघात्'। इसी आधार पर डा० काशी प्रसाद जायसवाल ने ब्राह्मणक देश के विषय में लिखा है--'यह ब्राह्मणों का संघ राज्य था, जहाँ आयुधजीवी ब्राह्मण बसते थे। 'आयुध जीविनो ब्राह्मणा: यस्मिन् स ब्राह्मणक:।"

'धर्मयुग' १८ अगस्त १६७४ के पृष्ठ २६ के अनुसार :--'चीनी वृतान्तों के अनुसार फूनान राज्य की स्थापना भारत के एक ब्राह्मण कौंडिन्य ने की थी।"

'बिहार एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन' के अनुसार :---

'ब्राह्मण सेनापति पुष्य मित्र विदिशा का रहनेवाला शुंग वंशी ब्राह्मण था। इसी ने अश्वमेध यज्ञ का उद्धार किया था। शुंग राज्यकाल में पाटलिपुत्र के साथ विदिशा भी उसके साम्राज्य की राजधानी थी। शुंगों के राज्य की मुख्य राजधानी पाटलिपुत्र में ही थी। पुष्य मित्र सहित शुंगो की मुख्य शाखा में दस राजा हुए, जिन्होंने पाटलिपुत्र में ११० वर्ष राज्य किया।"

शुंगवंशी सम्राट देवभूति को (७४ ई० पू०) मारकर उसके ब्राह्मण मंत्री वासुदेव कण्व ने मगध की गद्दी पर अधिकार कर लिया। वासुदेव ने ६ वर्ष, तथा उसके उत्तराधिकारियों में भूमित्र ने १४ वर्ष, नारायण ने १२ वर्ष और सुशर्मा ने १० वर्ष मगध में राज्य किया। कण्वों का अधिकार मगध और उसके आस पास के प्रदेशों पर रहा।"

३--भूमि से सम्बन्ध होने के कारण ही आगे चलकर भूसुर भूदेव, महिसुर, भूमिसुर, महिधर, भूमिहार, महिपाल, क्षितिपावन अदि शब्द ब्राह्मणों के के लिए प्रयुक्त हुए।

सैनिक ब्राह्मण' पृष्ठ ५४ के अनुसार :—

"आठवीं शताब्दी में सिन्ध प्रान्त के राजा दाहर ने मुहम्मद बिन कासिम से भारत पर मुसलमानों की पहली चढ़ाई में अमरावती के किनारे युद्ध किया था। वह मथुरा के राजा नरसिंह देव का पोता था, जो छिब्बर महियाल ब्राह्मणों के पूर्वज थे।"

वीर सावरकर रचित 'भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ, भाग २ में इसकी चर्चा इस प्रकार की गयी है:-सन ७११ ई० में अरबी मुसलमान सेनापति ने पचास हजार की सेना लेकर सिन्ध पर आक्रमण किया। उस समय सिन्ध पर वैदिक स्वाभिमानी ब्राह्मण राजकुलक दाहिर नामक राजा राज्य करता था। प्रथम आक्रमण में देवल नामक सिन्धु द्वार (बन्दरगाह) को दाहिर के हाथ से छीनकर जीता। सूचना पाते ही दाहिर अपनी सशस्त्र सेनाओं के साथ समरांगण में आ डटा। ब्राह्मणावाद नामक स्थान पर दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई। दाहिर की सेना में अरबी मुसलमान भी थे-उसने भी दाहिर की हिन्दू सेना पर धावा बोल दिया। फिर भी दाहिर लड़ते हुए युद्ध में मारा गया-रानी ने सैंकड़ो वीरांगनाओं के साथ जौहर का वरण किया।"

हिन्दी के मूर्द्धन्य विद्वान प्रो० राजनाथ पांडेय, सुलतानपुर (उ०प्र०) द्वारा २०-८-८१ को चौधरी राजनारायण शर्मा को लिखे पत्र के अनुसार :- "सिहर्ष राय के मारे जाने के बाद उसके ब्राह्मण मंत्री 'चच' ने सौवीर (सिंध) पर अपना आधिपत्य जमाया। अरबों ने 'चच' की मृत्यु के बाद उसके पुत्र बल्हरा (वल्लभ राय) को दाहर (दार्हय-नास्तिक) कहकर इतिहास में बदनाम किया है। ७१० ई० में अरब सेना पति महम्मद बिन कासिम ने इन्हें युद्ध में मार डाला था।"

द्विविध ब्राह्मण

मनु स्मृति में प्रतिग्रह को ब्रह्मतेज का नाश करनेवाला बताया गया है। बशिष्ठ और बाल्मीकि ने भी इसे मन्द कहा है। प्रतिग्रह में प्रवृत और निवृत के आधार पर प्राचीन काल से ब्राह्मणों में दो भेद का होना प्रारम्भ हो गया था। राजा इक्ष्वाकु ने पिप्पलाद-पुत्र के तप तेज को देखकर जब उसे कुछ देना चाहा तो पिप्पलाद-पुत्र ने अस्वीकार करते हुए कहा-"ब्राह्मणाः द्विविधा राजन्! धर्मश्च द्विविधः स्मृतः प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहम् प्रतिग्रहात् ॥" (महा० शान्ति पर्व) "हे राजन्! ब्राह्मण दो प्रकार के

होते हैं। एक प्रतिग्रह में प्रवृत्त और दूसरे उससे निवृत्त। मैं प्रतिग्रह आदि से निवृत्त हूँ।"

इस प्रकार प्रतिग्रह में प्रवृत्त और निवृत्त के आधार पर ब्राह्मणों के दो भेद हो जाने पर भी कोई अलग नाम का प्रचलन नहीं हुआ था। बाद में निवास स्थान के अनुसार उनके दो भेद (१) गौड़ और (२) द्रविड़ हो गये। विन्ध्य के उत्तर में निवास करने वाले गौड़ ब्राह्मण और दक्षिण में निवास करने वाले द्राबिड़ ब्राह्मण कहलाये। गौड़ और द्रबिड़ देशों के नाम हैं। आगे चलकर इन भेदों में भी प्रवृत्त और निवृत्त के आधार पर भी भेद बना रहा। सिर्फ यज्ञ कराने और दान लेने वाले प्रवृत्त (याचक) और उससे निबृत्त अयाचक हुए। याचक दलीय ब्राह्मणों में भी कुछ अयाचक और अयाचक दलीय ब्राह्मणों में भी अल्प संख्या में कुछ याचक रहते रहे हैं।

याचकदलीय (सरयूपारीण, मैथिल आदि) ब्राह्मणों में भी कुछ लोग पुरोहिती (याजन कराना तथा दान लेना) नहीं करते वे, अयाचक हैं।

अयाचक दलीय ब्राह्मणों (भूमिहार, त्यागी आदि) में भी कुछ लोग परम्परा से पुरोहिती (यज्ञ कराने और दान लेने) का काम करते आ रहे हैं और वे याचक हैं। जैसे हजारीबाग के चतरा तथा इटखोरी थाने के भूमिहार ब्राह्मणों का पेशा पुश्त-दरपुश्त से पुरोहिती है और वही उनके कागजों में भी लिखा जाता है। बिहार शरीफ और नालन्दा के भी कुछ भूमिहार ब्राह्मण वैश्यों की पुरोहिती कराते आ रहे हैं तथा प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर सैंकड़ों भूमिहार ब्राह्मण दान लेते आ रहे हैं। इसी प्रकार गजरौला, मुगलपुर, खानपुर (बिजनौर) के त्यागी ब्राह्मण भी राजपूतों के पुरोहित रहे हैं।

अयाचक दलीय ब्राह्मण बिहार के मगध में सीधे ब्राह्मण या उसका अपभ्रंश बाभन, तिरहुत में पश्चिमीय ब्राह्मण,[4] काशी के आसपास (पूर्वी उत्तर प्रदेश) में भूमिहार ब्राह्मण, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में त्यागी ब्राह्मण, पंजाब में महियाल ब्राह्मण, उड़ीसा में सरूआ और मस्ताना

४—पश्चिमीय ब्राह्मण भी अब भूमिहार ब्राह्मण ही कहते हैं।

ब्राह्मण, महाराष्ट्र में चित्पावन ब्राह्मण, गुजरात में सिपाही, नागर और ब्राह्मण, महाराष्ट्र में अनावले (देसाई) ब्राह्मण, राजपुताना में गोलापूर्व ब्राह्मण, मद्रास में अय्यर तथा लौकिक ब्राह्मण और मैसूर में महीसुर ब्राह्मण कहलाते रहे हैं। कुछ लोग औदिच्य और नम्बूदरी ब्राह्मणों की गणना भी अयाचक ब्राह्मण में करते हैं।

दशविद्य ब्राह्मण

ब्राह्मणों के कर्मानुसार दश भेद (देव, मुनि, द्विज, राजा, वैश्य, शूद्र, मार्जार, पशु, म्लेच्छ और चांडाल बताये गये हैं :—

"देवो मुनिर्द्विजो राजा वैश्यो शूद्रो विडालकः।
पशुम्लेच्छश्च चान्डालो विप्रः दशविधाः स्मृताः ॥

इन भेदों के अनुसार वर्तमान काल में कोई गणना नहीं होती है। देश परक दश भेदों तथा उनके उपभेदों के अनुसार ही गणना होती है। पहले बताये गये देशपरक दो भेदों से ब्राह्मण के दश भेद हुए- 'गौड़ द्रबिड़ भेदेन तयोर्भेदा दश स्मृताः।'

ब्राह्मणों के दश भेद देश परक इस प्रकार हैं :—

१—"सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौड़ाश्च मैथिलोत्कलाः।
गौड़ाः पंच समाख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिनः ॥

विन्ध्य के उत्तर में निवास करने वाले सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल (उड़िया) ये पांचों गौड़ के भेद हैं--इन्हें पंचगौड़ कहते हैं।

२ –"कर्णाटकाश्च तैलंगाः द्राविड़ाः महाराष्ट्रकाः।
गुर्जराश्चेति पंचैव, द्राविड़ाः विन्ध्य दक्षिणे ॥"

विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में निवास करने वाले कर्णाटक, तैलंग, द्रविड़ महाराष्ट्र और गुर्जर ये पांचों भेद द्राविड़ के हैं। इन्हें पंच द्राविड़ कहते हैं।

इस प्रकार दस भेद स्थान के नाम पर ब्राह्मणों के हुए। वास्तव में यह भेद कृत्रिम तथा अर्वाचीन हैं। इन भेदों के अन्तर्गत शाकद्वीपी क्रौंचद्वीपी आदि ब्राह्मण नहीं आते हैं, लेकिन सरयूपारीण, सनाढ्य, जुझौतिया, भूमिहार, त्यागी, महियाल, अनावले आदि ब्राह्मण भेदोपभेद में आ जाते हैं। भेदोपभेद में आने वाले और न आने वाले सभी एक समान ब्राह्मण हैं।

ब्राह्मण के दस भेदों में गौड़, मैथिल, सारस्वत, कान्यकुब्ज और उत्कल गौड़ कहलाते थे, पीछे गौड़ न कहे जाकर अलग-अलग नामों से पुकारे जाने लगे और गौड़ एक खास भेद के लिए रूढ़ि हो गया। इसी प्रकार कर्णाटक, तैलंग, महाराष्ट्र, द्राविड़ और गुर्जर द्राविड़ कहलाते थे पीछे द्राविड़ न कहे जाकर अलग-अलग नामों से पुकारे जाने लगे और द्राविड़ एक खास भेद के लिए रूढि हो गया। बाद में इन सबों के भी स्थान व्यवसाय, मूल, गोत्रादि के अनुसार इतने भेद हो गये कि पं० छोटेलाल शर्मा गौड़ ने अपने ब्राह्मण निर्णय में ३२४ प्रकार के भेद लिखा है। क्रूक साहब के अनुसार ९५४ प्रकार, शेरिंग साहब के अनुसार १७८२ प्रकार तथा ब्लूम फील्ड के अनुसार २५०० प्रकार के ब्राह्मण हैं। उत्तर प्रदेश की जनगणना (१८६५ ई०) रिपोर्ट में ६८ प्रकार के ब्राह्मणों की संख्या लिखी गयी है।

भूमिहार ब्राह्मण

पंचगौड़ में उत्कल के साहू, सेनापुरी, प्रधान, महन्ती, आदि सारस्वत के बनजाई, मोहयाल आदि, गौड़ के गुर्जर गौड़, वैदिक गौड़ आदि, मैथिल के श्रोत्रिय, योग, जैवार आदि भेद हैं। उसी प्रकार कान्यकुब्ज के भी सरयूपारीण, सनाढ्य, भूमिहार, जुझौतिया और कान्यकुब्ज खास पांच भेद हैं।

सरयूपारी[5] सनाढ्यश्च[6] भूमिहारो जिझौतियः।
प्रकृताश्च कान्यकुब्जानां भेदोपंच प्रकीर्त्तितः॥

५–'सैनिक ब्राह्मण' पृष्ठ ३६ तथा 'दशविध ब्राह्मण संहिता' पृष्ठ ३६।

६–पं० प्रभु दयाल बुधौलियां, रहली, सागर (म. प्र.) सनाढ्य को किसी की शाखा न मानकर सनाढ्य से ही अन्य भेदोपभेद ब्राह्मणों का मानते हैं, इसके लिए मध्य प्रदेश की जनगणना रिपोर्ट १८६५ का उद्धरण २५-३-८५ को चौधरी राजनारायण शर्मा के पास इस प्रकार भेजा है –"आदि में सब ब्राह्मण वर्ग एक ही था और ये लोग सनाढ्य कहलाते थे। पश्चात् ये लोग विन्ध्याचल श्रेणी की ओर जा बसे। जो विन्ध्याचल के दक्षिण में बसे वे पंच द्राविड़ और उत्तर में बसे वे पंच गौड़ कहलाये। जो अपने मूल स्थान पर रहे वे अपना आदि नाम सनाढ्य ही बनाये रहे।"

भूमिहार ब्राह्मण समाज

कान्यकुब्ज ब्राह्मण का एक दल जो जमीन और जमीन्दारी से सम्बद्ध था, कानपुर जिले के मदारपुर तथा उसके आस पास 'भूमिहार ब्राह्मण' नाम से प्रचलित होने लगा। १५२७ ई. के पहले यह नाम पड़ चुका था।

१५२७ ई. में भूमिहार ब्राह्मण कहे जाने का सर्वप्रथम वर्णन कान्य-कुब्ज ब्राह्मण पं. दुर्गादत्त त्रिपाठी और पं. मुकुन्द राम कृत तथा गंगा विष्णु श्री कृष्ण दास, बम्बई द्वारा १९०७ ई० में प्रकाशित 'कान्यकुब्ज वंशावली' के पृष्ठ १०५ पर कश्यपगोत्र के वर्णन में मिलता है :—

"अथ कश्यपमाख्यास्ये गोत्रं तु मुनि सम्मतम् ।
पूर्व वंशावली दृष्ट्वा ज्ञातं षष्टि शत त्रयम् ॥
मदाराख्य पुराध्यक्ष्य भूमिहाराः द्विजास्तुते ।
तेभ्यश्च यवनेन्द्रश्च महद् युद्धमभूत पुरा ।
तेभ्यश्च ब्राह्मणाः सर्वे परास्ता अभवंस्ततः ।" इत्यादि

जिसका तात्पर्य यह है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की तीन सौ साठ वंशावलियों को देखकर उनके अनुसार ही काश्यप गोत्र का वर्णन लिखते हैं। मदारपुर के अधिपति भूमिहार ब्राह्मणों और यवनों में महायुद्ध हुआ, जिसमें सभी ब्राह्मण परास्त हुए।

पं० मुन्नीलाल मिश्र (कानपुर) रचित 'कान्यकुब्ज भूषण' के पृष्ट ६० में तथा श्री हरि प्रसाद भागीरथ कृत 'कान्यकुब्ज कुल दर्पण' में भी उपर्युक्त वर्णन ही है तथा युद्ध का समय १५२७ (विक्रम संवत् १५८४) लिखा है। उपर्युक्त मदारपुर युद्ध में बहुतों ब्राह्मण मारे गये। बचे हुए लोग भागकर दूसरे स्थान पर निवास किया। उक्त युद्ध में पं० अनन्त राम (भू० ब्रा०) भी मारे गये थे। उनकी गर्भवती पत्नी यवनों के भय से स्योना नाई के ससुराल में जाकर बस गयी। वहीं उसे गर्भू नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका जातक संस्कार ब्राह्मणों की रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ और बाद में कान्यकुब्ज ब्राह्मण सुखमणि तिवारी (कश्यप गोत्रीय बिलौली के तिवारी) ने वेद रीति से उसका यज्ञोपवीत संस्कार किया। कुतुबऊ गाँव में उस बालक का निवास था, इसलिए कुतुमऊ के तिवारी की उपाधि दी। इसी भूमिहार नामधारी ब्राह्मण पं० अनन्त राम के पुत्र श्री गर्भू तिवारी के वंश में बिनहारपुर, गलेहा, बिठुर आदि के दुबे, कृपाणपुर के मिश्र, अमृतपुर, विनौर आदि के अग्निहोत्री, भागीर के दीक्षित, बिलौली के शुक्ल, मिगलानी के अवस्थी सब कान्यकुब्ज ब्राह्मण पाये जाते हैं।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

इसके अतिरिक्त पं० द्वारका प्रसाद अग्निहोत्री द्वारा सं० १९०५ में लिखित कान्यकुब्ज ब्राह्मण वंशावली के पृष्ठ ८९, पं० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित 'कन्यकुब्जों का इतिहास' के पृष्ठ ३५ तथा पं० हजारी प्रसाद त्रिपाठी द्वारा सं० १९८२ में लिखित 'कान्यकुब्ज भास्कर' के पृष्ठ १५५ पर भी इसी प्रकार का उल्लेख है।

कान्यकुब्जों के ही एक दल का नाम 'भूमिहार' इस लिए गर्भू तिवारी के वंश में फिर 'कान्यकुब्ज' नाम कोई असंगत नहीं।

(प्रो० राजनाथ पाण्डेय, सुलतानपुर (उ० प्र०) द्वारा चौधरी राजनारायण शर्मा को लिखे एक पत्र के अनुसार पं० रविशंकर शुक्ल (मध्यप्रदेश) के भू० पू० मुख्य मंत्री) जुझौतिया (का० कु० के एक भेद) ब्राह्मण कहलाते थे, बाद में कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहलाने लगे।)

इसी प्रकार हस्तगामे के पांडेय परासर गोत्रीय श्री एस० एन० पांडेय, सहायक स्टेशन मास्टर, सिहोरा रोड, जबलपुर (म० प्र०) का परिवार तथा आरा जिले के बहुत से सरयूपारीण कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहने लगे हैं। सरयूपारीण भी कान्यकुब्ज की ही शाखा हैं। शाखा नाम छोड़कर कोई मूल नाम ही कहे तो कोई विसंगति नहीं। १९२६ तथा १९२७ के अधिवेशनों में कान्यकुब्ज महती सभा ने वृहत् कान्यकुब्ज समाज के गठन के लिए अपनी शाखाओं—भूमिहार, सरयूपारीण, सनाढ्य, जुझौतिया आदि को मिलने का आह्वान भी किया था।

भूमिहार ब्राह्मण विहार, उत्तर प्रदेश तथा बंगाल के कुछ भागों में सघन रूप से तथा अन्यत्र छिट फुट रूप से बसे हुए हैं। विदेशों में नेपाल के कुछ भागों में सघन रूप से तथा मौरीशस और अन्य देशों में भी बसे हुए हैं।

भूमिहार शब्द का सीधा अर्थ है भूमिवाला ब्राह्मण।

परम पूज्य दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने अपने 'ब्रह्मर्षि वंश विस्तर' के पृष्ठ १३२ में भूमिहार शब्द का विवेचन इस प्रकार किया है :—भूमि शब्द के आगे 'हञ्' धातु से 'कर्मण्यण्' पाणिनी सूत्र के अनुसार 'अण्' प्रत्यय लगाने से भूमिहार शब्द बना है। 'भूमिं हरति, प्रापयति, बलादधि करोति, केनचिदुपायेन स्वीकरोति वेति भूमिहारः।" अर्थात् जो ब्राह्मण पृथ्वी के ऊपर

अस्त्र शस्त्र आदि के बल से अधिकार करे वह भूमिहार।

पं० गंगा प्र० वाजपेयी तथा श्री श्रीधर मिश्र अधिवक्ता के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'कान्यकुब्ज' (१६३४ ई०) के अंक में पं० लक्ष्मी नारायण शास्त्री दीक्षित ने 'कान्यकुब्जों की उपजातियाँ' शीर्षक के अन्तर्गत 'भूमिहार' शब्द का विवेचन इस प्रकार किया है :—

"कान्यकुब्जों की द्वितीय शाखा भूमिहार है। भूमि को प्रथम रखकर हृहरणे धातु से 'कर्मण्यण्' इस पाणिनी सूत्रानुसार अण् प्रत्यय लगाने पर भूमिहार शब्द बनता है। यहाँ हृहरणे धातु हरण का द्योतक है, जिस हरण का अर्थ भट्टोजी दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी' के भ्वादिगण में हृहरणे को इस प्रकार लिखा है—हरणं प्रापणं, स्वीकारः, स्तेयं नाशनं च। जिसका तात्पर्य यह है कि हरण रूप अर्थवाचक हृ धातु है, उस हरण के चार अर्थ हैं (१) प्राप्त करना, (२) स्वीकार करना, (३) चुराना (४) नाश करना। इन चारो अर्थों के उदाहरण सिद्धांत कौमुदी की तत्वबोधिनी टीका में इस प्रकार लिखा है : (१) जैसे भारंहरति अर्थात् बोझे का हरण करता है यानी पहुँचाता है (२) भागं हरति अर्थात् अपने भाग का हरण करता है यानी स्वीकार करता है (३) सुवर्ण हरति अर्थात् सोना हरता है यानी सोना चुराता है। (४) हरिर्हरति पापानि अर्थात् भगवान पापों को हरते हैं यानी भगवान पापों का नाश करते हैं। किन्तु रुपये पैसे की भांति भूमि की चोरी अथवा नाश नहीं हो सकता, इसलिए मुख्यतः हृ धातु के दो ही अर्थ हो सकते हैं—प्रापण अर्थात पहुँचाना या बल पूर्वक अधिकार कर लेना और स्वीकार करना। अतः भूमिहार शब्द का यह अर्थ हुआ—"भूमिंहरति प्रापयति बलादधि करोति केनचिदुपायेन स्वीकरोति वेति भूमिहारः।' जो ब्राह्मण दल पृथ्वी के ऊपर अस्त्र शस्त्रादि के बल से अधिकार कर लेवे या अन्य उपाय से प्राप्त कर ले उन्हें भूमिहार ब्राह्मण कहते हैं।" (ब्राह्मण कौन ? ····से)

पंचगछिया (सहरसा) निवासी-मैथिल ब्राह्मण वंशोद्भव संस्कृत कौस्तुभ, प्रमाणिक हिन्दी संस्कृत कोश आदि के रचयिता तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्मपुराण तथा नारदीय पुराण आदि के अनुवादक पं० तारणीश झा वेदान्त व्याकरणाचार्य (दारागंज, प्रयाग) ने अपने 'भूमिहार ब्राह्मण' शीर्षक एक लेख (जो श्री अर्जुन तिवारी, ब्राह्मण परिषद्, दारागंज, प्रयाग द्वारा २०—१—८३ को प्रकाशित है) में भूमिहार

शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए इस प्रकार लिखा है :– "भूमिं हरति केनचिदुपायेन स्वीकरोति गृह्णति इति भूमिहार: ।' भूमि+हृ+अण् । अर्थात् भूमि को स्वीकार करने वाला (हृ हरणे धातु से यह शब्द बना है) हरण का अर्थ स्वीकार भी होता है ।"

पं० सूर्य नारायण शर्मा, भू० पू० विधायक, सिमरी भोजपुर ने अपने 'सैनिक ब्राह्मण' के पृष्ठ ११३ पर भूमिहार' शब्द का विवेचन इस प्रकार किया है :—

'महीसुर' शब्द का समानार्थक 'भूमिसुर' शब्द है और यह शब्द शुंग राज्य काल में विशेष अर्थ में प्रयोग होने लगा । 'स' वर्ण 'ह' बर्ण में परिणत होता ही है, इसे सभी विद्वान मानते हैं । इसलिए मेरा अनुमान है कि 'भूमिसुर' शब्द ही कालान्तर में 'भूमिहार' शब्द का जन्मदाता है ।"

बांसगांव (गोरखपुर) निवासी प्रो० जगमोहन राय शर्मा भू० पू० प्राध्यापक हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने 'भूमिहार' शब्द का विवेचन 'त्यागी बन्धु' नवम्बर १५३ के पृष्ठ १० पर इस प्रकार किया है :—

'भूमिधर' शब्द से 'भूमिहार' शब्द का उद्भव है । हिन्दी वर्णमाला के वर्गाक्षरों में जितने चतुर्थ वर्ण हैं—घ, झ, ढ, ध और भ, वे वर्गाक्षर के तृतीय अक्षर और ह अक्षर के संयोग से बने हैं । जैसे घ= gh=ग+ह, झ=jh=ज+ह, ढ=dh=ड+ह, ध=dh=द+ह, भ=bh=ब+ह । अब भूमिहार शब्द का विश्लेषण कीजिये । भूमिधर (द+ह+र) इसमें द का लोप हो जाने से 'भूमिहर' शब्द रह जाता है । अतः भाषा विज्ञान की दृष्टि से भूमिहार शब्द लोक भाषा में अधिक दिनों तक व्यवहृत होता रहा और शनैः शनैः विकृत होकर 'भूमिहार' के रूप में रह गया ।"

नारायणपुर (गया) निवासी तथा तेनूघाट उच्च विद्यालय के अवकाश प्राप्त शिक्षक पं० राघव शर्मा एम० ए० (द्वय) डिप–इन–एड० ने 'उत्तर बिहार' १५ नवम्बर १९७९ के पृष्ठ ७ पर 'गोस्वामी तुलसी दास' शीर्षक लेख में 'भूमिहार' शब्द का विवेचन इस प्रकार किया है :—

"भूमिहार शब्द की व्युत्पत्ति– प्रस्तुत शब्द का निर्माण तीन धातुओं के संयोग से हुआ है–भू, मि, हृ । धातु नामनेकार्थः के अनुसार भू धातु का अर्थ है नाना (अनेकों) मि का अर्थ है सन्देह और हृ का हरण करना, नाश

करना । फलतः इन तीन धातुओं का सम्मिलित अर्थ हुआ —'भू नानार्थे, मि सन्देहे, हरणं हार उच्यते । नाना सन्देहे हरणात् भूमिहार इति उच्यते । भूमिहार के समानार्थक (पर्यायवाची) शब्द भूमिसुर, महिसुर, भूदेव, महिदेव आदि है ।"

काशी निवासी मारवाड़ी अग्रवाल कुलोत्पन्न पत्रकार श्री गौड़ी शंकर गुप्त द्वारा काशी नरेश महराजाधिराज द्विज राज डा० विभूति ना० सिंह को लिखे एक पत्र का कुछ अंश :—'सामान्यतः गोस्वामी जी को सरयूपारीण, कान्यकुब्ज आदि बताया जाता है किन्तु ऐसा लगता है कि वे भूमिहार ब्राह्मण थे । गोस्वामी जी की इन पंक्तियों से सभी परिचित हैं :—"बन्दौं प्रथम महीसुर चरना, मोहजनित संशय सब हरना । जिसमें उन्होंने सर्व प्रथम ब्राह्मणों की चरण वन्दना की है, किन्तु महिसुर शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में हुआ है । मोहजनित संशय को विनष्ट करने की संपूर्ण क्षमता सामान्य ब्राह्मणों में संभव नहीं । कौन उनका प्र०ाम्य हो सकता है : मोहजनित संशय सब हरना' से पूर्ण ताल मेल बैठता है 'भूमिहार' शब्द से । व्याकरण प्रणेता महर्षि पाणिनी के अनुसार भूमिहार शब्द की व्युत्पत्ति तीन धातुओं के संयोग से हुई है । भू, मि, हृ–धातुनामनेकार्थः के अनुसार भू धातु का अर्थ नाना (अनेक) मि० का अर्थ–सन्देह और हृ धातु का अर्थ हरण करना होता है । इन तीनों धातुओं का सम्मिलित अर्थ हुआ —'भू नानार्थे, नि सन्देहे हरणं हार उच्यते, नाना सन्देहे हरणात् भूमिहार इति उच्यते । स्पष्ट है कि गोस्वामी जी की 'मोहजनित संशय सब हरना' पंक्ति का तालमेल भूमिहार शब्द से ही बैठता है ।" (देखिये ब्राह्मण कौन ?, पृष्ठ १११) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पं० राम नरेश त्रिपाठी के कविता गुरु पं० शिव संपत्ति सुजान मिश्र (ग्राम–उदियावां, तहसील लाल गंज, जिला आजमगढ़) ने भूमिहार भूसुर भूषण, नामक ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है :—

"सहस बाहु के सहस भुज, जानत सकल जहान ।[7]
शिव सम्पत्ति सो परशुधर, काटि कियो खरिहान ॥
तासु राज अरू भूमि सब दियो द्विजन जिहिदान ।
भूमिहार भूसुर भये सो सब विप्र महान ॥
भृगुपति हति क्षत्रिन, दियो भूमि द्विज जिहि दान ।
भूमिहार भूसुर भये, तब से जगत प्रधान ॥"

७—मोहयाल शहीद, अक्टूबर १९६६ ई०, पृष्ठ-१२

भूमिहार ब्राह्मण समाज

भूसुर, महीसुर, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण आदि सभी शब्द समानार्थक और पर्यायवाची है।

(भूमि से सम्बन्ध रखने से जिस प्रकार भूमिहार ब्राह्मण नाम पड़ा, उसी प्रकार जमीन से सम्बन्ध रखने के कारण पंजाब के अयाचक ब्राह्मण का नाम महिपाल पड़ा, जो बिगड़कर महियाल या मुह्याल हो गया। भूमि से संबंध होने के कारण ही महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों के एक दल का नाम क्षितिपावन पड़ा जो बिगड़कर चित्पावन हो गया है तथा गुजरात के भी अनावले ब्राह्मण का जमीन से सम्बन्ध होने के कारण ही उनकी उपाधि देश स्वामी (जमीन का मालिक) की हुई, जो बिगड़कर देसाई हो गयी है।)

भूमिहार शब्द का प्रयोग बंगाल में १७६७ ई० में मिलता है। भूमिहार शब्द का प्रयोग बिहार के पुराने कागजातों में नहीं मिलता है। तिरहुत में पुराने सर्वे-खतियान आदि में ब्राह्मण, बाभन या पश्चिमीय ब्राह्मण करके ही उल्लिखित है। उत्तर प्रदेश में भी आगरा और अवध की १८६५ की जनगणना रिपोर्ट में भूमिहार शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसमें ६८ प्रकार के ब्राह्मणों में ५८ वां में भूमिहार ब्राह्मणों का उल्लेख है।

इससे पहले के जनगणना रिपोर्ट, १७८७ ई० की सनदों-चिरस्थायी प्रबन्ध के समय जमीन्दारी बन्दोबस्त की सनदों में तथा १८१२ ई० में लन्दन में प्रेषित इस्ट इंडिया कम्पनी की रीपोर्टों में आज कल के भूमिहार ब्राह्मण कहे जाने वाले राजा, जमीन्दारों (हथुआ, बेतिया, टिकारी आदि) के लिए सीधे 'ब्राह्मण' शब्द का ही प्रयोग मिलता है। जैसे बिहार प्रथम सरकार :—

'Ten Pragana zamindari Mitrajit Singh Brahman, resident at Tekari'

दस प्रगने की जमीन्दारी मित्रजीत सिह की थी, जो टिकारी के निवासी ब्राह्मण थे।

'One Pargana 'Saraisha' to Suchit Singh Brahman.

एक प्रगना सरैसा सूचित सिंह ब्राह्मण की थी।

"Kalyanpur and Sipah To Paragna Raja Fateh Singh of Brahman cast"

कल्याणपुर और सिपाह ये दो प्रगने राजा फतेह सिंह के थे, जिनकी जाति ब्राह्मण थी।

ऐसे अनेकों उद्धरण १८१२ ई० में लंदन प्रेषित रिपोर्ट के पृष्ठ ५१ से ५१३ के बीच उल्लिखित हैं।

वर्तमान काशी राज्य के संस्थापक श्री मनसाराम मिश्र (जिनके वंशज ही वर्तमान काशी नरेश हैं) के सनद में भी इस प्रकार उल्लिखित है :—

"राजा मनसाराम वल्द मनोरंजन मिश्र कौम ब्राह्मण।"

सर रापरलेथ ब्रिज के० सी० आई० ई० द्वारा लिखित तथा १८६३ में विक्टोरिया को समर्पित 'गोल्डेन बुक ओफ इन्डिया' के पृष्ठ ६७ में बेतिया तथा १७४ में हथुआ नरेश के सम्बन्ध में मूलग्राम के साथ सिर्फ ब्राह्मण शब्द का ही उल्लेख है :—

"Bettiah Maharaja Sir Harendra Kishore Singh K. C. I. E. Maharaja Bahadur belongs To Jaitheria Brahmans"

"Hathua Maharaja Sir Krishna Pratap Shahi Bahadur K. C. I. E. Maharaja Bahadur belongs To a Bagochhia Brahman"

"बेतिया महाराजा सर हरेन्द्र किशोर सिंह के०सी० आई० ई० महाराजा बहादुर जैथरिया ब्राह्मण हैं।"

"हथुआ महाराजा सर कृष्ण प्रताप शाही बहादुर के० सी० आई० ई० महाराजा बहादुर बगौछिया ब्राह्मण हैं।"

११ दिसम्बर १६१० ई० के 'वीरभारत' में काशी नरेश की जाति में सिर्फ ब्राह्मण का ही उल्लेख है :—

'काशी नरेश इस समय कलकत्ते में हैं।[8] आपको लार्ड मिन्टो सामन्त राजा का अधिकार दे गये हैं। महाराजा की जाति ब्राह्मण है। आप बनारस के हिन्दुओं के शिरोमणि कहे जाते हैं।"

८—ब्रह्मर्षि वंश विस्तर।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

मदारपुर के युद्ध में पराजित होने के बाद काशी तथा उसके आस पास
निवास करने वाले 'भूमिहार ब्राह्मण' नाम से प्रचलित होने लगे, क्योंकि
नाम तो पहले ही पर चुका था। किन्तु इसका व्यापक प्रयोग बहुत बाद में
हुआ। जो ब्राह्मण हस्तिनापुर या अन्य स्थानों से आकर बिहार के दिघ-
वादुवौली, एकसार, जैथर, सहदुल्लहपुर आदि में बसे या फिर वहाँ से
मुजफ्फरपुर, दरभंगा आदि में फैले, उन्हें पश्चिम से आने के कारण 'पश्चिमीय
ब्राह्मण' (पश्चिमा ब्राह्मण) और जो लोग मगध में बाहर से आकर बसे वे
विना विशेषण लगाये 'ब्राह्मण' या 'बाभन' कहलाते रहे। यद्यपि महाकवि
विद्यापति, सूर, तुलसी, कबीर, भूषण आदि कवियों ने ब्राह्मण मात्र के लिए
'बाभन' शब्द का प्रयोग किया है और देहात में आज भी मैथिल, कान्यकुब्ज,
सरयूपारीण, भूमिहार आदि सभी ब्राह्मणों के लिए 'बाभन' शब्द का ही
व्यवहार होता है।

जब १८८५ ई० के लगभग महाराजा ईश्वरी प्र० ना० सिंह (काशी नरेश)
के प्रयास से भूमिहार ब्राह्मण नाम से सभा स्थापित हुई और उसका प्रचार
प्रसार बढ़ा तो मिथिला में पश्चिमा ब्राह्मण कहाने वाले भी भूमिहार ब्राह्मण
कहने लगे। मगध में भी 'बाभन' और भूमिहार ब्राह्मण दोनों का प्रयोग
होने लगा। अन्य दल के ब्राह्मणों के लिए जिस प्रकार कान्यकुब्ज
ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, सरयूपारीण ब्राह्मण, आदि नाम होते हुए भी सीधे
ब्राह्मण, बिप्र आदि का प्रयोग होता है। उसी प्रकार भूमिहार ब्राह्मणों के
लिए भी सीधे ब्राह्मण, विप्र आदि का प्रयोग होता आ रहा है। जैसे
क्षत्रिय मूर्द्धन्य रीवां नरेश महाराज रघुराज सिंह कृत 'राम स्वयंवर' के पृष्ठ
६८६ में तत्कालीन काशी नरेश महाराजा ईश्वरी प्र० ना० सिंह से संबंधित
पद्य में सिर्फ 'विप्र' और 'द्विजराज' का ही प्रयोग हुआ है :—

"गवने एक समय हम काशी। विश्वेश्वर के दर्शन आशी।
तहं को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥
राम नगर गंगातट मांही। निवसत गौतम भूप तहांही॥
काशी राज महाराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अन्त मांहि नारायण वादा॥
मिल्यो जाई तिन सो हुलसि, मोहि लिए अंक लगाय।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

निज बालक इव जानि कै, दीन्हों प्रीति बढ़ाय ॥
सुनिमन वचन मुदित काशीशा । फेरत पाणि भ्राणकरि शीशा ॥
कीन्हयौं मैं प्रणाम बहुवारा । आशीष दीन्हयों भूप उदारा[९] ॥"

गौड़ ब्राह्मण पं० गंगा सहाय गौड़ लिखित ब्राह्मण कुल दीपक' के पृष्ठ ३२४ पर काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज सर प्रभु ना० सिंह के सम्बन्ध में इस प्रकार उल्लिखित है :—

"यह[१०] कौन नहीं जानता कि हिज हाइनेस महाराजा सर प्रभु ना० सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० काशी नरेश भी ब्राह्मण हैं।"

'मिथिला मिहिर' के तत्कालीन संपादक पं० विष्णु कान्त झा बी० ए० ने ई० सन् १९१० के मंडल २, प्रकाश ६ में इस प्रकार लिखा है : - "अभी थोड़े दिन हुए टिकारी के ब्राह्मण महाराजा ने एक मेम से विवाह किया[११] है।"

बिहार के भू० पू० मुख्य मंत्री डा० श्री कृष्ण सिंह के अग्रज श्री देवकी नन्दन सिंह ने अपने ग्रन्थ 'ज्योतिष रत्नाकर' (प्रथम संस्करण, १९३४ ई०) के पृष्ठ १० पर इस प्रकार लिखा है :—"आर्य सभ्यता की गोद में ब्राह्मण बन कर आने पर मुझे संतोष है और स्वदेश की संस्कृति पर से भ्रम के आवरण को दूर करने में अगर मुझे कुछ सफलता मिली तो मेरा जन्म लेना कृतकृत्य हो जायगा।"

काशीस्थ संस्कृत पाठशाला के भू० पू० प्रधानाध्यापक पं हृषिकेश उपाध्याय द्वारा प्रवर्तित तथा पं० रामभद्र उपाध्याय, तथा पं० हरिहर कृपालु उपाध्याय द्वारा सम्पादित 'काशी विश्वनाथ पंचांगम् (हृषि केश पंचांग) के मुख्य पृष्ट पर भी काशी नरेश के नाम के साथ 'द्विजराज' शब्द का प्रयोग होता आ रहा है। १९८७–८८ के मुख्य पृष्ट पर भी इस प्रकार उल्लिखित है :– 'स्वस्ति श्रीमान् महाराजाधिराज द्विजराज काशीराज श्री १०८ महाराज डा० विभूति नारायण सिंह शर्म देव एम० ए० वीर पुङ्गव पदभाजामा शानुसारम्।"

९–ब्रह्मर्षिवंश विस्तर, पृष्ठ २२९
१०–ब्रह्मर्षिवंश विस्तर, पृष्ठ २२८

भूमिहार ब्राह्मण समाज

मैथिल ब्राह्मण पंडितों (पं० मुनीन्द्र झा, प्रा० जानकी सं० वि०, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण पं० लक्ष्मी कान्त झा, प्रा० सं० विद्यापीठ, बैगनी, दरभंगा, पं० सीताराम झा ज्योतिषाचार्य आदि) द्वारा सम्पादित 'श्री पंचांगम्' (१९६६–६७ ई०) में रीगा वर्तमान जिला—सीतामढ़ी के पं० रूक्मिणी रमण सिंह के परिचय में विप्र शब्द का ही प्रयोग हुआ है।

"जगत विदित मिथिलास्थ मुजफ्फरपुर मंडल ताहि ठाम ।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रजन विलसत रीगा ग्राम ॥
विप्रवंश अवतंश ततय नररत्न सकल गुणधाम ।
दंशीवाल पवित्र मूल ओ सिंह सहित शुभ नाम ॥
नाम जनिक रूक्मिणी रमण थिक गुण बल बुद्धि निधान।
सब विधि नव पुराण विद्यापढ़ि लहि पदवी आचार्य ॥" आदि

हिन्दी, संस्कृत और मैथिली की तीन दर्जन पुस्तकों के लेखक पं० जीवनाथ झा प्राध्यापक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय जनकपुर, नेपाल ने भी अपनी पुस्तक 'व्याकरण कौतुकम्' में पं० रूक्मिणी रमण सिंह के चित्र के नीचे परिचय इस प्रकार दिया है :–

"पाल्यमानतम विप्र धर्मणो ज्ञात सर्वविध काव्यकर्मणाः।
संस्कृतोन्नयन मुख्य कर्मणो रूक्मिणी रमण सिंह शर्मणः॥"

श्री सत्यभक्त (भू० पू० सम्पादक 'चाँद', प्रणवीर' तथा सतयुग) लिखित तथा गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित 'स्वामी सहजानन्द' नामक पुस्तक के पृष्ट ३ पर भी सिर्फ 'ब्राह्मण' शब्द का ही प्रयोग हुआ है : "स्वामी सहजानन्द ने काशी के मठों में सुविधापूर्वक रहने के जीवन क्रम को त्याग कर देश के स्वतंत्रता संग्राम और विशेषतः जमीन्दारों के अत्याचार से पीड़ित किसानों के उद्धारार्थ प्रारम्भ किये गये आंदोलन में बढ़ कर भाग लिया । यह एक सन्यासी की दृष्टि से महत्त्व की बात थी। वे गाजीपुर (उ० प्र०) के एक गाँव के निवासी ब्राह्मण थे और बाल्यावस्था में ही हाई स्कूल के नौवे दर्जे तक शिक्षा प्राप्त करके १८ वर्ष की आयु में सन्यासी बन गये थे।"

भूमिहार ब्राह्मण समाज

एस० आर० के० उच्च विद्यालय, तियरा, भोजपुर के सहायक शिक्षक पं० सुदर्शन द्विवेदी साहित्याचार्य द्वारा २६-४-७६ के 'प्रदीप' (दैनिक) में संपादक के नाम पत्र'—'वाणभट्ट पीरू निवासी थे, शीर्षक में भी सिर्फ ब्राह्मण शब्द का ही उल्लेख है :—"उनकी जन्मभूमि हिरण्यवाक् से पूर्व दो कोस की दूरी पर च्यवनाश्रम (देव कुन्ड) के पास प्रीतिकूट (वर्तमान में पीरू बतरा नाम से प्रसिद्ध) है। इसके इर्द गिर्द वात्स्यायनों (वच्छ गोतिया) सोनभदरिया ब्राह्मणों की विशाल आवादी है, जो वाणभट्ट के वंशज हैं।"

प्रसिद्ध साहित्यकार तथा भारतीय रेल मंत्रालय के राज भाषा निदेशक पं० शिवसागर मिश्र (श्रीरामपुर अयोध्या, पो०-वैनी, जिला—समस्तीपुर निवासी) को ३०-४-८१ को पश्चिमी रेलवे राज भाषा समारोह के अवसर पर जयपुर (राज स्थान) में प्रदत्त अभिनन्दन पत्र में सिर्फ 'विप्र' शब्द का ही प्रयोग हुआ है :—

(२)

सुमतिक्षमा में सत्य, शील में सखावत में।
शुचि समता में सर्वश्रेष्ठ सौम्यता में हैं।
नय में नयन में, सुबुद्धि में विशालता में,
निवल—निवाहक नरेश नव्यता में हैं।
विप्रकुलश्रेष्ठ शिवसागर सुनागर हैं
हिन्दी हित जाहिर जहान जनता में हैं।
भूरि भाग्यवंत भद्रता में त्यों ही भव्य
भाव से भरित रूप भूप भव्यता में हैं। इत्यादि

२२ सितम्बर ८५ के 'आर्यावर्त्त (पटना) के परिशिष्टांक के पृष्ट २ पर स्व० श्री बैकुन्ठ शुक्ल के नाम के साथ सिर्फ ब्राह्मण शब्द का ही उल्लेख हुआ है।

'सच्ची कहानियाँ' सितम्बर १९८६ के पृष्ट ८ पर 'वस्ती का करहना कांड शीर्षक लेख (लेखक श्री मनजीत सिंह तथा कुशवाहा श्री हरिनाथ) में श्री भवानी शंकर पाण्डेय के लिए भी सिर्फ 'ब्राह्मण' शब्द का ही प्रयोग हुआ है।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

'हिन्दुस्तान' (साप्ताहिक) के २ सितम्बर ८८ के पृष्ट ४१ पर जब हनुमान जी ने उनकी पलटन की हाजिरी ली' शीर्षक में दण्डी स्वामी हंसानन्द सरस्वती के पिता तथा पूर्वजों के लिए 'ब्राह्मण' शब्द का ही प्रयोग हुआ है।

इसके अतिरिक्त अनेक सरकारी, गैर सरकारी कागजातों, खतियान, रजिस्ट्री आदि में कहीं सीधे बिना विशेषण के ब्राह्मण और कहीं विशेषण के साथ भूमिहार ब्राह्मण का भी प्रयोग होता है। कुछ लोग संक्षेप के लिए सिर्फ विशेषण 'भूमिहार' का भी प्रयोग करते हैं। जैसे अन्य दल के ब्राह्मणों के लिए भी 'मैथिल,[१२] मैथिल पंडित, मैथिल समाज, मैथिल वैवाहिक सभा ss रम्भः, मैथिल बैवाहिक सभा समाप्तिः, श्रोत्रिय सभा, कान्यकुब्ज वंशावली, कान्यकुब्ज कुल भूषण, कान्यकुब्ज हितकारी, सरयूपारीण संहिता, सरयूपारीण सर्वस्व, पारीक जाति आदि का व्यवहार होता है।

इस ब्राह्मण (भू० ब्रा०) समाज में पीछे कान्यकुब्ज, मैथिल, सरयूपारीण, महाराष्ट्रीय, मालवीय, जुझौतिया आदि ब्राह्मण दलों के कुछ वंश मिल गये हैं, जो सब के सब अब भूमिहार ब्राह्मण में ही गिने जाते हैं।

बिहार के भू० पू० मुख्य मंत्री डा० श्री कृष्ण सिंह के पूर्व पुरुष पं० वासुदेव तिवारी, दिल्ली के निकट शेरपुर से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व मुगल सेना में मनसवदार होकर बिहार में आये और बाद में मुंगेर जिले के माऊर में बस गये। इस सम्बन्ध में डा० श्री कृष्ण सिंह के अग्रज श्री देवकी नन्दन सिंह लिखित 'ज्योतिष रत्नाकर' के प्रथम संस्करण (१९३४ ई०) में दिनकर जी रचित वंश परिचय की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है :—

"कान्यकुब्ज ब्राह्मण तहां वासुदेव गम्भीर
पद्धति रहयो तिवारी की बलशाली रणधीर।
ते वसुदेव तिवारी जी, सैनिक मनसबदार
रण रोपण आयो मगध मंजुल देश बिहार।

१२—डा० सीताराम झा का लेख 'सौराठ सभा और दहेज विरोधी आंदोलन' तथा सौराठ सभा का आधुनिकतम रूप 'कथा कोष' तथा सं० वि० दरभंगा द्वारा प्रकाशित पंचांग में प्रयुक्त। पुस्तक का नाम तथा पं० वेंकटेश नारायण तिवारी और कान्यकुब्ज ब्राह्मण सभा द्वारा प्रयुक्त।

चमकी मगध विशाल में दिल्ली की तलवार
मची समर में त्राहि अति, भीषण हाहाकार ।
समरान्तर वीरवर, बरवीघा के पास
पूरब शहर विहार ते, विरच्यो सुन्दर वास ।
मूलग्राम अनुरूप ही, दियो नाम तेहि शेर
सो उजार वासुदेव को रहयो अजौंमुख हेर ।
पुनि निज भुजबल जोरतें, यापि दियो गढ़सात,
गढ़ बेलाव को आज हूँ खंडहर एक दिखात ।
वैभववान बेलाव को अजौं भग्न अवशेष,
दे दै याद अतीत की, करूणा करत विशेष ।
कामदार खां के समय ते ब्राह्मण गुणवान,
कुछ कारण ते कीन्ह पुनि तजि बेलाव प्रस्थान ।
ता दिन माऊर आज को रहयो मुसलमां ग्राम,
तिन ब्राह्मण और यवन में छन्यो तहां संग्राम ।
कान्यकुब्ज, रणधीर को सहैं यवन किमिवार,
समरजीती भू सुरभये माउर के सरदार ।" इत्यादि

पं० वासुदेव तिवारी की छठी पीढ़ी में श्री प्राण राय हुए और श्री प्राण राय के पांचवें पुश्त में श्री हरिहर सिंह हुए । श्री हरिहर सिंह के पांच पुत्र (१) श्री देवकी नन्दन सिंह (कानून और ज्योतिष के विद्वान) (२) श्रीराम कृष्ण सिंह (३) श्री राधाकृष्ण सिंह (४) डा० श्री कृष्ण सिंह (भू० पू० मुख्य मंत्री, बिहार) और (५) श्री गोपी कृष्ण सिंह हुए ।

डा० श्री कृष्ण सिंह तथा उनके बड़े पुत्र श्री शिव शंकर सिंह (भू० पू० राज्य मंत्री) का देहान्त हो चुका है । कनिष्ठ पुत्र श्री बन्दी शंकर सिंह विधायक तथा भू० पू० राज्य मंत्री हैं । इनकी तथा अन्य शिरियार मूल वाले की गणना अब भूमिहार ब्राह्मणों में ही होती है ।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

इसी प्रकार 'कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० जगन्नाथ दीक्षित[१३] दिल्ली के निकट हस्तिनापुर से १५५० ई० में छपरा जिले में आये। वे बड़े विद्वान तथा सिद्ध पुरुष थे। कहा जाता है कि आपके आशीर्वाद से नेपाल महाराजा का कुष्ठ रोग दूर हो गया था। इसी उपलक्ष्य में महाराजा ने गंडक और सरयू नदी के बीच की सारी भूमि इन्हें अर्पित किया, जहां उनके पुत्रों ने निवास किया उनके वंशज एक सार और सहदुल्लहपुर से अन्यत्र फैलने के कारण एकसरिया और सहदौलिया मूल के ब्राह्मण कहलाते हैं।

श्री दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के (ब्रह्मर्षि वंश विस्तर पृष्ठ ३३६) अनुसार भी 'सहदौलिया और एकसरिया लोग एक ही बंश के पराशर गोत्रीय हैं।

पं० कुलदीप नारायण राय झड़प (गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ ५१) के अनुसार 'एकसरिया ब्राह्मणों का एक दल सहदौली डीह होने से सहदौलिया कहलाता है। वे लोग मिश्र उपाधि धारी हैं और दरभंगा जिले के पतोर आदि में बसे हुए हैं।"

'दिक्पाल मिश्र वंश परिचय' में भी एकसरिया और सहदौलिया दोनों को एक तथा पं० जगन्नाथ दीक्षित का वंशज बताया गया है। एकसरिया मूल के ब्राह्मणों में रा० ब० राम० प्र० ना० शाही (भू० पू० कमिश्नर) पं० राम बहादुर शर्मा (भू० पू० महामंत्री अ० भा० भू० ब्रा० महासभा तथा भू० पू० महाप्रबन्धक हथुआ राज), पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह (भू० पू० राजदूत एवं राज्यपाल), श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह (प्रसिद्ध लेखक), डा० रामकरण शर्मा (भू० पू० कुलपति संस्कृत वि० वि० दरभंगा एवं वाराणसी) आदि प्रमुख व्यक्ति रहे हैं।

१३—पं. जगन्नाथ दीक्षित के पुत्रों के सम्बन्ध में लेखकों में मत विभिन्नता है। पं० मथुरा नाथ तिवारी द्वारा लिखित चैनपुर का इतिहास' (भूमिहार ब्राह्मण' कलकत्ता, मई १९३७, पृष्ठ ९९) में चार, पं० जयनारायण शर्मा लिखित 'दशविध ब्राह्मण संहिता' में चार, पं. कुलदीप नारायण राय 'झड़प' लिखित 'गोस्वामी तुलसी दास' पृष्ट ३५१ में छः पुत्र तथा प्रो. जगन्नाथ प्र. मिश्र आदि लिखित 'दिक्पाल मिश्र वंश परिचय' में दो पुत्र बताया गया है। दशविध ब्राह्मण संहिता और 'दिक्पाल वंश परिचय' में पं. जगन्नाथ दीक्षित के समय में भी अन्तर पड़ता है।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

सहदौलिया मूल के ब्राह्मणों में पं० रामनन्दन मिश्र (प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी एवं अध्यात्मिक नेता), पं० शुकदेव शर्मा कर्मकांडी (दर्जनों सामाजिक धार्मिक पुस्तकों के लेखक) तथा पं० शिवसागर मिश्र (प्रसिद्ध साहित्यकार तथा भू० पू० राजभाषा निदेशक, रेल मंत्रालय) पं० शीलभद्र साहित्यरत्न आदि प्रमुख व्यक्ति वर्तमान हैं। एकसरिया और सहदौलिया दोनों मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों की गणना अब भूमिहार ब्राह्मणों में ही होती है।

पं० कुलदीप नारायण राय भड़प' (गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ २५३) के अनुसार :— "वर्तमान उन्नाव जिले से बिहार में आकर बसने वाले याजी ब्राह्मण, जो मूलतः कान्यकुब्ज हैं अब भूमिहार ब्राह्मण में ही गिने जाते हैं। इनके पूर्वजों को ५२ गांव की वृत्ति मिली हुई थी। बिहार के स्व० प्रधान मंत्री डा० सरगणेश दत्त सिंह इसी वंश परम्परा में थे और श्री शीलभद्रयाजी तथा पटना उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध वकील श्री बलभद्र प्रसाद सिंह इसी परम्परा में हैं।"

महाराष्ट्र के अथर्व वेदि कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री न्याय भट्ट द्रबिड़ देश बीजापुर भीम नगर से आकर पटना जिले के महावलीपुर में बस गये। श्री न्याय भट्ट के पुत्र श्री गजेन्द्र भट्ट और श्री गजेन्द्र भट्ट के पौत्र श्री राजेन्द्र भट्ट हुए, जिन्होंने १५४० ई० में हुमायूं से युद्ध में शेरशाह की सहायता कर उसे दिल्ली की गद्दी पर बैठाया था। इनके तीन पुत्रों में एक श्री कृष्णचन्द्र भट्ट शेरशाह के प्रधान सेनापति और सलाहकार थे। । इन्हीं के वंशज पटना जिले के धरहरा, सेहरा, भरतपुरा आदि में निवास करते हैं और अब महाराष्ट्रीय ब्राह्मण के बदले भूमिहार ब्राह्मण ही कहलाते हैं। इसी वंश में न्यायभट्ट की २० वीं पीढ़ी में श्री रजनधारी सिंह (बिहार उड़ीसा बिधान परिषद् तथा लोक सेवा आयोग के भू० पू० अध्यक्ष तथा पटना के भू० पू० मेयर), जिनका देहान्त २०-१२-७६ को हो चुका है, थे तथा राजा त्रिविक्रम ना० सिंह (औसानगंज, काशी) आदि प्रमुख व्यक्ति हैं।

इसी प्रकार[१४] पूना (महाराष्ट्र) के भट्टनायक चित्पावन ब्राह्मण पं० भूतनाथ देवभट्ट पचम्बी के बन्दावत राजा के दरवार में सेनापति पद पर नियुक्त थे। बाद में ये वहां के राजा हो गये। १७७५ ई. के लगभग नवादा के नवाव कामदार खां से टिकारी (गया) राज्य के संस्थापक राजा मुन्दर सिंह मुंगेर के चकवार तथा सिऊरी के भट्टनायक ब्राह्मणों का बड़ा युद्ध हुआ।

१४—सेंट कोलम्बस कालेज हजारीबाग के भू. पू. हिन्दी तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष पं. परमेश्वर प्र. शर्मा द्वारा २९-४-५३ को लेखक (चौधरी राज नारायण शर्मा) को लिखे पत्र के अनुसार।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

हजारीबाग के जंगल में जा छिपे
राजा मोदनारायण देव (भट्टनायक ब्राह्मण)
और छः वर्षों तक मारे-मारे फिरे। कामदार के बाद उसके पुत्र अकबर की
अंग्रेजों से लड़ाई हुई। अकबर डरकर कोडरमा (हजारीबाग) के जंगल में
जा छिपा। राजा मोदनारायण देव ने उसे पकड़ कर अंग्रेजों को सुपुर्द
किया। अंग्रेजों ने उन्हें बिना लाट का २७ गांव दिया।"

ये भट्टनायक ब्राह्मण लाखों की संख्या में गिरिडीह, बांका तथा अन्य
क्षेत्रों में निवास करते हैं और अब भूमिहार ब्राह्मण ही कहलाते हैं। इन्हीं में
आचार्य विनोबा को बिहार में सर्व प्रथम एक लाख एकड़ भूमि दान देने वाले
राजा महेश्वरी प्र० ना० देव (घनवार राज, हजारीबाग) थे, जो दिनांक
११-४-६६ को स्वर्ग सिधारे। पिपरा के मिश्र गौतम गोत्रीय सरयूपारीण
ब्राह्मण पं० श्री कृष्ण मिश्र तत्कालीन काशी के क्षेत्रिय राजा बन्नारि (यवनारि)
के मंत्र गुरु थे। वे तपस्वी ब्राह्मण थे। दान नहीं लेते थे। लेकिन राजा
ने एक यज्ञ में एक प्रगना का दान पत्र चुपचाप गुरु की पगड़ी में रख दिया।
जब श्री मिश्र को पता चला तो उन्होंने राजा को शाप दिया 'तुमने मेरा तप
नष्ट किया है, इसलिए तेरा राज्य आगे चलकर मेरे वंश में चला आयगा।'
श्री मिश्र के शाप के कारण काशी का राज्य इन्हीं के वंश में आया: पं० श्री
कृष्ण मिश्र के दो पुत्र थे- (१) श्री राम मिश्र और श्री देव मिश्र। श्री राम
मिश्र तेतरिया (गंगापुर) में बसे और श्री देव मिश्र मिर्जापुर जिले के ठठरा में।
श्री राम मिश्र के वंशज श्री मनोरंजन मिश्र के पुत्र श्री मनसाराम मिश्र को
काशी का राज्य प्राप्त हुआ और उनके पुत्र श्री बलवन्त सिंह को महाराजा की
उपाधि प्राप्त हुई। अब इन्हीं के वंशज वर्त्तमान काशी नरेश महाराजाधिराज
द्विजराज डा. विभूति नारायण सिंह तथा अन्य भूमिहार ब्राह्मण हो
कहलाते हैं।

इन्हीं पं० कृष्ण मिश्र के भाई पं. विष्णुदेव मिश्र के वंशज देवरिया जिले
में सरयूपारीण ब्राह्मण में ही गिने जाते हैं।

इसके अतिरिक्त भूमिहार ब्राह्मणों में सरयूपारियों के नैनीजोर के तिवारी,
मरसी के मिश्र, हस्तगामे के पाण्डेय, मामखोर के शुक्ल, हीरापुरी पाण्डेय
आदि मिले हुए हैं।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

१ द्वित वर जगन्नाथ दीक्षित कन्नौज से आकर एकसार गाँव (छपरा इल
में बसे। इसीलिए इस देश वाले एकसरिया ब्राह्मण और दीक्षित कह
लगे। उसी का अपभ्रंश अब एकसरिया बाभन हो गया है। य
में वे कन्नौजिया ब्राह्मण हैं।"

बंगाली ब्राह्मण विद्वान डा० राजेन्द्र लाल मिश्र द्वारा लिखित तथा १
ई० में प्रकाशित 'विविधार्थ संग्रह' के अनुसार: "कान्यकुब्ज ब्राह
दिगेर पांच टो दल आछे यथा सरवरिया, सनौढा या सनाढ्य, जिझौति
भूमिहार एवं प्राकृत कन्नौजिया।"

अंग्रेजी विद्वान सरहेनरी एम० इलियट के अनुसार :—"ब्राह्मणों के प्र
दस विभाग हैं पंच गौड और पंच द्राविड़। पंच गौड़ों में कन्नौ
एक हैं और इनका विस्तार भी बहुत है क्योंकि वे शिवालिक पहाड़ियों
नर्मदा और बंगाल की खाड़ी तक फैले हैं। कन्नौजिया के अन्तरंग
५ हैं :—कन्नौजिया खास, सरवरिया, सनाढ्य, जुझौतिया और भूमि
वे पाँचो परस्पर विवाह करते हैं।" (ब्राह्मण जगत से)

डा० रामदास गौड़ ने अपनी पुस्तक 'हिन्दुत्व' में भूमिहार ब्राह्मणों
सरयूपारीण ब्राह्मण के अन्तर्गत माना है।

प्राच्य ब्रह्मपरिषद लखनऊ द्वारा १९८० में प्रकाशित 'ब्राह्मवा
ब्राह्मणों का वर्गीकरण चार्ट में सरयूपारीण ब्राह्मण के अन्तर्गत ही भूमि
ब्राह्मणों का उल्लेख किया गया है। 'विश्वब्राह्मण संगठन' नई दिल्ली
महामंत्री कविराज मंगल देव भारद्वाज द्वारा प्रकाशित ब्राह्मणों
वर्गीकरण में भी भूमिहार ब्राह्मणों को सरयूपारीण ब्राह्मण के अन्तर्गत लि
गया है। बंगीय विद्वान श्री दुर्गादास लाहिड़ी (पृथिवीर इतिहास, द्वित
अध्याय २२) के अनुसार :—'भूमिहार ब्राह्मण गण मैथिल ब्राह्
गणेर एकटा बलिया शाखा प्रसिद्ध।" अर्थात् भूमिहार ब्राह्मण
मैथिल ब्राह्मणों की एक शाखा है।

डा० विलसन ने 'भारतीय जातियां' नामक पुस्तक में मैथिल ब्राह्म
के छः भेदों में एक भेद 'भूमिहार' बताया है।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

पं० छोटे लाल शर्मा श्रोत्रिय (भू० पू० अध्यक्ष गौड़ ब्राह्मण सभा) द्वारा लिखित तथा १६१६ ई० में प्रकाशित 'ब्राह्मण निर्णय' में भूमिहार ब्राह्मणों को संयुक्त प्रान्त और बिहार का निवासी ब्राह्मण बताया गया है।

श्री धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी मानक शब्द कोष' के अनुसार :—"भूमिहार"—एक ब्राह्मण जाति जो प्रायः उत्तर प्रदेश और बिहार में बसती और प्रायः खेती से जीविका निर्वाह करती है।"

पं० रामचन्द्र पाठक भू० पू० प्राध्यापक राजकीय संस्कृत महा०, वाराणसी द्वारा संपादित 'भार्गव आदर्श हिन्दी शब्द कोष' (द्वितीय खंड, पृष्ठ ८४०) के अनुसार :—'भूमिहार" —'बिहार प्रदेशवासी एक श्रेणी के ब्राह्मण।'

डा० एस० पी० दुबे (लखनऊ वि० वि०) द्वारा सम्पादित 'ब्रह्मवाणी (१६८१) के पृष्ठ १४ में वर्णित 'भारत वर्ष के ब्राह्मणों का संक्षिप्त विवरण' में उल्लेख के अनुसार :—"भूमिहार"—ये ब्राह्मण पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के अंचल में फैले हैं। ये अयाचक वृत्ति वाले ब्राह्मण हैं। राय, मिश्र, तिवारी, सिंह, झा आदि इनके आस्पद हैं।'

हिन्दुस्तानी कोष, शंकर सर्वस्व, उर्दू साहित्य परिचय, जीवनझांकी आदि के रचयिता कविरत्न पं० हरिशंकर शर्मा द्वारा सम्पादित तथा गया प्र० एन्ड सन्स आगरा द्वारा प्रकाशित 'अभिनव हिन्दी कोष' पृष्ठ ३६३ के अनुसार 'भूमिहार ब्राह्मणों की एक जाति।'

मैथिल ब्राह्मण वंशोद्भव, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, प्रमाणिक हिन्दी-संस्कृत कोष आदि के रचयिता तथा 'ब्रह्म वैवर्त पुराण, ब्रह्मपुराण आदि के अनुवादक पं० तारणीश झा वेदान्त तथा व्याकरणाचार्य, दारागंज, प्रयाग द्वारा लिखित तथा श्री अर्जुन तिवारी द्वारा २०-१-८३ को प्रकाशित 'भूमिहार ब्राह्मण' शीर्षक लेख के अनुसार :-अन्य ब्राह्मणों के सम्बन्ध में, जाति विलास, जाति भास्कर, जाति निर्णय आदि संकलित ग्रन्थ ही प्रमाण माने जाते हैं, वेद शास्त्रादि नहीं। क्योंकि उसमें तो ब्राह्मण मात्र का उल्लेख है न कि देशोपाधि विशिष्ट ब्राह्मण जाति का। उसी प्रकार महर्षि मरीचि प्रणीत

'जाति विलास' को क्यों न प्रमाण माना जाय। 'जाति विलास' के १५२ वें अध्याय में भूमिहार ब्राह्मणों की उत्पत्ति का विवरण मिलता है, जो संक्षेप में इस प्रकार है–'पुराणों में यह बात प्रसिद्ध है कि भगवान परशुराम ने इक्कीसवार दुष्ट राजाओं का विनाश करके देश, काल, पात्र के अनुसार ब्राह्मणों के लिए पृथ्वी दान कर दी और स्वयं तप करने वन में चले गये। जब परशुराम जी ने पृथ्वी दे दी तब शांति प्रिय ब्राह्मणों ने उनसे निवेदन किया –'प्रभो! आप तो वन में जा रहे हैं, यदि कुछ लोग युद्ध इच्छा से हम पर आक्रमण करेंगे तो हमारी रक्षा कौन करेगा? इस पर परशुराम जी ने ब्राह्मणों को एक शंख देते हुए कहा –'जब भी कभी कोई तुम पर आक्रमण करे तो यह शंख बजा देना, मैं तुरत आकर दुष्टों को दंड दूंगा। यह पाकर ब्राह्मण निश्चित हो बड़ी निपुणता से संसार का पालन करने लगे। कुछ समय के बाद ब्राह्मण परिषद् में कुछ खल प्रकृति के ब्राह्मणों ने यह विचार प्रकट किया कि इस शंख की परीक्षा के लिए हम में से कोई इसे बजावे। यदि इसकी ध्वनि सुनकर परशुराम जी आ जाते हैं तो हमें विश्वास हो जायगा कि समय पर परशुराम जी हमारी रक्षा अवश्य करेंगे, अन्यथा हमें राजनीति के चक्कर में पड़ना अच्छा नहीं। इस विचार को उत्तम प्रकृति के ब्राह्मणों ने पसन्द नहीं किया, किन्तु अश्रद्धालुओं ने बहुमत से इसको पास करके शंख ध्वनि कर डाली। ध्वनि सुनते ही भगवान परशुराम आ पहुँचे और ब्राह्मणों से कहने लगे– शीघ्र बताओ तुम्हारा शत्रु कहां है? मैं क्षणभर में उनका विनाश करूँगा। ब्राह्मण भय से कांपने लगे और बोले–प्रभो! अपराध क्षमा हो, हम लोगों ने आपके पुण्य दर्शन के अभिलापा से शंख बजा दिया था। अब हम लोग आपके दर्शन से कृतार्थ हो गये। किन्तु अन्तर्यामी भगवान का क्रोध शांत न हुआ। उन्होंने शंख ध्वनि कर परीक्षा के पक्षधर ब्राह्मणों को शाप दे दिया कि तुमलोग राज्य करने योग्य नहीं हो। तुम्हें दरिद्रता से कष्ट भोगना पड़ेगा। 'फिर जो ब्राह्मण शंख ध्वनि कर परीक्षा लेने के पक्ष में नहीं थे, उनने कहा कि तुम लोग भूमिपति होगे, तुम्हें दरिद्रता का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह कहकर भगवान चले गये। जो ब्राह्मण परीक्षा लेने के पक्ष में नहीं थे, वे विश्वामित्र के पक्षधर थे, इसलिए कौशिक गोत्र में उनकी जीविका वृत्ति की कल्पना की गयी। जिस वंश से जिसका संरक्षण होता है, उसका उसी वंश से गोत्र का व्यवहार होता है।

यही कारण है कि कौशिक गोत्रोत्पन्न भूमिहार ब्राह्मणों की संख्या अधिक है। किन्तु सावर्ण्य, वत्स, शांडिल्य आदि गोत्र भी भूमिहार ब्राह्मण के होते हैं।

हम यहाँ जाति विलाश के कुछ अन्तिम श्लोकों को उद्धृत करते हैं :—

तथा कालेन चारंभस्तद्भावो भाव मावृतः।
एतस्यात् कौशिके गोत्रे भूमिहार समन्वयः॥ ९९॥
एवं प्रयोज्यमानत्वात् तत्त्व धर्मो निराकृतः।
भानुदत्तो महासोम्यः सर्वमूलमनुस्मृतम्॥१००॥
अजीतगर्तस्त्रयो पुत्रः भानुदत्तस्य पंचकाः।
जयद्रथस्य षट् पुत्राः सोम सिन्धु दशाग्रताः॥१०१॥
भूमिहाराः प्रजायन्ते परशुराम प्रभावतः।
एतस्मात् शाश्वतो धर्मे ब्रह्मवृत्तिर्व्यवस्थिताः॥१०२॥
ब्रह्मकालं विजानीयात् ब्रह्मतत्व व्यवस्थितम्।
ब्रह्मदेशं तथा कार्यं तजा वृत्तिः तथा क्रिया॥१०३॥

अर्थ इस प्रकार परशुराम जी के सम्बन्ध में भूमिहार जाति भेद से नियुक्त हुए और कौशिक गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मणों का वंश प्रवृत्त हुआ। जिनके आदि पुरुष महासौम्य, भानुदत्त हुए तथा अजीत गर्त और उनके तीन पुत्र हुए। भानुदत्त के पाँच पुत्र हुए, जयद्रथ के छः पुत्र हुए। इस प्रकार सोम, सिन्धु और दश वंशज अन्य।

इसी प्रकार शाश्वत धर्म और व्यवस्थित ब्रह्मवृत्ति के पालक भूमिहार ब्राह्मण परशुराम जी के प्रभाव से ब्रह्मकाल, ब्रह्मतत्व तथा तत्तद्देशादि व्यवहार वृत्ति में कुशल हुए।

उपर्युक्त प्रकार से 'जाति विलाश' में भूमिहार ब्राह्मण की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है।"

सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावतंश, हिन्दी के शीर्षस्थ विद्वान प्रो० राजनाथ पाण्डेय, सुलतानपुर (उ० प्र०) द्वारा लिखित 'त्रिकालजयी' (पृष्ठ ४९, ५१ तथा ५२) के अनुसार :—

भूमिहार ब्राह्मण समाज

"मैं भूमिषार, भूमिषर, भूमिहार, शब्द को भूरसु, भूदेव, भूमिपाल, महियाल (मोह्याल) आदि के ही सामान विप्र, द्विज या ब्राह्मण शब्द का ही एक पर्याय मानता हूँ।"

"किसी से याचना न करने आदि गुणों से भूमिहार ब्राह्मण अन्य सभी वर्ग के ब्राह्मणों से अधिक श्रद्धाभाजन माने जाने चाहिये अयाचक वृत्ति के अतिरिक्त भूमिहार ब्राह्मणों में सर्वाधिक अभिनन्दनीय गुण उनकी अप्रतीम प्रगतिगामी प्रवृत्ति है।'

भूमिहार ब्राह्मणों के अकलुष ब्राह्मण्य एवं प्रगतिगामिता का ही प्रभाव है कि आज भारत के कोने-कोने में ही नहीं अपितु हिन्दी भाषी प्रभासी विदेशों में भी सर्वत्र विद्यमान हैं तथा इन्हें गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त हैं। बिहार के चौधरी राजनारायण शर्मा (श्रीरामपुर अयोध्या, डाकघर वैनी, जिला—समस्तीपुर), सिमरी,भोजपुर के पांडेय सूर्य नारायण शर्मा भू० पू० विधायक एवं एक सहस्त्र पृष्ठों के महान शोध ग्रन्थ 'ब्राह्मण जाति विवेक' के प्रणेता, स्वामी सहजानन्द सरस्वती के ही सगे भतीजे डा० रामचन्द्र शर्मा (बड़ीबाग गाजीपुर) तथा गाजीपुर के ही डा० विवेक राय तथा लिलकर (बलिया) के डा० कुलदीप नारायण राय 'झड़प' जैसे प्रबुद्ध जनों यानी समस्त ब्राह्मणों के सखा इन पंडितों के ऊपर किस जाति को गर्व न होगा?"

"उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में ही नहीं—मिर्जापुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़ आदि जिलों में इनके हजारों वैवाहिक सम्बन्ध सरयूपारीण ब्राह्मण परिवारों के यहाँ तथा बिहार में सरयूपारीण, कान्यकुब्ज और मैथिल ब्राह्मण परिवारों में हैं और होते रहते हैं।"

ब्राह्मणों की एकता

ब्राह्मण मूलतः एक हैं। मनु के समय तक उनके विभक्त होने का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। बहुत बाद विभिन्न कारणों से अनेकानेक भेद हो गये जिसे आधुनिक और कृत्रिम ही कहा जा सकता है। पहले प्रधान दो शाखाओं में विभक्त हुए उसके बाद दश शाखाएँ बनी और बाद में तो जन्मभूमि, व्यवसाय आदि के अनुसार हजारों प्रशाखाओं में ब्राह्मण गण विभक्त हो गये अधिकांश प्रशाखाएँ मुस्लिम शासन काल में बनी।

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

धनबल, जनबल और बुद्धिबल के रहते हुए भी ब्राह्मण आपसी द्वेष और कटुता के कारण संगठित नहीं है। यहां तक कि 'ब्राह्मणः ब्राह्मणं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते' तथा 'बाभन, कुत्ता, हाथी, तीनों जात के घाती' कहावत प्रचलित हो गयी है।

अतीत में ब्राह्मण सब एक सूत्र में आबद्ध थे। बाद में कृत्रिम भेदों ने उनकी एकता को नष्ट किया। इस सब के बाद भी कुछ दल के ब्राह्मणों ने एकता बढ़ाने और उसे कायम रखने का प्रयास लेख, संगठन तथा वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा करते रहे हैं।

बाबू विश्वनाथ सिंह लिखित 'मेरा गाँव मेरे लोग', पृष्ठ ५३ के अनुसार– "महामना पं० मदन मोहन मालवीय द्वारा सर्वब्राह्मण सम्मेलन का आयोजन सन् १९२८ में किया गया था, जिसमें काशी नरेश महाराजाधिराज द्विज राज प्रभुनारायण सिंह को स्वागताध्यक्ष बनाया गया था। कुछ वर्ष बाद धर्म समाज संस्कृत कॉलेज, मुजफ्फरपुर के प्रिन्सपल के प्रयास से मुजफ्फरपुर में सर्वब्राह्मण सम्मेलन आयोजित हुआ था। इसका सभापतित्व श्री रामदयालु सिंह जी ने किया था। मुजफ्फरपुर के लोकमान्य ब्रह्मचर्याश्रम के संस्थापक सरयूपारीण ब्राह्मण श्री अम्बिकादत्त अग्निहोत्री इस सम्मेलन के संयोजक थे।"

पं० पीताम्बर झा अधिवक्ता पटना उच्च न्यायालय की सम्मति (१९२६ में प्रकाशित 'ब्राह्मण परिचय' पृष्ठ २ के अनुसार):—'ब्राह्मणों में अविद्या के कारण कुरीतियाँ प्रविष्ट हो गयी हैं। उनका निराकरण ज्ञान प्राप्ति से हो सकता है। ब्राह्मणों में धनबल, जनबल है किन्तु पारस्परिक द्वेष एवं कटुता के कारण उनकी शक्ति क्षीण हो गयी है। शक्ति क्षीण होने से ही उनपर आक्षेपों और द्वेषों का आरोपण हो रहा है। उन्हें परस्पर के वैमनस्य को हटा कर एक होने का प्रयत्न करना चाहिये। ब्राह्मण समझें कि कृत्रिम कारणों से भेदोपभेद की संख्या कितनी बढ़ गयी है और इससे समाज को कितनी हानि हो रही है।

श्री वीरेन्द्र नारायण सिंह और श्री ओंकार नाथ शर्मा (२७ फरवरी १९६८ के 'साधुमत' में लिखित लेख) के अनुसार :– सन् १९२८ में महामना पं० मदन मोहन मालवीय ने अ० भा० ब्राह्मण सम्मेलन बुलाया था।

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

चारों शंकराचार्य पधारे। काशी नरेश को स्वागताध्यक्ष बनाया। बड़ा प्रयत्न किया कि ब्राह्मण सब एक हो जाय पर 'बाभन कुत्ता, नाऊ' जाति देख गुर्राऊ आदत नहीं छूटी। क्या हो अच्छा होता सभी ब्राह्मण एक मंच पर होकर अपनी पूर्व परम्परानुसार देश को सुदृढ़ करते।"

महामहोपाध्याय पं० चित्रधर मिश्र (टभका, समस्तीपुर) भी ब्राह्मणों की एकता चाहते थे। उन्होंने एक बार मुंगेर की अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा में उपस्थित होकर निम्न श्लोक पढ़ा था :—

"एषामुद्‌ग गिरौनृपैर्बहुविधैरागत्य संशोभित
सद्धर्मादि विशोधिनी निज सभा देवेन्द्र संराजिता ॥
मन्ये देव सभाध भूमिममलां कर्तुं स्वतोऽवातरत्
किन्त्वस्या भूमिहार घटिता न स्यात्समाख्या तदा ॥
विप्राः सर्वविधाः समेत्य सकलं स्वं स्वं चरित्रं सदा
एतस्या नियमेन सम्मततरं संशोध्य कुर्युर्मुदा ॥
एवं चेदखिलस्य भारतं दलस्यैषा महाव्यापिका
कुर्यादिष्ट फलानिरियता नैवास्ति काचित्पुनः ॥"

भावार्थ :—"यदि भूमिहार ब्राह्मण लोग अपनी सभा का नाम भूमिहार ब्राह्मण महासभा न रखकर केवल ब्राह्मण सभा रखें तो सब श्रेणी के ब्राह्मण इसमें शामिल होंगे और ब्राह्मण समूह की उन्नति का विचार करेंगे, जिससे बड़ा लाभ होगा।"

गौड़ ब्राह्मण सभा के भू० पू० अध्यक्ष पं० छोटेलाल शर्मा श्रोत्रिय ने ब्राह्मणों के आपसी द्वेष को दर्शाते हुए १६१६ ई० में प्रकाशित 'ब्राह्मण निर्णय' में इस प्रकार लिखा है :—"इस द्वेष ने बड़े-बड़े कुल और वंश का नाश कर डाला और उसकी महत्ता को बट्टा लगा दिया। क्योंकि वर्तमान में भूमिहार ब्राह्मणों के सम्बन्ध में जो गढ़न्त लोगों ने गढ़ी उसको सुनकर न्यायशील मनुष्य का हृदय कंपायमान हो जाता है।"

"चित्पावन ब्राह्मणों के सम्बन्ध में भी अन्य ब्राह्मणों ने कई विरूद्ध बातें द्वेष बुद्धि से लिख दी है, जो अमानवीय है।"

ऐसे ही विद्वेषपूर्ण एक छोटी पुस्तिका सनाढ्य ब्राह्मणों के विरुद्ध मथुरा से प्रकाशित की गयी है।

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

मारवाड़ी ब्राह्मण कुलोत्पन्न पं० मोतीलाल मिश्र एम० ए० विद्यालंकार (तत्कालीन संपादक 'हिन्दुस्तान') ने १९३५ में कलकत्ता से 'भूमिहार ब्राह्मण' के प्रकाशन पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए इस प्रकार लिखा था :— "पं० सूर्यनारायण राय शर्मा के संपादन में 'भूमिहार ब्राह्मण' नामक नवीन हिन्दी मासिक पत्र के प्रकाशन का शुभ संवाद सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हमारी यह अभिलाषा है कि 'भूमिहार ब्राह्मण' समस्त ब्राह्मण समाज का मुख पत्र होकर ब्रह्मशक्ति को जागृत करने में सफल हो। यह भारत के समस्त ब्राह्मण बन्धुओं को संगठित कर फिर एक बार संसार में ब्रह्मशक्ति की विजय वैजयन्ती फहराने में समर्थ हो। हम ब्राह्मण समाज का वह रूप देखना चाहते हैं जब वह संसार को यह कहते हुए ललकार सकेगा—"इदं शास्त्रमिदं शस्त्रं शापादपि शरादपि"। "जिसे सुनकर समस्त संसार सिर झुकाकर कहेगा—'ब्रह्मतेजो बलं बलम्'।"

'ब्राह्मण वंश विवेक' तथा 'सैनिक ब्राह्मण' के रचयिता पं० सूर्य नारायण शर्मा (भू० पू० विधायक तथा प्रखंड प्रमुख, सिमरी, भोजपुर) स्वागताध्यक्ष अ० भा० ब्रह्मर्षि परिषद् के ६-४-६८ को बडुरर (रोहतास) अधिवेशन में दिये गये भाषण के अनुसार :—"ब्राह्मणों का आपसी कलह आज पराकाष्ठा पर है। एक शाखा अपनी ही दूसरी शाखा को नीच बतलाने में ही अपनी शक्ति का अपव्यय कर रही है। कोई कहता है ब्राह्म० केवल दश प्रकार के ही हैं। उस दश विध में कोई किसी को मानता है तो कोई किसी को। दशविध ब्राह्मणों का भेद न तो शास्त्र सम्मत है और न इतिहास में ही। धर्मशास्त्र में तो एक ब्राह्मण जाति का उल्लेख हुआ है। ब्राह्मणों का जो नाम करण हुआ है, वह कुछ देश के नाम पर हुआ है—गौड़ भी उस देश में निवास के कारण, सरयूपारीण, सरयू नदी के पार रहने के कारण हुआ है और भूमि रखने वाले का 'भूमिहार' नामकरण हुआ है। इन सभी प्रकार के ब्राह्मणों का जो कहीं-न-कहीं वैवाहिक सम्बन्धों से सम्बन्धित हैं, एक सूत्र में आबद्ध करने की आवश्यकता है। धर्मशास्त्र के अनुसार ब्राह्मण जाति एक है। प्रयाग के इर्द-गिर्द कान्यकुब्ज एवं सरयूपारीण कहाने वाले ब्राह्मण भूमिहार ब्राह्मणों से वैवाहिक सम्बन्धों से सम्बन्धित हैं। मिथिला के भूमिहार

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

तथा मैथिल दोनों ब्राह्मणों में वैवाहिक सम्बन्ध हैं। इस तरह ब्राह्मणों के भेद जो अलग-अलग मणियों के समान बिखरे हुए हैं, उन्हें एक सूत्र में ग्रथित करनेवाले सूत्र को आज भूमिहार ब्राह्मण कहते हैं। कान्य-कुब्ज वंशावली की इस घोषणा को 'कान्य कुब्जा द्विजाः सर्वे" की वैवाहिक सम्बन्धों को सर्वव्यापी बनाकर क्रियात्मक रूप देना चाहिये। सब कागजों में विशेषण छोड़ कर केवल 'ब्राह्मण' शब्द का प्रयोग करना चाहिये।" सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावतश प्रो० राजनाथ पांडेय (भू० पू० हिन्दी विभागाध्यक्ष त्रिभुवन वि० वि० काठमांडो, नेपाल तथा भू० पू० रीडर सागर वि० वि०) सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश के अनुसार :—

समग्र भारत में ब्राह्मणों को विलग करने का षड्यंत्र इन दिनों बहुत जोरों पर चल रहा है। कौन कहता है कि मैथिल, भूमिहार, सरयूपारीण, कान्यकुब्ज, सनाढ्य तथा गौड़ एवं सारस्वत एक नहीं हैं। हाय! क्या वह दिन देश में कभी नहीं आयेगा जब हम सब एक थाली में भात खायेंगे और हम में से प्रत्येक की बेटी किसी एक के घर की गृहलक्ष्मी बनेगी?

हमें अलग-अलग सरयूपारीण पत्रिका, मैथिल समाज पत्रिका, भूमि-हार ब्राह्मण पत्रिका, निकालते हुए भी एक "अखिल ब्राह्मण पत्रिका" चाहे वह वार्षिक ही क्यों न हो निकालने का प्रयत्न करना चाहिये।"

उपर्युक्त प्रो० राजनाथ पांडेय, सुलतानपुर (उ० प्र०) द्वारा चौधरी राजनारायण शर्मा को ११-११-७८ को लिखे पत्र का कुछ अंश :—

(१) 'हमारी एक लड़की कान्यकुब्जों के, एक गौड़ ब्राह्मणों के तथा एक सरयूपारीणों के परिवार में गयी है। एक लड़की जुझौतिया अपने घर आयी है।"

(२) "मैं समग्र हिन्दी भाषी भारत भूमि में (नेपाल में भी) बसे ब्राह्मण मात्र में रोटी बेटी का निकटतम सम्बन्ध स्थापित होते देखना चाहता हूँ। वास्तव में यदि सारे प्रतिबन्ध ब्राह्मणों के उपवर्गों के टूट सकें तथा ब्राह्मण मात्र में सम्बन्ध स्थापित होना सर्वमान्य हो जाय तो देश का भारी कल्याण हो।"

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

(३) "मैंने अपना स्वयं का विवाह भूमिहार ब्राह्मण कन्या से करना चाहता था, तब मैं एम० ए० कर चुका था।"

(४) "हमारे यहाँ प्रतापगढ़ के प्रसिद्ध पं० मुनीश्वर दत्त उपाध्याय (सरयूपारीण ब्राह्मण) के घर बहुएँ सदा भूमिहार ब्राह्मण परिवार की ही आती हैं।"

(५) "इलाहाबाद जिले के बारा तहसील में सरयूपारीण और भूमिहार ब्राह्मणों में उन्मुक्त रूप से रोटी-बेटी का सम्बन्ध हजारों सालों से चला आ रहा है।"

मैथिल ब्राह्मण वंशावतंश पं० मूरत झा, बेनी, समस्तीपुर :—"वेद शास्त्रों में ब्राह्मण जाति एक है। कान्यकुब्ज, मैथिल, गौड़, जुझौतिया, भूमिहार आदि भेद देशपरक तथा व्यवसायपरक हैं। एक ही मूल के ब्राह्मण कहीं मैथिल ब्राह्मण और कहीं भूमिहार ब्राह्मण कहे जाते हैं। जैसे बेलौंचे सदई, जलैवार, कोदरिये, मरें मंगरौनी, सनैवार, सुरगणे, दिघवे सकहपुर, ओइनवार आदि। भूमिहार और मैथिल ब्राह्मणों का परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध भी सदा से होता आ रहा है। अन्य दल के ब्राह्मणों के साथ भी भूमिहार ब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्धों से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार भूमिहार ब्राह्मण ब्राह्मणों की एकता की एक कड़ी हैं। ब्राह्मणों को आपसी एकता बढ़ाने के लिये राग-द्वेष छोड़कर सभी प्रकार से अधिक योग देना चाहिये।"

मैथिल ब्राह्मण वंशावतंश प्रो० प्रेमदत्त मिश्र शास्त्री एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति) वरिष्ठ प्रवक्ता श्री कृष्ण चैतन्य इण्टर कालेज नन्दगांव, मथुरा (उ० प्र०) द्वारा २४-५-८५ तथा ५-७-८५ का चौधरी राजनारायण शर्मा को लिखे पत्र के अनुसार :—

"ब्राह्मणों में एकता कम विघटन अधिक है, इसका कारण मैं ब्राह्मणों का अज्ञान मानता हूं। आज ब्राह्मण जाति कूप मंडूक हो गयी है। वह बहुत संकीर्ण तथा संकुचित वृत्तिवाली हो गयी है। एक ब्राह्मण वर्ग

एक ब्राह्मण वर्ग दूसरे
को दूसरे ब्राह्मण वर्ग का ज्ञान ही नहीं है। इस जाति का वर्चस्व इससे विदा हो
ब्राह्मण वर्ग से द्वेष करता है। अतः आज ब्राह्मण समाज
गया है। परस्पर प्रेम नहीं है, द्वेष है, जलन है। वह दूरदर्शी नहीं रह
सोया हुआ है। राजनीतिक चेतना खो चुका है। यह विशाल ब्राह्मण॰
गया है। भेद, प्रभेद, शाखा-प्रशाखाओं में बटी हुई खड़ी हो जाय
जाति यदि देश आदि का भेद मिटा कर एक झंडे के नीचे साहस नहीं
तो आज भी इस भूसुर जाति के वर्चस्व को कोई चुनौती देने का
करेगा।"

लखनऊ के
डा॰ एस॰ पी॰ दूबे, अध्यक्ष प्राच्य ब्रह्म परिषद्, :—
प्रादेशिक सम्मेलन १९८१ के अवसर पर दिये गये भाषण का कुछ अंश
उसका
ब्राह्मण संस्कृति के पुनरवगाहन में ब्राह्मण का आधार एक अंग
अध्ययन, त्याग और तपस्या है। आज ब्राह्मण समाज का ही अयाचक
अपने को शेष समुदाय से इस बात पर पार्थक्य ले चुका है कि वह समृद्धि में
है। उसमें सम्पत्ति की योग्यता प्रचुर मात्रा में है और भौतिक पक्ष
काफी आगे जा चुका है। परिषद् को धारणा में यह योग्यता भौतिक अध्यात्मिकता
को तो सुगम बनायेगी, लेकिन ब्राह्मणवाद की आत्मा जिस संस्कृति के
और साधना में निहित है, उससे वह दूर होता जायगा। ब्रह्म ब्राह्मण
पुनर्जीवन में कुछ आवश्यक पक्षों पर पूर्ण सतर्क हो जाना है। एक व्यवहार
वर्ग को दूसरे ब्राह्मण वर्ग के प्रति सौहार्द्र, समत्व और सम्मान का है और
देना है। ब्राह्मिक एकता में ही सामाजिक एकता निहित रखने
सामाजिक एकता ही राष्ट्रीय एकता और विश्व बन्धुत्व को अक्षुण्ण कन्याकुमारी
में सक्षम है। सभी ब्राह्मणों से अनुरोध है कि वे कश्मीर से अभिनव
तक, पंजाब से असम तक एक ब्रह्मध्वज के नीचे आकर देश को
नेतृत्व प्रदान करें।"

प्राच्य ब्रह्म परिषद्, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ब्राह्मणों की एकता
के लिए प्रयत्नशील है। दिनांक १८-१-८१ को सम्पन्न अधिवेशन में सभी
ब्राह्मण दल के लोग आमंत्रित थे। उक्त अधिवेशन में पद्मविभूषण चन्द्रेश्वर
प्र॰ ना॰ सिंह (तत्कालीन राज्यपाल) मुख्य अतिथि थे। इस पुस्तक के
लेखक चौधरी राजनारायण शर्मा भी आमंत्रित किये गये थे। प्राच्य

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

ब्रह्मपरिषद् के सदस्यों के लिये आदर्श संकल्प की कई बातें ब्राह्मणों की एकता के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं, जिनमें कुछ ये हैं :—'सभी ब्राह्मण शाखाओं के एकीकरण में विश्वास, कुप्रथाओं और अन्ध विश्वासों का उन्मूलन, दहेज का उन्मूलन, बीसा-विश्वा, तीन-तेरह, याचक-अयाचक, उत्तम-मध्यम आदि कृत्रिम एव असंगत अन्तर की समाप्ति।"

अन्तर ब्राह्मण विवाह, समवेत यज्ञोपवीत एवं अन्य संस्कारों की व्यवस्था तथा सामूहिक चिन्तन एवं जीवन के आयोजनों का प्रसार।

श्री दंडी स्वामी विमला नन्द सरस्वती (राजगुरु मठ, शवालाघाट, वाराणसी) की अध्यक्षता में संगठित अ० भा० ब्राह्मण परिषद् भी ब्राह्मणों की एकता के लिये प्रयत्नशील है—उसका भी मुख्य उद्देश्य 'सामाजिक निष्ठा तथा ब्राह्मण समाज की एकता हेतु सुधार तथा संगठन, नशाबन्दी, तिलक दहेज आदि कुप्रथाओं का अन्त आदि है।

मध्य प्रदेश के सागर जिले के रहली में संगठित 'सर्व ब्राह्मण कल्याण समिति' (जिसके संगठन मंत्री पं० प्रभुदयाल बुधौलिया हैं) भी ब्राह्मणों की एकता और कल्याण के लिये प्रयत्नशील है। विश्व ब्राह्मण संगठन (दिल्ली) भी ब्राह्मणों की एकता के लिये प्रयत्नशील है।

ब्राह्मणों की एकता की एक सशक्त कड़ी भूमिहार ब्राह्मण है। भूमिहार ब्राह्मणों के कुछ मूल और गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के समान तथा कुछ मूल गोत्र कान्यकुब्ज, सरयूपारीण आदि ब्राह्मणों के समान हैं। किन्तु मैथिल ब्राह्मणों के समान मूल न कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के और न सरयूपारीण आदि ब्राह्मणों के हैं और न कान्यकुब्ज और सरयूपारीण ब्राह्मण आदि की तरह एक भी मूल मैथिल ब्राह्मणों के हैं। कान्य-कुब्जादि ब्राह्मणों के समान शुक्ल, पांडेय, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि उपाधियाँ भी मैथिल ब्राह्मणों के नहीं हैं। इसके विपरीत मैथिल, कान्य-कुब्ज, सरयूपारीण, जुझौतिया आदि ब्राह्मणों के अनेको मूल तथा शुक्ल, पांडेय, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि उपाधियाँ भी भूमिहार ब्राह्मणों में समान हैं। भूमिहार ब्राह्मणों के वैवाहिक सम्बन्ध भी मैथिल, सरयूपारीण, कान्यकुब्ज, जुझौतिया, सारस्वत, बंगाली, त्यागी, महियाल और पर्वतीय

ब्राह्मणों से होते हैं। मैथिल ब्राह्मणों के वैवाहिक सम्बन्ध मैथिल ब्राह्मणों के अतिरिक्त सिर्फ भूमिहार ब्राह्मणों से ही होते हैं। भूमिहार ब्राह्मण का सम्बन्ध अन्य ब्राह्मण दलों के साथ होने के कारण मैथिल ब्राह्मण सहित सभी ब्राह्मण एक दूसरे से सम्बद्ध हैं।

देहाती क्षेत्रों में सभी ब्राह्मणों के लिये 'बाभन' शब्द भी एकता सूचक है।

ब्राह्मणों की एकता निम्नांकित बातों से प्रदर्शित होती है :—

भूमिहार ब्राह्मण--मैथिल ब्राह्मण

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि पंच गौड़ में एक शाखा मैथिल तथा एक शाखा कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मण की एक शाखा भूमिहार ब्राह्मण हैं। इन दोनों (मैथिल और भूमिहार) ब्राह्मणों को एकता इस प्रकार हैं :—

भूमिहार तथा मैथिल दोनों शब्दों का अर्थ भूमि प्राप्त करने वाला होता है। (देखिये—'ब्राह्मर्षिवंश' पृष्ठ २६ तथा ५१)।

मूल की एकता :—पंचोभे रत्नपुर, बलहे पोखराम, मरैंगरौनी सनैवार, बेलौंचे सुदई, सुरौरे कांटो, दिघवे सन्दहपुर, कोदरिये, भोचरिये ओइनवार, लदौरे, वालियासे, जलैवार, सुग्गगे, सभ्भवारे, नोनतवार आदि दोनों के मूल एक है। उपयुक्त मूल के ब्राह्मण कहीं मैथिल और कहीं भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं।

बंगीय विद्वान श्री दुर्गादास लाहिड़ी तथा डा० विलसन ने मैथिल ब्राह्मण की एक शाखा भूमिहार ब्राह्मण बताया है।

पटना उच्च न्यायालय के भू० पू० अधिवक्ता पं० रामबहादुर शर्मा लिखित 'ब्राह्मण परिचय' की टिप्पणी १, पृष्ठ २ के अनुसार :— "तिरहुत में तिरहुतिया (मैथिल) और पश्चिमा (पश्चिमीय) दो प्रकार के ब्राह्मणों का निवास है। ये एक ही वृक्ष की दो शाखायें हैं। इनके मूल गोत्र प्रायः समान हैं और परस्पर विवाह सम्बन्ध होता है।"

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

'ब्राह्मण परिचय' पृष्ठ ६ के अनुसार :—"बिहार के सारण जिले में 'दिघवा दुबौली नाम से प्रसिद्ध एक स्थान है। प्रायः एक सहस्त्र से भी अधिक समयपूर्व दिघवा में शांडिल्य गोत्र के ब्राह्मण रहते थे, जो सब प्रकार के ऐश्वर्य और विद्या से सम्पन्न थे। उनके बल और गुण से वह स्थान बहुत प्रसिद्ध हुआ। चेरो नाम की जाति से उनका संघर्ष हुआ और कालान्तर में वह स्थान उन्हें छोड़ना पड़ा। उस स्थान को छोड़ वे पूर्व की ओर तिरहुत में जा बसे। कुछ कालोपरान्त उनकी दो शाखायें हो गयी और उनकी एक शाखा मैथिल ब्राह्मणों में मिल गयी और दूसरी शाखा के लोग पश्चिमी ब्राह्मण (भूमिहार ब्राह्मण) कहलाये"। दिघवा से आने के बाद दोनों शाखाओं के ब्राह्मण 'दिघवे' या 'दिघवैत' मूल से प्रख्यात हुए।

मैथिल ब्राह्मण में मिले हुए शाखा के लोग सन्दहपुर से अन्यत्र फैलने से दिघवे सन्दहपुर मूल के नाम से प्रख्यात हुए। इसी सन्दहपुर ग्राम मे प० पृथु ठाकुर और पं० जयजय ठाकुर निवास करते थे—वे दोनों भाई पुरोहिती वृत्ति धारी थे। दोनों भाई बड़हिया (मुंगेर) में आकर बस गये। बड़े भाई पं० पृथु ठाकुर ने यहाँ आकर कृषि व्यवसाय को अपनाया और पं० जयजय ठाकुर पुरोहितो वृत्ति में ही लगे रहे। बड़हिया में दोनों के वंशज अपनी-अपनी वृत्ति पर कायम हैं। दोनों एक ही मूल गोत्र के ब्राह्मण होते हुए भी पं० पृथु ठाकुर के वंशज 'दिघवे सन्दहपुर' मूल के भूमिहार ब्राह्मण तथा पं० जयजय ठाकुर के वंशज 'दिघवे सन्दहपुर' मूल के मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं। इन्हीं पं० पृथु ठाकुर के वंश में स्व० बाबू विश्वनाथ सिंह अधिवक्ता, श्री ललित बिजय सिंह (भू० पू० आरक्षी महा निदेशक), डा० बमबम सिंह नील कमल' श्री कपिलदेव सिंह आदि प्रमुख व्यक्ति रहे हैं। इसके अतिरिक्त बरौनी, बेगूसराय आदि में दिघवे सन्दहपुर मूल के लोग भूमिहार ब्राह्मण तथा मधुबनी, दरभंगा आदि में मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

शिवकुंड (मुंगेर) निवासी प्रो० परमेश्वर प्रसाद शर्मा, भू० पू० हिन्दी तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष, सेंट कोलम्बस, कालेज, हजारीबाग द्वारा २५-११-६८ को चौधरी राजनारायण शर्मा को लिखे एक पत्र के अनुसार:—

"काश्यप गोत्रीय 'ओइनवार' और 'जेथरिया' दोनों एक हैं। दोनों ... शताब्दी में सिंह की उपाधि पाये हैं। दोनों की राजधानी प्रारम्भ में सुगाव (बेतिया) में रही है।"

डा० रामप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित तथा संस्कृत वि० वि० दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'मिथिला का इतिहास' में भी ओइनवार और जेथरिया दोनों मूल के ब्राह्मणों को एक बताया गया है।

वैशाली जिले के कुमरबाजितपुर, मुजफ्फरपुर जिले के यजुआर तथा दरभंगा जिले में ओइनवार मैथिल ब्राह्मण तथा मुंगेर के अभयपुर लुसधानी, घोसैठ आदि में भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं।

कोदरिये मूल के ब्राह्मण सरैसा के लोमा (जिला वैशाली) और फिर वहाँ से भथाही, सुम्ता (मुजफ्फरपुर) आदि में बसे, वे भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं। लेकिन जो दरभंगा या समस्तीपुर जिले में बसे वे कोदरिये लोआम मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

सनैवार मूल के पूर्व पुरुष दो भाई थे—[१] श्री गोपाल राय और [२] श्री केसरी राय। जिनमें श्रीगोपाल राय के वंशज नया नगर (समस्तीपुर) आदि में हैं और वे भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं। श्री केसरी राय के वंशज पटसा (समस्तीपुर) आदि में हैं और वे मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

जलैवार मूल के ब्राह्मण बेगूसराय, मुंगेर आदि में भूमिहार ब्राह्मण तथा दरभंगा और मधुबनी आदि में मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

सुरगणें मूल के ब्राह्मण मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी जिले में भूमिहार ब्राह्मण तथा दरभंगा और मधुबनी में मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

मरैं मंगरौनी मूल के ब्राह्मण मुंगेर, खगड़िया आदि जिले में भूमिहार ब्राह्मण तथा दरभंगा, मधुबनी आदि में मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

इसी प्रकार बेलौंचे सुदई पंचोभे पचपुर, बसहे पोखराम आदि मूल के ब्राह्मण कहीं मैथिल ब्राह्मण तो कहीं 'भूमिहार' ब्राह्मण कहलाते हैं।

उपाधि की एकता :— मिश्र झा, चौधरी, ईश्वर, राय, सिंह, ठाकुर, कुमर, खां आदि उपाधियाँ दोनों ब्राह्मणों में एक हैं।

वैवाहिक एकता : समस्तीपुर जिले में अवस्थित पूर्वोत्तर रेलवे के दलसिंह सराय रेलवे स्टेशन के पश्चिम और पूर्व २५-३० किलोमीटर तथा २५-३० किलोमीटर उत्तर-दक्षिण मैथिल और भूमिहार ब्राह्मणों में सहस्त्रों वैवाहिक सम्बन्ध सदा से होते चले आ रहे हैं। अन्यत्र भी होते हैं। अनारये और ब्रह्मपुरिये मूल के मैथिल ब्राह्मणों के तो अनगिनत सम्बन्धी भूमिहार ब्राह्मणों के साथ हैं। यहाँ दोनों ब्राह्मणों के कुछ सम्बन्धों का दिग्दर्शनमात्र कराया जाता है :—

भूमिहार ब्राह्मणों में द्रोणवार मूल के ब्राह्मणों के पूर्व पुरुष राय गंगाराम के दो विवाह मैथिल ब्राह्मण कन्याओं ही से थे। एक विवाह चाक के राजा सिंह मै० ब्राह्मण की कन्या भागरानी से और दूसरा विवाह तिसवारा (समस्तीपुर) के पं० गोपीनाथ ठाकुर मै० ब्रा० की कन्या मुक्तारानी से [१९]एक से तीन तथा दूसरी से छः पुत्र राय गंगाराम के हुए, जिन्होंने नरहन, बिभूतिपुर आदि में अपना राज्य कायम किया।

कवि विद्यापति के आश्रय दाता राजा शिव सिंह मै० ब्रा० की पत्नी रानी लखिमा देवी द्रोणवार मूल के भूमिहार ब्राह्मण की कन्या थी।

सेंट कोलम्बस कालेज के भू० पू० हिन्दी तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० परमेश्वर प्रसाद शर्मा द्वारा चौधरी राजनारायण शर्मा को १९६८ में

१९—श्री रमाकान्त चौधरी मै० ब्रा० लिखित 'समस्तीपुर जिला दर्शन' तथा डा० रामप्रकाश शर्मा लिखित 'मिथिला का इतिहास' में भी भागरानी और मुक्तारानी के विवाह का उल्लेख है। 'चकवार चन्द्रिका' में भी भागरानी के विवाह का उल्लेख है।

लिखे एक पत्र के अनुसार 'दरभंगा के राजा राघव सिंह' मै० ब्रा० की कन्या का विवाह जैथरिया मूल के भू० ब्रा० राज परिवार में हुआ था। जिसमें बबुरा प्रगना योगक्षेम में दे दिया गया था। २०

स्वामी सहजानन्द सरस्वती लिखित 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर' के १६८ पृष्ठ के अनुसार—"मैथिल परमहंस द्वारा लिखित पुस्तक 'ब्राह्मण सम्बन्ध से भी मैथिल मूर्द्धन्य दरभंगा महाराज का सम्बन्ध परम्परया भूमहार ब्राह्मणों से मिलता है।"

विद्यावाचस्पति पं० शीलभद्र साहित्य रत्न (पतोर, दरभगा) के ३०-३-८७ के पत्रानुसार :—"दरभंगा के उपसमाहर्त्ता श्री जीवछ ठाकुर के कुल में यह कथा प्रचलित है कि विद्यापति ने इनके पूर्वज भूदेव ठाकुर या माधव ठाकुर को अपनी बेटी के विवाह में दहेज रूप में जो जमीन दी थी—वहीं आज का कमतौल या कोट कमतौल है। कमतौल में ही इनके पूर्वज को कंगन खोलने की विधि में जो भूमि दी गयी थी—वही भूमि 'कंगनी' नाम से आज तक इन लोगों के पास में है।"

खिरहर (मधुवनी) के दिघवैत मूल के भू० ब्रा० श्री रामजुलुम चौधरी और दुलारपुर (दरभगा) के श्री तुरन्तलाल चौधरी मै० ब्रा० दोनों मौसेरे भाई थे। दोनों का ननिहाल झहुरी (समस्तीपुर) में था।

केवटगामा (समस्तीपुर) निवासी श्री काली प्रसाद सिंह भू० ब्रा० और पोखराम (दरभंगा) के श्री कौशिकी दत्त चौधरी मै० ब्रा० के विवाह महामहोपाध्याय पं० हरिदत्त मिश्र के वंशज मेघौल (बेगूसराय) निवासी श्री वंशी राय मै० ब्रा० की पुत्रियों से थे। केवटसा (समस्तीपुर) के श्री गजराज चौधरी मै० ब्रा० की तीन पुत्रियों की शादी नया नगर (समस्तीपुर) के श्री नरसिंह दत्त सिंह, श्री रघुवर शरण सिंह और श्री

२०—डा० रामप्रकाश शर्मा लिखित तथा सं० वि० वि० दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'मिथिला का इतिहास' में भी राजा राघव सिंह की कन्या के विवाह का उल्लेख है।

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

ालिम सिंह भू० ब्रा० से थीं। केवटा (समस्तीपुर) के श्री छितेश्वरी
प्रसाद चौधरी मै० ब्रा० की शादी बदेता (समस्तीपुर के श्री हृदय नारा-
यण देव भू० ब्रा० की पुत्री से हुई थी। नायर (समस्तीपुर) के श्री
सोनू पांडेय भू० ब्रा० की पुत्री की शादी टेगहुआ (बेगूसराय) के श्री
ढोढाई खां मै० ब्रा० परिवार में थी।

विभूतपुर (समस्तीपुर) के श्री कृष्ण सिंह भू० ब्रा० तथा केवटा
(समस्तीपुर) के श्री रामाश्रय चौधरी मै० ब्रा० की शादी बदलपुरा
(बेगूसराय) के श्री देवनारायण सिंह भू० ब्रा० के परिवार में है। श्री
गणपति मिश्र भू० ब्रा०, पटोरी (समस्तीपुर) की शादी नाड़ेपुर (बेगू
सराय) के श्री मोहन राय मै० ब्रा० की पुत्री से है। वन (समस्तीपुर)
के श्री रामप्रीति ठाकुर भू० ब्रा० के भाई श्री छेदी ठाकुर की शादी मोख्ति-
यारपुर (बेगूसराय) के श्री शुकदेव राय मै० ब्रा० की बहन से है तथा
श्री रामप्रीति ठाकुर के पुत्र की शादी श्रीरामपुर अयोध्या (समस्तीपुर)
निवासी श्री भुवनेश्वर चौधरी भू० ब्रा० की बहन से है। वीर सिंहपुर
ड्योढी (समस्तीपुर) के श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह (प्रसिद्ध लेखक
तथा भू० पू० सांसद) भू० ब्रा० की पुत्री की शादी प्रसिद्ध उद्योग पति तथा
अ० भा० ब्राह्मण सभा के भू० पू० अध्यक्ष सर हरगोविन्द मिश्र मै० ब्रा०
के पुत्र से है। श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह के अग्रज तथा अ० भा०
भू० ब्रा० महासभा के भू० पू० अध्यक्ष रा. ब. महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह
की पुत्री की शादी सलेमपुर (समस्तीपुर) के श्री जट्टा झा मै. ब्रा. के पुत्र
से है। केवटा (समस्तीपुर) के श्री बालेश्वर प्रसाद चौधरी मै० ब्रा०
की एक शादी शेरपुर (मुजफ्फरपुर) में तिवारी उपाधिधारी भू० ब्रा०
परिवार में तथा दूसरी शादी पटना के कुनकुन सिंह लेन स्थित श्री विश्वनाथ
सहाय सिंह भू० ब्रा० की पुत्री से है। भागीपट्टी (समस्तीपुर) निवासी
श्री सुरेन्द्र झा भू० ब्रा० की शादी कुमरबाजितपुर (वैशाली) निवासी
तथा भू० पू० रेल मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र और भू० पू० मुख्य मंत्री
डा० जगन्नाथ मिश्र मै० ब्रा० के ममेरे भाई श्री राघवानन्द कुमर के निकटतम
पट्टीदार श्री रघुनाथ कुमर मै० ब्रा० की बहन तथा श्री विपिन बिहारी कुमर
की पुत्री से है और श्री सुरेन्द्र झा के बड़े भाई श्री वैद्यनाथ झा की शादी
बड़गामा (समस्तीपुर) के श्री मौजे ठाकुर भू. ब्रा. की पुत्री से है। नेहरा

श्री गोविन्द चौधरी मै. ब्रा. की पुत्री की शादी रघुनाथ-पुर पतोर (दरभंगा) निवासी पं० जानकी रमण मिश्र (भू. पू. राज्य मंत्री) भू० ब्रा० के पुत्र श्री राघवेश मिश्र से है। इन्हीं श्री गोविन्द चौधरी की भांजी श्रीमती कामेश्वरी देवी भू० पू० रेलमंत्री श्री ललित नारायण मिश्र की पत्नी तथा वर्तमान सांसद श्री विजय कुमार मिश्र की मां हैं। इस प्रकार ललित बाबू की पत्नी और श्री राघवेश मिश्र का पत्नी दोनों फुफेरी-ममेरी बहनें हैं। रोहुआ, समस्तीपुर के भारद्वाज गोत्रीय भू० ब्रा० श्री शिवनन्दन ठाकुर की पुत्री श्रीमती शिवसुन्दरी देवी की शादी केवटा निवासी रा० सा० तृप्ति नारायण चौधरी मै० ब्रा० के पुत्र श्री लाल बहादुर चौधरी से हुई थी, जिनके पुत्र कौशल कुमार चौधरी और रामनरेश चौधरी हैं।

सेनुआरी (गया) निवासी श्री पद्मदेव नारायण सिंह भू० ब्रा० (अवकाश प्राप्त जिला जज) की पुत्री की शादी पटना उच्च न्यायालय के भू० पू० मुख्य न्यायाधीश श्री सतीशचन्द्र मिश्र के निकटतम सम्बन्धी नेहरा (दरभंगा) निवासी श्री विरेन्द्र कुमार चौधरी मै० ब्रा० (उपसचिव, विधि विभाग) के पुत्र से है। रेपुरा (समस्तीपुर) निवासी श्री जगन्नाथ शर्मा भू० ब्रा० की नतनी और श्री घनश्याम पाडेय भू० ब्रा० दहियावां, छपरा की पुत्री की शादी केवटा (समस्तीपुर) के श्री बालेश्वर चौधरी मै० ब्रा० के कनिष्ठ पुत्र से है। केवटा के भू० पू० विधायक श्री जगदीश चौधरी मै० ब्रा० के पुत्र श्री विजय कुमार चौधरी विधायक की शादी बेगू-सराय के श्री बच्चा प्रसाद सिंह भू० ब्रा० की पुत्री से हुई है।

उदयपुर (समस्तीपुर) निवासी श्री ब्रजनन्दन चौधरी भू० ब्रा० की पुत्री की शादी श्री तपेश्वर चौधरी मै० ब्रा० के पुत्र श्री बालकृष्ण चौधरी (पटोरी, समस्तीपुर) से है। केवटा (समस्तीपुर) के श्री यशवन्त कुमार चौधरी मै० ब्रा० की पुत्री की शादी धरहरा (मुजफ्फरपुर) निवासी स्व० बाबू लगट सिंह भू० ब्रा० के प्रपौत्र एव श्री दिग्विजय नारायण सिंह (भू० पू० सांसद के पुत्र से है।

सोती सलेमपुर [२१] (समस्तीपुर) निवासी मै० ब्रा० श्री विजयकांत मिश्र की पुत्रियों की शादी श्री सियाराम चौधरी, लौगांव, भागलपुर, श्री सहदेव

---

२१ - सोती सलेमपुर, बानू छपरा के सम्बन्धों की सूची श्री विष्णु शर्मा चतुर्वेद, अभ्युदय आश्रम, अमरपुर, भागलपुर द्वारा प्राप्त हुई थी।

बौंसरी, लौगांव, भागलपुर, श्री तारणी ठाकुर, बरौसरी, भागलपुर तथा श्री श्यामलाल झा, गौरीपुर भागलपुर के यहां भूमिहार ब्राह्मण परिवारों में है। सोती सलेमपुर--टोला नियारी के श्री वैद्यनाथ मिश्र मै० ब्रा० की पुत्रियों की शादी श्री जगदीश चौधरी तथा श्री रामावतार चौधरी भू० ब्रा० लौगांव, भागलपुर के यहाँ है। इसी सोती सलेमपुर में मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र का ससुराल तथा बनैली राज परिवार का सम्बन्ध भी है। बानू छपरा (बेतिया) के श्री कान्ति मिश्र मै० ब्रा० की पुत्रियों की शादी श्री भगवान चौधरी श्री धारो कुमर, श्री आनन्दी चौधरी, लौगांव, भागलपुर तथा श्री त्रिवेणी चौधरी विश्वासपुर, भागलपुर के यहाँ भूमिहार ब्राह्मण परिवारों में है। श्री नूनू मिश्र मै० ब्रा० बानू छपरा (बेतिया) की पुत्री की शादी लौगांव भागलपुर के श्री रासविहारी चौधरी भू० ब्रा० के यहाँ है। श्री राघव नारायण शर्मा, भू० ब्रा० बेला, सीतामढ़ी की एक पुत्री की शादी डा० टी० एन० झा, मै० ब्रा०, भू० पू० प्रधानाचार्य दरभंगा मेडिकल कॉलेज के साथ तथा एक पुत्री की शादी, श्री मायानन्द ठाकुर भू० ब्रा०, भू० पू० विधायक बलुआढ्योढी, पूर्णियां के साथ है। श्री कपिलदेव शर्मा भू० ब्रा० खरथुहा, नालन्दा को शादी श्री केदार चौधरी मै० ब्रा० बम्बइयां, समस्तीपुर की पुत्री से है।

नेहरा, दरभंगा निवासी श्री जटाशंकर चौधरी मै० ब्रा० की पुत्री की शादी दलसिंह सराय के भू० पू० विधायक रहीमपुर (खगड़िया) निवासी स्व० श्री मिश्री सिंह भू० ब्रा० के पुत्र से है। सिमरिया (बेगू सराय) निवासी श्री रामानुज प्रसाद सिंह भू० ब्रा० की बहन तथा स्व० राष्ट्रकवि डा० रामधारी सिंह दिनकर की भतीजी की शादी भीड़हा (समस्तीपुर) निवासी श्री बिन्दा प्रसाद राय वीरेन्द्र मै० ब्रा० भू० पू० विधायक के भाई डा० रवीन्द्र राय से है। रसीदपुर (बेगू सराय) निवासी श्री नागेश्वर चौधरी मैथिल ब्राह्मण की तीन पुत्रियों में दो की शादी भूमिहार ब्राह्मण परिवार में श्री राम विनय पांडेय तथा श्री महेश चन्द्र पांडेय (चैता, समस्तीपुर से तथा एक पुत्री की शादी मैथिल ब्राह्मण परिवार में श्री रमाकांत झा (बम्बइया, समस्तीपुर) के साथ हैं।

भूमिहार ब्राह्मण और मैथिल ब्राह्मणों की एकता सम्बन्धी विद्वानों के विचार :--

"भूमिहार ब्राह्मण समाज"

(श्री दुर्गादास लाहिड़ी और डा० विलसन के विचार पृष्ठ २८ पर देखें।)

महामहोपाध्याय पं० श्री कृष्ण सिंह ठाकुर भूमिहार और मैथिल दोनों ब्राह्मणों को एक मानते थे। दोनों के दर्जनों मूल एक ही हैं, इसलिये एक मानना उचित ही है। उन्होंने मैथिल ब्राह्मण वंशावली 'ब्राह्मण वंश विवेक' के अन्तिम पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है :—

"मैथिल ब्राह्मण भूमिहार ब्राह्मणानां चोपकार बुद्धया सर्वसीमा ग्राम वास्तव्येन तत्र विन्महेश्वरात्मजेन तर्क वारिधिना सोत्रियेन खड़वला व शजेन ठक्कुरोपाह् व श्री कृष्ण शर्मणा नाना निबन्ध पुराणादीन्यवलोक्य यथामति 'ब्राह्मण वंश विवेक' नामकोऽयं निबन्धः खलु विरच्य्य मुद्रापयित्वा प्रकाशितः।"

"मैथिल ब्राह्मणों और भूमिहार ब्राह्मणों के उपकार के लिए सर्वसीमा ग्राम के निवासी तत्रज्ञ महेश्वर पंडित के पुत्र श्री कृष्ण शर्मा ने पुराणादि अनेक ग्रन्थों को देखकर अपनी बुद्धि के अनुसार 'ब्राह्मण वंश विवेक' नामक ग्रन्थ को रचकर प्रकाशित किया।

पं० लक्ष्मी कांत मिश्र द्वारा २५ जून १९७८ के 'आर्यावर्त' के पृष्ठ ६ पर 'जहाँ आज भी इतिहास बोल रहा है' शीर्षक लेख में इस प्रकार उल्लिखित है :- "जयमंगला गढ़ के इर्द-गिर्द जलैवार भूमिहार ब्राह्मण और दहौड़ा मैथिलों की विशेषता है। जालयडोह और दहौड़ा अब भी मिथिला में है और दरभंगा जिले में उपर्युक्त मूल ग्राम के लोग मैथिल ब्राह्मण में ही गिने जाते हैं।"

कहीं-कहीं मैथिल ब्राह्मण से भूमिहार ब्राह्मण और फिर भूमिहार ब्राह्मण से मैथिल ब्राह्मण कहने लगते हैं। जैसे—सुरगणो पिरौखर मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण म० म० प० हरिदत्त मिश्र के वंशज खुटहा (मुंगेर) और संजात (बेगूसराय) वाले भूमिहार ब्राह्मण तीन चार पुश्त से कहने लगे थे। लेकिन खुटहा वाले फिर मैथिल ब्राह्मण कहने लगे हैं और संजात के हरिनारायण मिश्र आदि भूमिहार ब्राह्मण ही कहते चले आ रहे हैं।

इसके अतिरिक्त मैथिल ब्राह्मण महाराजाओं (महाराज क्षत्र सिंह, महाराज कुमार बासुदेव सिंह जिनके दौहित्र विश्वविख्यात विद्वान महा-महोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झा थे), महाराज रूद्र सिंह, महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह, महाराजा रामेश्वर सिंह आदि द्वारा पतोर (दरभंगा) के श्री सरयू प्रसाद मिश्र के पूर्वजों सहित श्री मिश्र को, नरहन के दीवान बहादुर कामेश्वर नारायण सिंह को तथा अपने भूमिहार ब्राह्मण जेठरैयतों, तहसीलदारों तक को नामान्त में ब्राह्मणोचित शर्मा उपाधि का प्रयोग करते हुए नमस्कार तथा काशी नरेशों को द्विजराज संबोधन पूर्वक प्रणाम कर एकता प्रदर्शित की जाती रही है।[२२] महामहोपाध्याय पं० चित्रधर मिश्र, पं० लूटन झा तथा अन्य मैथिल ब्राह्मण विद्वानों द्वारा भी ऐसे ही एकता प्रदर्शित की जाती रही।

वर्तमान में भी पं० मुनीन्द्र झा (सहरसा), पं० लक्ष्मीकांत झा (सं० विद्यापीठ, बैगनी), पं० सीताराम झा ज्योतिषाचार्य, पं० जीवनाथ झा (सं० महा० जनकपुर), पं० तारणीश झा वेदान्त तथा व्याकरणाचार्य दारागंज, प्रयाग आदि अपने लेखों विचारों द्वारा एकता प्रदर्शित करते रहे हैं।

भूमिहार ब्राह्मण—कान्यकुब्ज ब्राह्मण

भूमिहार ब्राह्मण नाम से कान्यकुब्ज ब्राह्मण की शाखा के रूप में प्रचलित होने के बाद मैथिल, सरयूपारीण आदि की तरह प्रकृत कान्य कुब्ज ब्राह्मण भी भूमिहार ब्राह्मणों में मिलते गये हैं। इसमें क्यूना के दीक्षित, मनोहिया के शुक्ल, वरूआ के तिवारी, शरू के अवस्थी तथा अन्य मिले हुए हैं।

मूल कहने का ढंग भूमिहार ब्राह्मणों का सीधे मूल स्थान का नाम तथा उपमूल के साथ भी है और उपाधि के साथ कान्य-कुब्जादि ब्राह्मणों की

२२—स्वामी सहजानन्द सरस्वती लिखित 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर' के पृष्ठ २१२ से २१६ तक में ऐसे पत्रों का उल्लेख है। गोपालपुर (समस्तीपुर) के जेठरैयत के वंशज के पास भी कई ऐसे पत्र रहे हैं, जिसकी सूचना श्री मुनीन्द्र प्रसाद सिंह स्वतंत्रता सेनानी, वीरसिंहपुर ने १९७६ में दी थी।

तरह भी है जैसे—बरुआ के तिवारी आदि । पं० वासुदेव तिवारी और पं० जगन्नाथ दीक्षित के मिले हुए वंश के लिए पृष्ठ २१ से २३ तक देखें ।

द्रोणवार मूल के भूमिहार ब्राह्मण वास्तव में देकुली के पांडेय कान्य-कुब्ज ब्राह्मण है। यह बात नरहन, विभूतिपुर, गंगापुर (समस्तीपुर) आदि में द्रोणवार मूल के ब्राह्मणों के पास विद्यमान वंशावली में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

मधुबनी जिले के हिसार, छपरा जिले के बभनगामा तथा पूर्णिया जिले के ढोलबज्जा आदि में अब तक द्रोणवार मूल के ब्राह्मणों की पांडेय उपाधि ही चली आ रही है—जैसे श्री राजेन्द्र पांडेय मुखिया (बगाही), श्री योगेन्द्र पांडेय (ढोलबज्जा), श्री घनश्याम पांडेय (छपरा) आदि।

उपाधि की एकता-द्विवेदी-दुबे, त्रिवेदी-तिवारी, चतुर्वेदी चौबे, पांडेय, मिश्र, शुक्ल, पाठक, चौधरी, दीक्षित हजारी, सिंह आदि दोनों की उपाधियाँ एक समान हैं।

वैवाहिक एकता :—भूमिहार ब्राह्मण और कान्य-कुब्ज ब्राह्मणों में उत्तर प्रदेश तथा बंगाल में सदा से वैवाहिक सम्बन्ध होते आ रहे हैं। बिहार में भी कुछ सम्बन्ध हैं। यहाँ मात्र कुछ ही विवाह सम्बन्धों का दिग्दर्शन कराया जाता है :—

श्री देवकीनन्दन सिंह भू० ब्रा०, आनापुर, प्रयाग की एक पुत्री की शादी बीरसिंहपुर, फतेहपुर के शीरू के अवस्थी मूल के कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में तथा दूसरी पुत्री की शादी सुलतानगंज, फतेहपुर निवासी श्री हरिनारायण सिंह का० कु० ब्राह्मण के परिवार में थी। आनापुर, प्रयाग के श्री सिद्धिनाथ सिंह भू० ब्रा० का सम्बन्ध बिठुर, कानपुर के श्री खुमान सिंह अवस्थी कान्य-कुब्ज ब्राह्मण के यहाँ है। श्री सूर्य कुमार अवस्थी भू० पू० आई० सी० एस०, का० कु० ब्रा० (गढ़वेत्ता, मेदनीपुर) की पौत्री की शादी श्री सुशील कुमार राय भू० ब्रा० (गढ़वेत्ता, मेदिनीपुर) के यहाँ हैं। लालगोला, मुर्शिदाबाद के श्री नृपेन्द्र नारायण राय भू० ब्रा० की एक पुत्री की शादी खरारी, बर्दवान निवासी श्री शांतिप्रिय त्रिवेदी, का० कु० ब्रा० से तथा चतुर्थ पुत्री की शादी दुबराजपुर, वीरभूमि निवासी श्री बैजनाथ

नायक का० कु० ब्रा० के पुत्र श्री सुधीर नायक से है। राजा धीरेन्द्र ना० राय, भू० ब्रा० लालगोला, मुर्शिदाबाद की चतुर्थ पुत्री की शादी श्री कृष्ण वाजपेयी, का० कु० ब्रा०, खरारी, बर्दवान के पुत्र से है। लालगोला, मुर्शिदाबाद के ही कुमार सत्येन्द्र नारायण राय और कुमार देवेन्द्र नारायण राय, भू० ब्रा० की पुत्रियों की शादी टेयाँ, मुर्शिदाबाद निवासी श्री नरसिंह प्रसाद द्विवेदी का. कु. ब्रा. के पुत्रों से है। घोड़ेडीह, प्रयाग निवासी श्री गेंदा पांडेय भू. ब्रा. के पुत्र की शादी रहली, सागर (म० प्र०) निवासी श्री रघुवीर प्रसाद दीक्षित का. कु. ब्रा. के यहाँ है। चिमनपुर, वैशाली निवासी श्री भिखारी तिवारी का. कु. ब्रा. की पुत्री की शादी केशवपुर, वैशाली निवासी श्री योगेन्द्र ठाकुर भू० ब्रा० से है। प्रसिद्ध राष्ट्र कवि डा० रामधारी सिंह 'दिनकर', सिमरिया, बेगूसराय की पौत्री की शादी इटावा निवासी पं० विद्याधर तिवारी का. कु. ब्रा. के पुत्र श्री नरेन्द्र प्रकाश तिवारी से है। दूसरी पौत्री की शादी भी इटावा जिले के का कु. ब्रा. परिवार में ही १९८६ में हुई है। गोरैया कोठी (सीवान) निवासी श्री सच्चिदानन्द सिंह भू० ब्रा० की शादी कान्यकुब्ज ब्राह्मण (अभियन्ता) की पुत्री से है। बहलोलपुर (छपरा) निवासी तथा मुजफ्फरपुर के उद्योगपति श्री सुरेश शर्मा भू० ब्रा० की चचेरी बहन की शादी सर गिरिजा शंकर वाजपेयी का० कु० ब्रा० के पौत्र तथा भारत के भू० पू० राजदूत श्री के० एस० वाजपेयी के भतीजा से है। मदनपुर (समस्तीपुर) निवासी स्व० डा० शालिग्राम मिश्र की दौहित्री की शादी का० कु० ब्रा० परिवार में है। मोरसंड (सीतामढ़ी) के श्री राम इकबाल सिंह भू० ब्रा० की पुत्री की शादी का० कु० ब्रा० परिवार में है। मध्य-प्रदेश के भू० पू० मुख्य मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल का० कु० ब्रा० की पुत्री एवं भू० पू० मुख्य मंत्री श्री श्यामा चरण शुक्ल की बहन की शादी मुंगेर के पं० श्री कृष्ण मिश्र से तथा प० श्री कृष्ण मिश्र के पुत्र की शादी महिषादल (बंगाल) के राजकुमार शक्ति प्र० गर्ग स० ब्रा० की छोटी बहन से है और राजकुमार शक्ति प्र० गर्ग की शादी लालगोला, मुर्शिदाबाद के राजा धीरेन्द्र नारायण राय भू० ब्रा० की तृतीय पुत्री से है। वर-सिंहपुर (समस्तीपुर) निवासी श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह भू० पू० सांसद की पुत्री की शादी कलकत्ता के नेत्ररोग विशेषज्ञ डा० कमला कांत

हजारी (अब स्व०) के पुत्र डा० श्यामाकांत हजारी कान्यकुब्ज ब्राह्मण के साथ है।

भूमिहार ब्राह्मण और कान्य-कुब्ज ब्राह्मणों की एकता के सम्बन्ध में विद्वानों और सभाओं के विचार :—

कान्य-कुब्ज महती सभा ने सरयूपारीण, सनाढ्य, जुझौतिया पर्वतीय और बगाली ब्राह्मणां के साथ-साथ भूमिहार ब्राह्मणों को भी अपना अग घोषित किया था (क्योंकि, सरयूपारीण, सनाढ्य और भूमिहार ब्राह्मण आदि कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की शाखा ही तो हैं)।

उक्त कान्यकुब्ज महती सभा ने प्रयाग में राजा कृष्णदत्त दुबे (जौनपुर) की अध्यक्षता में १९२६ ई० में सम्पन्न अधिवेशन में जो प्रस्ताव पास किया था, वह इस प्रकार है :—"समाज की शिथिलता को देखते हुए पारस्परिक ऐक्य एवं सहानुभूति के आदर्श से कान्यकुब्ज महती सभा कान्यकुब्जों के सामुदायिक संगठन की आवश्यकता समझती है तथा उसकी पूर्ति के लिये समस्त कान्यकुब्जों से अनुरोध करती है। सरयूपारीण, सनाढ्य, जुझौतिया, भूमिहार, पर्वतीय, बंगाली, गुजराती आदि समुदायों में एक बड़ा भाग अपने को कान्यकुब्ज मानता है। किन्तु इस समाज से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने से बृहत् कान्यकुब्ज समाज के संगठन में बाधा पहुँचती है। अतः सामुदायिक संगठन कर प्रेम ऐक्य एवं सहानुभूति बढ़ाना आवश्यक समझती है।"

पं० उमाशंकर वाजपेयी एडवोकेट की अध्यक्षता में १९२७ ई० में लखनऊ में सम्पन्न कान्यकुब्ज महती सभा के बीसवें अधिवेशन में पारित प्रस्ताव :—"कान्यकुब्ज महती सभा गतवर्ष के प्रस्तावानुसार इस अधिवेशन में सरयूपारीण एवं अन्य कान्यकुब्ज कहलाने वाले ब्राह्मणों की उपस्थिति देखकर अत्यन्त हर्ष प्रकट करती है तथा सामुदायिक संगठन के आदर्श से वर्तमान समय को देखते हुए सरयूपारीण सनाढ्य, जुझौतिया भूमिहार, बंगाली आदि कान्यकुब्जों को एकत्र कर बृहत् संगठन करने और उसमें प्रेम, ऐक्य एवं सहानुभूति बढ़ाने के लिये इस बात की प्रार्थना करती है कि ऊपर कहे हुए ब्राह्मण समुदाय हमारी सभा के वार्षिक अधिवेशनों

में अवश्य उपस्थित होकर योग प्रदान करें तथा इस प्रस्ताव को कार्य रूप देने में सहायक हों।"

उपर्युक्त प्रस्ताव को कार्य रूप देने के लिये [१] पं० गोकर्ण नाथ मिश्र [२] पं० रविशंकर शुक्ल [३] श्री जयदयाल अवस्थी [४] रा० सा० पं० राजनारायण मिश्र और [५] पं० रघुनन्दन शर्मा की एक समिति बनायी गयी।

कान्यकुब्ज महती सभा, लखनऊ के अध्यक्ष पं० उमाशंकर बाजपेयी के भाषण का कुछ अंश :—"उसी कान्यकुब्ज बृहद् वंश की शाखायें फैल कर सनाढ्य, छत्तीस गद्दी, जुझौतिया, भूमिहार, सरयूपारीण और अनेक बंगाली ब्राह्मणों की स्थापना हुई। समय के फेर से गमनागमनों के अभाव से, खान-पान की असमानता आदि से ऐसा भेद-भाव उत्पन्न हो गया कि एक दूसरे को भूल से गये और पुरानी एकता स्वप्नवत् हो गयी।"

कान्यकुब्ज महती सभा, लखनऊ के स्वागताध्यक्ष, न्यायाधीश पं० गोकर्णनाथ मिश्र के भाषण का कुछ अंश :—"मैं अपने उस आनन्द का वर्णन नहीं कर सकता जो मुझे उस समय हुआ, जब पिछले साल प्रयाग में सम्पन्न कान्यकुब्ज महती सभा ने यह प्रस्ताव पास किया कि उन ब्राह्मण समुदायों को अपनाने का प्रयत्न करना चाहिये, जो इस बात को समझते हैं कि वह किसी समय वास्तव में कान्यकुब्ज ही थे और उसकी प्राचीन शाखा होने के कारण कान्यकुब्जों से मिलने की इच्छा रखते हैं। मेरा तात्पर्य इस समय सरयूपारीण जुझौतिया तथा भूमिहार ब्राह्मणों से है जो ज्यादेतर इस प्रान्त के पूर्वी और दक्षिणी भाग में रहते हैं।"

'कान्यकुब्ज हितकारी' के सम्पादक पं० सत्यनारायण मिश्र अथर्ववेदाचार्य ने अपने पत्र के नवम्बर, दिसम्बर १९२६ के अंक में कान्यकुब्ज महती सभा के प्रस्ताव की चर्चा करते हुए इस प्रकार लिखा था :—

[१] "बड़ी-बड़ी सभाओं के मंचों से ब्राह्म०. जाति के इतिहास वेत्ताओं के श्री मुखों से यह मसला निर्विवाद हो चुका है कि सरयूपारीण, सनाढ्य, जुझौतिया, भूमिहार, पर्वतीय, बंगाली आदि सभी ब्रा. का. कु. ब्रा. है। यह प्रश्न उठता है कि इनका सामुदायिक संगठन कैसे हो सकता है। हमारे पाठक

अभी भूले न होंगे कि प्रयाग में सम्पन्न गत प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन के सुअवसर पर श्री वेंकटेश नारायण तिवारी द्वारा प्रस्तावित तथा श्री शिवरत्न शुक्ल और श्री गु० दयाल अवस्थी द्वारा अनुमोदित इसी आशय का एक प्रस्ताव पास किया गया था।" कान्यकुब्ज हितकारी, नवम्बर १६२६ पृष्ठ २३८)

[२] "..................श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा को अपने प्रयाग अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार सभी फिर्के के ब्राह्मणों को आमंत्रित करना चाहिए अर्थात् सरयूपारीण सनाढ्य, बंगाली, भूमिहार आदि सभी ब्राह्मण उस अधिवेशन के अवसर पर बुलाये जायें।" "कान्यकुब्ज हितकारी, दिसम्बर, पृष्ठ—२६६)

कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रयाग और लखनऊ अधिवेशनों में एकता के लिये किये गये प्रस्ताव पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए अ० भा०, भूमिहार ब्राह्मण महासभा ने १६२६ में मुंगेर में डा० सर गणेशदत्त सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न अधिवेशन (जिसके स्वागताध्यक्ष डा० श्री कृष्ण सिंह थे) में अपना छठा प्रस्ताव इस प्रकार पारित किया था :—"यह जानकर कि इधर दो तीन वर्षों के कान्य कुब्ज प्रतिनिधि सभा ने अपने प्रयाग और लखनऊ के अधिवेशनों में अन्यान्य ब्राह्मणों के साथ भूमिहार ब्राह्मणों को अपना अंग घोषित करते हुए एकता के लिये प्रस्ताव द्वारा केवल हाथ ही नहीं बढ़ाया है, किन्तु इस विचार को कार्यरूप देने के लिए प्रभावशाली सज्जनों की एक कमिटी बनायी है और यह जानकर कि अभी गत दिसम्बर में दिल्ली में सम्पन्न अ० भा० सारस्वत ब्राह्मण महासभा की स्वागत कारिणी ने दो भूमिहार ब्राह्मणों को सदस्य भी बनाया और द्विजराज काशीराज को अपनी सभा का संरक्षक नियुक्त किया था, यह सभा प्रसन्नता प्रकट करती हुई अपने उन कान्यकुब्ज ब्राह्मण भाइयों तथा सारस्वत भाइयों एवं उनकी सभाओं तथा संचालकों के प्रति धन्यवाद देती है और आशा करती है कि जिस एकता के लिए उन्होंने हाथ बढ़ाया है वह भविष्य में शीघ्र ही स्थापित हो जायगी। भूमिहार ब्राह्मणसमाज से भी अनुरोध करती है इन भाइयों के इस पवित्र कार्य का उत्तर यह समाज भी इसी प्रकार क्रिया रूप में दे और परस्पर की सभाओं में कम-से-कम आना-जाना तो जरूर जारी कर दें।"[२३]

२३—लोक संग्रह, चैत्र शुक्ल २ संवत् १६८६, पृष्ठ ५

इसके अतिरिक्त दोनों ब्राह्मणों की एकता के सम्बन्ध में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, सरहेनरी इलियट, पं० वेंकटेश ना० तिवारी तथा डा० राजेन्द्र लाल मिश्र आदि के विचार पृष्ठ २७ तथा २८ पर देखें।

भूमिहार ब्राह्मण--सरयूपारीण ब्राह्मण

जिस प्रकार कान्यकुब्ज ब्राह्मण के एक भेद भूमिहार ब्राह्मण हैं उसी प्रकार एक भेद सरयूपारीण ब्राह्मण हैं। इन सरयूपारीण ब्राह्मणों के भी बहुत से वंश भूमिहार ब्राह्मणों में मिले हुए हैं। पिपरा के मिश्र पं० श्री कृष्ण मिश्र के मिले हुए वंश के लिए पृष्ठ २५ पर देखें।

भरसी के मिश्र पं० हरिनाथ मिश्र के दो पुत्र थे—[१] श्री देवांग मिश्र और [२] श्री देवशरण मिश्र। प्रथम पुत्र के वंशज कोल्ह प्रगना में बसने के कारण कोल्हा मूल के भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं, जिनमें काशी राज्य के भू० पू० मुख्य सचिव कर्नल बिन्देश्वरी प्र० सिंह आदि हैं। द्वितीय पुत्र के वंशज उनके पुरोहित हैं और वे सरयूपारी० ब्राह्मण कहलाते हैं।

मूल की एकता : मामखोर के शुक्ल, हस्तगामे के पांडेय, नैनीजोर के तिवारी, हीरापुरी पांडेय, घोरनार के तिवारी आदि दोनों के मूल एक हैं।

गर्ग गोत्रीय मामखोर के शुक्ल वैशाली जिले के नितरा, जलालपुर आदि में भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं, जिनमें प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री योगेन्द्र शुक्ल तथा श्री बैकुन्ठ शुक्ल (जिन्हें फांसी दी गयी) का नाम उल्लेखनीय है। अन्यत्र कहीं-कहीं गर्ग गोत्रीय मामखोर के शुक्ल सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं।

हस्तगामे के पांडेय समस्तीपुर जिले के खैरी तथा मधुबनी जिले के हनुमान नगर, दहिवत आदि ग्रामों में भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं। भोजपुर तथा बलिया जिले में कहीं सरयूपारीण ब्राह्मण और कहीं भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं।

नैनीजोर के तिवारी छपरा जिले के रसुलपुर, बलिया जिले के नैनीजोर, समस्तीपुर जिले के जगतसिंहपुर तथा वैशाली जिले में भूमिहार ब्राह्मण

तथा राज्य के अन्य भागों में कहीं-कहीं सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं। प्रयाग जिले के बरांव तथा वीरपुर के राजा साहब तथा अन्य हीरापुरी पांडेय मूल के ब्राह्मण भूमिहार ब्राह्मण तथा उसी जिले में कुछ हीरापुरी पांडेय सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं।

घोरनार के तिवारी भी कहीं भूमिहार ब्राह्मण और कहीं सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं। गोरखपुर जिले के करमी, दशोवल आदि में तथा बस्ती जिले के बुधा और सरैया में भूमिहार ब्राह्मण तथा बस्ती जिले के उमिले और कांट आदि में सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं।

उपाधि की एकता : मिश्र, शुक्ल, पांडेय, द्विवेदी, दूबे, त्रिवेदी, तिवारी, चतुर्वेदी–चौबे, पाठक, उपाध्याय, ओझा, सिंह आदि उपाधियाँ दोनों ब्राह्मणों में समान हैं।

वैवाहिक एकता :– राजा धीरेन्द्र ना० राय भू० ब्रा० (लालगोला, मुर्शिदावाद) की द्वितीय पुत्री की शादी श्री सुरेशचन्द्र पांडेय स. ब्रा. से तथा तृतीय पुत्री की शादी महिषादल (बंगाल) के राजकुमार शक्ति प्र० गर्ग स० ब्रा० से है। पाकुड़ के राजा कालिका प्र० पांडेय स० ब्रा० जिनकी पत्नी रानी ज्योतिर्मयी देवी बिहार की मंत्रिणी रह चुकी थीं) के सम्बन्धी कलकत्ता के डा० शिवप्रसन्न मिश्र (स० ब्रा०) एम० बी० एफ० आर० सी० ओ० जी० (लन्दन) एम० आर० सी पी० (लंदन). एम० आर० सी० एस० (इंगलैंड) की पुत्री की शादी सिंहावाद, मालदह निवासी श्री बृजेन्द्र ना० राय भू० ब्रा० के पुत्र श्री विश्वनाथ राय से तथा डा० शिवप्रसन्न मिश्र के बड़े पुत्र श्री समरेन्द्र मिश्र की शादी पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह भू० ब्रा० (भू० पू० राजदूत एवं राज्यपाल) सुरसंड, सीतामढ़ी की पुत्री से है। कलकत्ता के श्री मदन मोहन पांडेय स० ब्रा० के एक पौत्र श्री समशेर पांडेय की शादी जमुआ, मुर्शिदावाद के श्री बृजेन्द्र ना० राय भू० ब्रा० की पुत्री से तथा एक पौत्र श्री अजित कुमार पांडेय की शादी वाजितपुर, समस्तीपुर के श्री सुरेश त्रिवेदी स० ब्रा० की बहन से है। श्री अमरेन्द्र ना० राय भू० ब्रा० बुलबुल चंडी, मालदह की पुत्री की शादी बहरा, मुर्शिदावाद के श्री वंशी बदन त्रिवेदी स० ब्रा० से है।

खासबोन, मालदह के श्री सतीशचन्द्र पांडेय स० ब्रा० की पुत्री की शादी सोनवरसा, सहरसा के श्री ब्रजनन्दन कुमर भू० ब्रा० से है। अलीपुर, मुर्शिदाबाद के श्री शशिभूषण राय भू० ब्रा० की शादी हरग्राम जिला राजशाही निवासी गर्गगोत्रीय श्री सोमेश्वर राय शुक्ल स० ब्रा० के यहाँ है। राजा भैरवेन्द्र ना० राय भू० ब्रा० सिंहाबाद, मालदह की बहन की शादी राजशाही जिले के हरग्राम निवासी श्री रामचन्द्र राय शुक्ल स० ब्रा० से है। मेदिनीपुर जिले के बढोतरी हिंगुनी निवासी श्री राम प्रसाद मिश्र सरयूपारीण ब्राह्मण की बहन की शादी कजिया खाली, हबड़ा निवासी श्री पंचानन तिवारी भू० ब्रा० से है। कंजिया खाली, हबड़ा निवासी श्री प्रबोधचन्द्र तिवारी भू० ब्र० की पुत्री की शादी चन्द्रकोना रोड, मेदिनीपुर निवासी श्री ताराचन्द पांडेय स० ब्रा० से है।

देवरीकला, प्रयाग के पं० राधिकाशरण पांडेय भू० ब्रा० के पौत्र और केरवां, प्रयाग के पं० लखपति तिवारी स० ब्रा० के पुत्र की शादी भूमिहार ब्राह्मण परिवार में सगी बहनों से है। श्री गोकर्णनाथ शुक्ल स० ब्रा० सिसवा, जिला बस्ती की फूआ की शादी उतरावल, बरबीरा के श्री रामलाल पांडेय भू० ब्रा० के यहाँ है। सिद्दरी खुर्द बस्ती के श्री कपिलदेव शुक्ल तथा श्री शिवपूजन शुक्ल स० ब्र० की फूआ की शादी भी भू० ब्रा० परिवारों में है। (यहाँ मात्र कुछ सम्बन्धों का विवरण ही दिया गया है।)

पं० सन्त प्रसाद शर्मा बैकुंठपुर, वैशाली द्वारा लिखित 'सरयूपारीण' संहिता (१९२७ में प्रकाशित) में भू० ब्रा० और स० ब्रा० के वैवाहिक सम्बन्धों में बस्ती जिले के ११६, फैजाबाद के १७५, गोंडा के २१, सुलतानपुर के १२, गोरखपुर के ५ प्रयाग के ८ मिर्जापुर के १८, रीवां के २ और प्रतापगढ़ के २ का विवरण उल्लिखित है।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती लिखित 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर' तथा पं० जयनारायण शर्मा लिखित 'दशविध ब्राह्मण संहिता' तथा चौधरी राजनारायण शर्मा लिखित ब्रह्मर्षिवंश में भी दोनों ब्राह्मणों के वैवाहिक सम्बन्धों का उल्लेख है।

भू० ब्रा० और सरयूपारीण ब्राह्मणों की एकता के सम्बन्ध में विद्वानों के विचार :—

सरयूपारीण ब्राह्मण सभा द्वारा संस्थापित भदैनी (वाराणसी) सं० पाठशाला के भू० पू० अध्यापक पं० विजयानन्द त्रिपाठी स० ब्रा० (जिनकी जन्म शताब्दी समारोह ५ से १३ फरवरी १९८० तक, विजयानन्द सेवा समिति द्वारा मनायी गयी) ने अपने 'पंक्ति पावन परिचय, (सरयूपारीण ब्राह्मणों का इतिहास) में सरयूपारीण ब्राह्मणों में प्रथम नाम तत्कालीन काशीनरेश महाराजाधिराज द्विजराज सर प्रभु ना० सिंह भू० ब्रा० का तब श्री हरिनाथ मिश्र, श्री सुधाकर द्विवेदी स० ब्रा० आदि का नाम गिनाया है।

जौनपुर जिले के रामपुर निवासी पं० शिवराज मिश्र स० ब्रा० कृत तथा उन्हीं के वंशज पं० ताराचन्द्र मिश्र द्वारा १९०० ई० में प्रकाशित 'गौतम चन्द्रिका' में स्पष्ट रूप से भूमिहार ब्राह्मण में मिले हुए गौतम गोत्रीय काशी नरेश तथा अन्य को सरयूपारीण ब्रा० और पिपरा का मिश्र लिखा है। 'सरयूपारीण सर्वस्व' में भी इसी प्रकार का उल्लेख है।

१४वीं सरयूपारीण महासभा कटनी (म० प्र०) के सभापति श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय ने वैवाहिक सत्ता को स्वीकार करते हुए कहा था :— बहुत से सरयूपारीण कान्यकुब्जों और भूमिहारों को अपने ही समाज का समझ उनसे विवाह सम्बन्ध करते हैं।"

सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावतंश प्रो० राजनाथ पांडेय (अप स्व०) के अनुसार "प्रतापगढ़ के प्रसिद्ध पं मुनीश्वर दत्त उपाध्याय स० ब्रा० के अनेकों वैवाहिक सम्बन्ध भूमिहार ब्राह्मण परिवारों में हैं तथा इलाहाबाद जिले के बारा तहसील में सरयूपारीण और भूमिहार ब्राह्मणों में उन्मुक्त वैवाहिक सम्बन्ध सदा से होते चले आ रहे हैं।"

पं० कुलदीप ना० राय 'झड़प' ('गोस्वामी तुलसीदास' के पृष्ठ ३२० के अनुसार) :—बलिया–आरा मंडल में पराशर गोत्र के हस्तग्रामे के पांडेय यत्र तत्र मिलते हैं, जिनमें भूमिहार और सरयूपारीण दोनों सम्मिलित हैं।"

पं० सन्त ८० शर्मा (१९२६ में प्रकाशित 'सरयूपारीण संहिता' के पृष्ठ २६ के अनुसार) :-' घोरनार के तिवारी बस्ती जिले के पैली, चमरसन, तेनुहारी गांवों में रहते हैं। ये गाँव खलीलाबाद से पश्चिम हैं। यहाँ यह अच्छी तरह प्रसिद्ध है कि इन्हीं घोरनरिया तिवारी के भाई गोरखपुर के

करौं, यशोवल और सिन्दगा में रहते हैं और अपने को भूमिहार ब्राह्मण कहने लगे हैं। इसके सिवा पैली चमरसन के निकट ही बुधा, सरैया, उमले और कांट इन चारों गांवों में भी तिवारी लोग ही रहते हैं। ये गांव खलीलाबाद से तीन कोस पश्चिम है। इसके बारे में यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है कि "बुधा, सरैया, उमिले, कांट, इन चारों के एके वांट। "अर्थात् चारों गांव के ब्राह्मण एक ही वंश के हैं। मगर थोड़े दिनों से स्थिति यह है कि बुधा, सरैया इन दो गांवों वाले अपने को भूमिहार और उमिले, कांट इन दो गांवों वाले अपने को सरयूपारीण कहते हैं।

काशी नगरी प्रचारिणी सभा के महामंत्री तथा तत्कालीन सांसद पं० सुधाकर पांडेय स० ब्रा० ने दिनांक १४-७-८० का काशी नागरी नाटक मंडली के सभा भवन में बाबा भूतनाथ की अध्यक्षता में सम्पन्न उत्तर प्रदेश भूमिहार ब्राह्मण समाज के अधिवेशन में उपस्थित होकर तथा भाषण देकर परस्पर का सहयोग और एकत्व भाव को बढ़ाया।

भूमिहार ब्राह्मण जुझौतिया ब्राह्मण

भूमिहार ब्राह्मण की तरह जुझौतिया ब्राह्मण भी कान्यकुब्ज ब्राह्मण की शाखा हैं।

स्वनाम धन्य दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के पूर्वज बुन्देलखंड (जिसका एक भाग जिझौती कहलाता है) से आकर गाजीपुर जिले में बस गये थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि मेरा वंश जुझौतिया ब्राह्मणों का है।" अब इस वंश के लोग जुझौतिया मूल के भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं।

पं० गोरेलाल तिवारी लिखित 'जुझौतिया ब्राह्मणों के इतिहास की रूप रेखा' के अनुसार—"राजामान सिंह ने पं० सच्चिदानन्द को बंगाल में पलासी और फतेहपुर प्रगनों की जागीर दी थी। उनकी वंश परम्परा के लोग वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा भूमिहार ब्राह्मणों से मिल गये हैं।"

जमुआ, मुर्शिदाबाद के श्री शरदिन्दु ना० राय भूमिहार ब्राह्मण की बहन की शादी रिपन कालेज के भू० पू० प्रधानाचार्य श्री रमेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी जुझौतिया ब्राह्मण से तथा राजा धीरेन्द्र ना० राय भूमिहार ब्राह्मण

भूमिहार ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण

ब्राह्मणों के देशपरक दो भेदों में एक गौड़ और गौड़ के पांच भेदों में एक खास गौड़ है तथा अन्य भेदों में एक कान्यकुब्ज के भेद भूमिहार ब्राह्मण हैं।

शुक्ल, दीक्षित, पाठक, तिवारी, चौबे, सिंह, चौधरी मिश्र आदि उपाधियाँ दोनों ब्राह्मणों में समान हैं।

जानकी स्थान सीतामढ़ी के भू० पू० महन्त सियाराम दास (जिनके पिता बलिया जिले के करसर से आकर मुजफ्फरपुर जिले के नेकनामपुर में बसे थे और करेश मूल के कौशिक गोत्रीय भू० ब्रा० थे) की शादी भोजपुर जिले के मिसरौलिया में भारद्वाज गोत्रीय गौड़ ब्राह्मण परिवार में थी। इन्हीं महंत जी के पुत्र वर्तमान महंत श्री रघुनाथ दास की पुत्री को शादी केंद्रीय राज्य मंत्री श्री ललितेश्वर प्र० शाही के पुत्र से है तथा एक पुत्री श्रीमती नीलम की शादी कठौता गोपालगंज (वाराणसी) निवासी श्री शशधर मिश्र गौड़ ब्रा० के पुत्र श्री रत्नेश मिश्र से हुई है। भू० पू० सांसद श्री कमला मिश्र 'मधुकर' भू० ब्रा० मदन सिरसिया (चम्पारण) तथा श्रीमती कामना मिश्र, प्रधानाध्यापिका बालिका उच्च विद्यालय, पूसा की पुत्री डा० श्रीमती नीलिमा की शादी मथुरा जिले के नौझील निवासी पं० गौरीशंकर पाठक गौड़ ब्राह्मण के पुत्र डा० अनिल कुमार पाठक से १४-१२-८५ को हुई है। भू० पू० केन्द्रीय मंत्री तथा भू० पू० महामंत्री अ० भा० कांग्रेस श्री नवल किशोर शर्मा गौड़ ब्रा० (राजस्थान) की पुत्री की शादी गोविन्दपुर (गया) निवासी श्री शर्मानन्द शर्मा भू० ब्रा० (अध्यक्ष डायमंड कार्पोरेशन) के पुत्र से है। उत्तर प्रदेश के श्री अक्षयवट सिंह भू० ब्रा० की पुत्री की शादी चंडीगढ़ के वरिष्ट अधिवक्ता श्री उमादत्त गौड़ से है।

गौड़ ब्राह्मणों के सम्बन्ध सरयूपारीण और त्यागी ब्राह्मणों के साथ भी होते हैं तथा भूमिहार ब्राह्मणों के सम्बन्ध भी सरयूपारीण तथा त्यागी ब्राह्मणों से होते है। इस प्रकार भी दोनों मिले हुए हैं।

ब्राह्मण निर्णय के लेखक पं० छोटेलाल शर्मा गौड़ तथा 'ब्राह्मण कुलदीपक' के लेखक पं० गंगा सहाय गौड़ ब्राह्मण ने अपनी पुस्तकों में एकत्व भावना का प्रदर्शन किया है।

भूमिहार ब्राह्मण—पर्वतीय ब्राह्मण

कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा (१९२६ तथा १९२७) ने भूमिहार ब्राह्मणों के साथ ही पर्वतीय ब्राह्मणों को भी अपना अंग घोषित किया था। इसलिए दोनों उसकी ही शाखा हुए। पर्वतीय ब्राह्मण के एक भेद गढ़वाली ब्राह्मण स्व० पं० गोविन्द वल्लभ पन्त आदि से तो भूमिहार ब्राह्मणों का सम्पर्क था ही। अब लोकदल के पूर्व अध्यक्ष स्व० हेमवती नन्दन बहुगुणा के पुत्र की शादी उजियार (बलिया) के स्व० श्री भोला राय (जिन्होंने १८९६ ई० में कलकत्ता वि० व० से बी० ए० किया था और उत्तर प्रदेश के भू० ब्रा० में प्रथम स्नातक थे) के पौत्र श्री ब्रह्मदेव राय, उप समहर्त्ता (गोराबाजार, गाजीपुर) की पुत्री से है। श्री बहुगुणा की पुत्री की शादी भोजपुर (बलिया) निवासी श्री रामाधार पांडेय भू० ब्रा० के पुत्र से है।

भूमिहार ब्राह्मण—त्यागी ब्राह्मण

भूमिहार ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण की शाखा कान्यकुब्ज ब्राह्मण के एक भेद हैं तथा त्यागी ब्राह्मण गौड़ ब्रा. खास के एक भेद हैं। दोनों अप्रतिग्राहक ब्राह्मण हैं। दोनों का सम्बन्ध जमीन, जमींदारी और शासन से रहा है। अनेक रियासतों के अधिपति दोनों रहे हैं। दोनों की बहुत सी बातें समान हैं। दूर निवास के कारण सर्व साधारण के परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध नहीं है, पर कुछ सम्पन्न लोगों के वैवाहिक सम्बन्ध हुए हैं।

घोसवरी, पटना के श्री नरसिंह ना० सिंह भू० ब्रा० के भतीजे की शादी असौड़ा, [24]मेरठ के प्रसिद्ध ताल्लुकेदार श्री चौधरी रघुवीर ना० सिंह

२४—श्री शिव कुमार गोयल ने पाक्षिक हिन्दुस्तान २१-१-७९ के पृष्ठ ५१ पर 'मंहगायी के बीच झूलते ये तीज त्योहार' शीर्षक लेख में असौड़ा का प्रसंग आने पर उसमें चौधरी रघुवीर को काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज विभूति ना० सिंह भू० ब्रा० के सम्बन्धी के रूप में उल्लिखित किया है।

त्यागी ब्राह्मण की पौत्री से हुई थी। अमावा-टिकारी नरेश राजा हरिहर प्र० ना० सिंह (अब स्व०) तथा राजा महेश्वरी प्र० ना० देव भू० ब्रा० (राजधनवार, गिरिडीह) की पुत्रियों की शादी त्यागी ब्राह्मण परिवारों में है। पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह (भू० पू० राजदूत एवं राज्यपाल) सुरसंड, सीतामढ़ी की पुत्री श्रीमती प्रतिभा सिंह वर्तमान संसद सदस्या तथा भू० पू० विधायिका की शादी स्योहारा, बिजनौर के कुमार प्रेमराज सिंह (अब स्वर्गीय) से है। रतवारा ड्योढ़ी (मुजफ्फरपुर) के श्री बसन्त ना० सिंह, भू० ब्रा० की पुत्री श्रीमती अरुणा कुमारी की शादी नेवारी, मेरठ निवासी चौधरी सुरेन्द्रपाल सिंह त्यागी ब्राह्मण के पुत्र श्री अशोक त्यागी से हुई है। रा० ब० महेश्वर प्र० ना० सिंह, भू० ब्रा०, बीर सिंहपुर, समस्तीपुर की पौत्री की शादी बैरा फिरोजपुर बुलन्द शहर निवासी श्री पी० एस० नटराजन आई० पी० एस० त्यागी ब्राह्मण (पुलिस अधीक्षक, कटिहार) के साथ है। कोटवा नारायणपुर निवासी श्री ब्रह्मदेव राय भू० ब्रा० की पौत्री तथा श्री रामजी राय की पुत्री साधना की शादी श्री ओम प्रकाश त्यागी (बिजनौर) के पुत्र प्रदीप त्यागी के साथ २६-४-८६ को हुई है।

१६२६ में पटना में सम्पन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता चौधरी रघुवीर ना० सिंह त्यागी ब्रा० ने तथा त्यागी ब्रा० सभा की अध्यक्षता रा० ब० जगदेव राय, भू० ब्रा० (गाजीपुर) ने की थी। १६७० में गया में सम्पन्न अ० भा० अयाचक ब्राह्मणों (भूमिहार, त्यागी, महियाल, चित्पावन आदि की सभा) की अध्यक्षता भू० पू० सुरक्षा मंत्री श्री महावीर त्यागी ने की थी।

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के भू० पू० अध्यक्ष तथा भू० पू० वन मंत्री पं० अलगू राय शास्त्री भू० ब्रा० (अमिला, आजमगढ़) के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय जेल में रहते समय का वर्णन करते हुए 'कबूतरी का दूध' नामक अपनी पुस्तक में भू० पू० प्रतिरक्षा मंत्री श्री महावीर त्यागी (रतनगढ़, बिजनौर) ने भूमिहार और त्यागी का जिक्र करते हुए दोनों ब्राह्मणों को एक बताते हुए एकता प्रदर्शित की है।

पं० ब्रह्मदत्त दीक्षित, डा० एस० पी० दुबे, पं० शुकदेव शर्मा कर्मकांडी, पं० जयनारायण शर्मा, गोविन्द ना० चौधरी, हरिनारायण मिश्र, शर्मानन्द शर्मा, नवल किशोर शर्मा, पं० सोमदत्त शास्त्री, पं० मंगलदेव भारद्वाज, चौधरी राजनारायण शर्मा, डा० रामकरण शर्मा, प्रो० रामचन्द्र शर्मा, पं० जीवनाथ झा, पं० शीलभद्र साहित्य रत्न, पं० कपिलेश्वर मिश्र, श्री रामनरेश शर्मा, श्री चन्द्रकेतु नारायण शर्मा अधिवक्ता आदि ।

मूल

मूल पूर्वजों के उस आदिम स्थान का नाम है, जहाँ प्रथम निवास किया था। मूल को ही डीह, गढ़, स्थान, ग्राम आदि कहते हैं। मूल का व्यवहार प्रायः ब्राह्मणों में ही होता है।

मुस्लिम शासन काल में धर्म रक्षार्थ ब्राह्मणों ने छोटे-छोटे दल बनाये। उसी समय प्रत्येक ब्राह्मण दल के साथ मूल कहने का प्रचलन हुआ। जहाँ कुछ परिवारों ने उत्कर्ष प्राप्त किया और उस स्थान की भी प्रसिद्धि हुई। वहाँ से किसी कारण दूसरे स्थान पर गये तो मूल ग्राम द्वारा अभिहित होने लगे।

भूमिहार ब्राह्मण मूल का व्यवहार सीधे मूल ग्राम का नाम कहकर तथा मैथिल ब्राह्मणों की तरह मूल के साथ उपमूल का व्यवहार भी करते हैं। उपमूल वह हुआ जहाँ प्रथम स्थान से दूसरे स्थान पर आकर फिर अन्यत्र निवास किया। दूसरा स्थान ही उपमूल कहलाया। कुछ मूल के साथ भूमिहार ब्राह्मण कान्यकुब्ज और सरयूपारीण ब्राह्मण की तरह मूल ग्राम के साथ उस समय की उपाधि का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग सिर्फ गोत्र और वेद का ही व्यवहार करते हैं।

भूमिहार ब्राह्मणों के मूल प्रायः ये हैं :—

एकसरिया, सहदौलिया, मैसूरिया (महिसौरिया), सुरगणे, हस्तगामे के पांडेय, ओइनवार, द्रोणवार, भट्टाणे, हरिअम्बे (हरिआमे), करमहे, जैथरिया, बघनडीहा, भूपाली, तटीहा, मनेरिया, कस्तूवार, कोल्हा, मुजौनिया, आरे, अरैल, गोआइत, भेलौरिया, हिलसरिया, वररमिया, सभ्रवारे, चकवार,

भूमिहार ब्राह्मण समाज

सोनैतवार, निकुतवार, जलेवार, कोदरिये, कैथरे, भुसवरे, नरवरिया, अलेवार, कोदरिये, कैवरे, भुसवरे, नरवरिया, सिहोमिया, भोलरैत, जठरवार, नोनहुलिया, चणकिया, सुगनिया, बढाने, सिहोमिया, भोलरैत, जठरवार, सोनहुलिया, चणकिया, शमसेरिया, कटेवार, ठेहुनपलिया, शकरवार, शवरैत, कुदनिया, थिरियार, शमसेरिया, कटेवार, ठेहुनपलिया, शकरवार, शवरैत, कुदनिया, बलियाके, सरसरिया, करमौतिया, कोथवैत, कटेश, सरवरिया, बलियाके, सरसरिया, करमौतिया, कोथवैत, कटेश, सरवरिया, मौआर, बानरे, कुमौतिया, सलहेरिया, मलवरिया, वेलहरिया, दधिअरे, मौआर, बानरे, कुमौतिया, सलहेरिया, मलवरिया, बेलहरिया, दधिअरे, भड्डकरजिया, सह-बाजी, चकसेरिया, चेरियार, सरसैत, सिरसिमैत, रादी, भड्डकरजिया, सह-बाजी, चकसेरिया, चेरियार, सरसैत, सिरसियैत, राढी, भट्टकरजिया, सहबाजी, चकसेरिया, नेरियार, सरसैत, सिरसियैत, राढ़ी, भट्टकरजिया, सहबाजी, दोमटिकार, पिलख-शीरिया, कांचनवार, सनैवार, अरापे, वेमुआर, मालवे, दोमटिकार, पिलखवार, पिलखिदैत, भुवार, परहापे, मनछिया, सोनपकरिया, सोनभदरिया, कोठहा, लदौरे, भोचरिये, मोहवरिया, बगौछिया, दुधनैत, ब्रह्मपुरिये, सहुआमे, वेलसूहया, अनरिये, धौलानी, कुसौंभिया, कुजिलवार, शिवरैया, गंभरिया, वसमैत, विजलपुरिया, दंशवार, भिठवार, केशरवानी, मनकौलिया, अहराइच, अइलवार, कोरांचे, मलितवार, कुमितवार, करणावती, पंचभैया, बेलपुआर, नरवने, दिघवे-दिघवे सन्दहपुर, मरेमंगरौनी, बेलौंचे सुदई, बसहे पोखराम, सुरौरे कांटी, पंचोभेपक्षपुर, फतुहावादी मिश्र, नैनीजोर के तिवारी, दोमखवार ठाकुर, डुमरा के ओझा (डुमरैत), मामखोर के शुक्ल, रमैया पांडेय, त्रिफला पांडेय, मचैया पांडेय, रतनवो के दुबे, हीरापुरी पांडेय, क्यूना के दीक्षित (किनवार), मनोहिया के शुक्ल (मनोहिया), वरुआ के तिवारी (वरुआर), भदैनी चौधरी, खड्गधारी, गौतमिया, गंगटिकैत, कौशिक, अथर्व-वेदी, असवरिया, इनरवार, सवर्णियां, वसौतिया, दुवौलिया, दात्यायन, घोरनार के तिवारी आदि।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर निवास करने पर कभी-कभी मूल भी बदल जाता है, जैसे भरसी के मिश्र मूल ग्राम के श्री देवांग मिश्र जब कोल्ह प्रगना में बसे तो उनके वंशजों का मूल कोल्हा हो गया, जिनमें काशी राज्य के भू० पू० मुख्य सचिव कर्नल बिन्देश्वरी प्र० सिंह आदि रहे हैं। बेलौंचे सुदई मूल के पं० चिरायु मिश्र जब चाक (मुंगेर) में बसे तो उनके वंशजों का मूल चकवार हो गया। खोआल मूल वाले जब ओइनी (वैनी), समस्तीपुर में बसे तो उनके वंशजों का मूल ओइनवार हो गया।

कुछ लोग मूल को गलत ढंग से कहकर उसे भ्रामक बना देते हैं। जैसे कुदनिया को कुंदहवनियां और शकरवार को शिकरीवार कहकर।

कुदनिया और शकराडीह एक स्थान है, जिसके नाम पर कुदनिया और शकरवार मूल का नाम है।

गोत्र

गोत्र के कई अर्थ होते हैं, पर यहाँ गोत्र वंश (कुल) के अर्थ में आया है। वैयाकरण पाणिनी ने भी पौत्र प्रभृति को गोत्र कहा है—"पौत्र प्रभृति गोत्रम्"। संस्कृत 'अमरकोष' के ब्राह्मण वर्ग के प्रथम श्लोक में संतति को संगोत्र का पर्याय माना है– 'संततिगोत्र जनन कुलान्यभिजनान्वयौ। वंशोऽन्ववायः सन्तानोवर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः॥ १॥" हिन्दी विश्व कोष के अनुसार गोत्र के अर्थ हैं सन्तति तथा गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

श्री शरत्चन्द्र पेढ़ारकर (कादम्बिनी जुलाई १६८६) के अनुसार:— "प्राचीनकाल में बालकों को पढ़ाने के लिए गुरु आश्रम में भेजा जाता था। अध्यापक ऋषि गोत्र ऋषि होते थे, उनका गोत्र शिष्य को मिलता था। बाद में अध्यापन कार्य पिता की ओर हो जाने से उसका गोत्र पिता का गोत्र होने लगा और इससे यह कुल का द्योतक हो गया।"

ऋषियों के वंश का विस्तार हुआ। गोत्र प्रवर्तक ऋषि तपस्वी और मेधावी थे। जिस ब्राह्मण के जो ऋषि गोत्र हैं, उसी ऋषि वंश में उनकी उत्पत्ति मानी जाती है। ब्राह्मणेतर जातियों के गोत्र उनके पुरोहित के गोत्र से स्थिर हुआ—जो पुरोहित का गोत्र था वही यजमान का गोत्र हुआ।

गोद (दत्तक) लेने वाले का गोत्र बदल जाता है। लड़की का विवाह के बाद गोत्र पतिवाला हो जाता है।

एक-एक गोत्र में अनेकों मूल के ब्राह्मण हैं। गोत्र की उपयोगिता के सम्बन्ध में विदेशी विद्वान मैक्स मूलर का कहना है—'ब्राह्मणों को अपने गोत्र का ज्ञान होना चाहिये। यज्ञ काल में उन्हें गोत्र प्रवर्तक ऋषियों का वरण करना होता है। प्रत्येक गोत्र के ब्राह्मण को पृथक-पृथक अपने ऋषियों का नाम स्मरण रखना होता है।"

भूमिहार ब्राह्मण समाज

प्रधान गोत्र प्रवर्तक ऋषि आठ हैं :—

"विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः। अत्रिर्वशिष्ठः कश्यपः इत्येते सप्तर्षयः ॥ सप्तानां ऋषिणां अगस्त्यष्टमानां यदपत्यं तद्गोत्रमुच्यते ॥"

विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप और अगस्त्य ये आठ गोत्र प्रवर्तक ऋषि हैं। इन्हीं आठ ऋषियों की सन्तान जिन्होंने ऋषित्व लाभ किया, गोत्र हुए। इसके अतिरिक्त भृगु और अंगिरा के गोत्र वाले भी हैं, जिनके नाम से गोत्र व्यवहार होता है। इस प्रकार मूल में दश ऋषि (मंत्रद्रष्टा) आ गये। इन ऋषियों की वंश परम्परा में जितने ऋषि हुए—वे गोत्र कहलाते हैं। गोत्रों की संख्या बहुत है। कुछ प्रसिद्ध गोत्र ये हैं :—

कश्यप, काश्यप, भरद्वाज, गौतम, शांडिल्य, वत्स, जमदग्नि, वशिष्ठ, अगस्त्य, अत्रि, कौशिक, भृगु, भार्गव, पराशर, गर्ग, आंगिरस, संकृति, कात्यायन, कण्व, कपिल, कौण्डिन्य, विष्णुवृद्ध, कौत्स, मुद्गल, उद्दालक, मौनस, लौगाक्षी, सावर्ण्य, हारीत, उपमन्यु, वामदेव, कृष्णात्रय, चन्द्रायण, वात्स्यायन आदि।

इन गोत्रों में छः गोत्र—कश्यप, काश्यप, वत्स, शांडिल्य, धनंजय और कौशिक सामवेदी और शेष यजुर्वेदी हैं :—

"कश्यपौवत्स शांडिल्यौ कौशिकश्च धनंजयः।
षड्ते सामगाः बिप्राः शेषाः वाजसनेयिनः ॥

कान्यकुब्ज बंशावली के अनुसार पांच ही सामवेदी हैं कौशिक नहीं—

"कश्यपः काश्यपो वत्स शांडिल्यश्च धनंजयः।
पंचैते साम गायन्ति यजुरध्यायिनोऽपरे ॥"

कुछ प्रमुख गोत्रों के भूमिहार ब्राह्मण मूल के अनुसार इस प्रकार है—

कश्यप-काश्यप :- सहस्त्रामे, जैथरिया, मनेरिया, कुदनिया, नोनहुलिया, मोदवरिया, भेजौरिया, जुझौतिया, करेमुआ, बलियावे, शकरैत, सिरसियैत, ओइनवार, दंशीवाल, तटीहा, कोल्हा, भूपाली, बवनडीहा, गोआर, धौतानी, शिरियार, मर्रे मंगगैनी, पंचरैया डुमरा के ओझा,

भूमिहार ब्राह्मण समाज

'त्यागी बन्धु' 'त्यागी ब्राह्मण' 'भूमिहार ब्राह्मण' आदि पत्रों ने भी एकत्व बढ़ाने में योगदान करते रहे। अब 'त्यागी ब्राह्मण समाज' भी एकता बढ़ाने में सक्रिय है।

भूमिहार ब्राह्मण—महियाल ब्राह्मण

महियाल ब्रा० सारस्वत ब्रा० की शाखा है तथा भू० ब्रा० की तरह वे भी अयाचक ब्रा० हैं। दोनों का जमीन सम्बन्धी नामकरण भी है। महिपाल नाम बिगड़कर महियाल हो गया है।

महियाल ब्राह्मण इतिहास में भूमिहार ब्राह्मणों को महियाल ब्राह्मण कहा गया है।

महियाल सभा ने पंजाब के तात्कालीन राज्यपाल सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह भू० ब्रा० को आमंत्रित कर २७-२-५३ को नई दिल्ली टाउन हॉल में पार्टी दी थी तथा अभिनन्दन किया था और उसमें उपस्थित होकर तथा भाषण देकर सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह ने एकत्व भाव का परिचय दिया था। जनरल महियाल सभा द्वारा २२-६-८६ को इन्द्रपुरी नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में श्री शीलभद्रयाजी, भू० पू० सांसद ने भी उपस्थित रहकर एकत्व भाव को बढ़ाया।

भाई मतिदास स्मारक समिति में श्री महेश प्र० सिंह, डा० रामधारी सिंह 'दिनकर', डा० रघुनाथ सिंह, श्री दिग्विजय ना० सिंह आदि भूमिहार ब्राह्मणों को रखकर भी एकत्व भाव को बढ़ाने का प्रयास महियाल ब्राह्मणों ने किया था। पं० अलगू राय शास्त्री भू० ब्रा० (उत्तर प्रदेश के भू० पू० वन मंत्री तथा तत्कालीन अध्यक्ष उ० प्र० कांग्रेस) ने भाई मतिदास स्मारक दिवस के उपलक्ष्य में एक सन्देश में एकत्व दिखलाते हुए इस प्रकार लिखा था :—

"भाई मतिदास और भाई परमानन्द ने कैसे कुल में जन्म लिया था किसे देश कभी भुला नहीं सकता। भाइयों का परिवार अपनी देश भक्ति और आत्म बलिदान के लिये ऐतिहासिक प्रेरणा देने वाला रहा है। इस जाति के भाइयों के परिवार ने लोकोत्तर सद्भावनामय जीवन को सदा से

प्रेरणा प्रदान की है। ब्राह्मण[२५] विशेष का यह वर्ग जो पूरे देश में अपने-अपने नामों से विख्यात है, इस भाई परिवार के कार्यों से अपने को गौरवान्वित मानता है।"

(भाई मति दास स्मारिका १९६६, पृष्ठ–१६)

स्व० देवता स्वरूप भाई परमानन्द के सुपुत्र डा० भाई महावीर संसद सदस्य की उपस्थिति में २६ जनवरी १९५३ को महियाल सभा के ४०वें अधिवेशन, अमृतसर ने अपने १०वें प्रस्ताव में भूमिहार और त्यागी ब्राह्मणों को अपना भाई बताकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रस्ताव भी पास किया था।

दूर निवास के कारण महियाल ब्राह्मणों के साथ विवाह सम्बन्ध न के बराबर है। किन्तु कुछ वर्ष पहले बड़हिया (मुंगेर) निवासी प्रसिद्ध अधिवक्ता एवं स्वतंत्रता सेनानी स्व० बाबू विश्वनाथ सिंह की पौत्री तथा पटना के आरक्षी महानिदेशक श्री ललित विजय सिंह भू० ब्रा० की बड़ी पुत्री श्रीमती अमृता विजय की शादी देहरादून (उत्तर प्रदेश) के निवासी श्री जगजीत कुमार दत्त आई० ए० एस० महियाल ब्राह्मण (कमिश्नर) के साथ हुई है।

स्व० भाई परमानन्द ने भू० ब्रा० महासभा में संदेश देकर तथा बख्शी अमर सिंह छिब्बर आदि ने गया की सभा में उपस्थित होकर और 'मुह्याल सेवक' 'भूमिहार ब्राह्मण' मोह्यालमित्रै आदि पत्र भी दोनों ब्राह्मणों की एकता बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे हैं।

भूमिहार ब्राह्मण—चित्पावन ब्राह्मण

भूमिहार और चित्पावन (क्षिति पावन) दोनों अयाचक ब्राह्मण हैं। जमीन और शासन से दोनों का संबन्ध रहा है। दूर निवास के कारण दोनों में वैवाहिक सम्बन्ध न के बराबर है, पर जक्खिनी (वाराणसी) निवासी श्री हरिशंकर शर्मा सम्पादक 'हिन्दी शिक्षक' बम्बई के पुत्र पुत्रियों की शादी चित्पावन ब्रा० परिवारों में है। १९१६ ई० में काशी हिन्दू वि. वि. में लोकमान्य तिलक (चित्पावन ब्रा०) ने कहा था—"कभी मरेश जिस वंश के है, उसी वंश का मैं भी हूँ।

२५—ब्राह्मण विशेष का यह वर्ग से शास्त्रीजी का अभिप्राय भूमिहार त्यागी, चित्पावन, महियाल, अनावले आदि अयाचक ब्राह्मण समुदाय से है।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

श्री एन० सी० केलकर, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, लोक नायक श्री हरिअणे ने भू० ब्रा० महासभा में एकत्व का संदेश देकर एकत्व भाव को दर्शाया था। १९४५ ई० में बेतिया में सम्पन्न अ० भा० भू० ब्रा० महासभा की अध्यक्षता डा० बी० एस० मुंजे, चित्पावन ब्रा० ने तथा नरौर (वाराणसी) में १९६८ ई० में सम्पन्न भूमिहार, त्यागी, महियाल और चित्पावन ब्राह्मणों की संयुक्त सभा की अध्यक्षता वाराणसी राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के भू० पू० प्राध्यापक पं० अनन्त शास्त्री फड़के पुराणाचार्य (चित्पावन ब्रा०) ने करके तथा अनेकों भू० ब्रा० सभाओं में उपस्थित रहकर तथा एकत्व सूचक भाषण देकर पत्रकार श्री रामचन्द्र नरहर बापट ने दोनों ब्राह्मणों की एकता को बढ़ाया है।

भूदान के क्रम में आचार्य विनोबा भावे (चित्पावन ब्रा०) मई १९५३ ई० में गया जिले का भ्रमण कर रहे थे और खनवाँ नामक गाँव में पहुँचे तो उनके कार्यकर्त्ताओं ने शिकायत की कि "यह भू० ब्रा० का गाँव है, ये स्वयं कृषि करते हैं। हमने यहाँ पर काफी कोशिश की, फिर भी ब्राह्मणों ने दान नहीं दिया।" यह सुनकर विनोबा जी ने कहा—"यहाँ ब्रा० काश्त करते हैं, यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। हम खुद ब्राह्मण हैं और ब्राह्मणों की इज्जत बढ़ाना चाहते हैं। ब्रा० को लोभ नहीं होना चाहिये। जो लोभी है वह ब्रा० है ही नहीं।" विनोबा जी से जमीन न देने की शिकायत और विनोबा जी द्वारा कहे हुए उपर्युक्त वाक्य ४-५-५३ के 'आर्यावर्त्त' (पटना) में ठीक उसी प्रकार छपा था और उसका हवाला देकर १९५३ के मासिक 'त्यागी बन्धु' (हरिद्वार) के पृष्ठ २१ पर भी छपा था। इस प्रकार यहाँ भी दोनों ब्राह्मणों की एकता प्रदर्शित हुई है। यहाँ यह स्मरणीय है कि सम्पूर्ण बिहार में विनोबा जी के साथ श्री रामदेव ठाकुर (जिन्हें विनोबा जी ने हनुमान की संज्ञा दी थी) भ्रमण में साथ रहे और सर्वाधिक जमीन (एक लाख एकड़ से अधिक) देनेवाले राजा महेश्वरी प्र० ना० देव थे तथा ये दोनों ही भूमिहार ब्राह्मण थे।

महाराष्ट्रीय ब्राह्मण श्री रामकृष्ण हेगड़े, भू० पू० मुख्य मंत्री की भतीजी की शादी श्री सीता शरण शर्मा भू० ब्रा० से है।

ब्राह्मणों की एकता देश, धर्म आदि सभी दृष्टियों से अपेक्षित है। वेद, शास्त्रों में ब्राह्मण, विप्र, अग्रजन्मा आदि शब्द ही ब्राह्मणों के लिए आये हैं, मैथिल, कान्यकुब्ज, भूमिहार, सरयूपारीण, सनाढ्य, चितपावन, जुझौतिया आदि नहीं। ब्राह्मणों के मैथिल, कान्यकुब्ज, सरयूपारीण, सनाढ्य, त्यागी आदि देश या व्यवसाय परक भेद अर्वाचीन और कृत्रिम हैं।

ब्राह्मणों की एकता को मन, वचन से बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये। ब्राह्मणों के विभिन्न दलों में परस्पर वैवाहिक सम्बन्धों को अधिक प्रोत्साहन देना चाहिये। सर्वत्र विशेषणों को छोड़कर सीधे 'ब्राह्मण' शब्द का ही प्रयोग करना चाहिये। जाति पूछने पर भी सीधे 'ब्राह्मण' कहना चाहिये और कौन ब्राह्मण है ! कहने पर तब 'भूमिहार ब्राह्मण', 'मैथिल ब्राह्मण' आदि कहना चाहिये।

ब्राह्मणों की एकता को बढ़ाने में कुछ प्रमुख ब्राह्मणों के नाम इस प्रकार हैं :—

सर्वश्री पं० छोटेलाल शर्मा श्रोत्रिय, पं० गंगा सहाय गौड़, पं० मदन मोहन मालवीय, पं० दुर्गादत्त जोशी, पं० विजयानन्द त्रिपाठी, पं० रविशंकर शुक्ल, पं० वेंकटेश ना० तिवारी, जस्टिस गोकर्णनाथ मिश्र, राजा कृष्णदत्त दुबे, महामहोपाध्याय पं० चित्रधर मिश्र, पं० शिवराज मिश्र, महाराजा छत्र सिंह, महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह, डा० योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, पं० सन्त प्र० शर्मा, पं० सरयू प्र० मिश्र, पं० अप्पू राव शास्त्री, बाबू रामदयालु सिंह, पं० रामबहादुर शर्मा, रा० बा० रामचरित्र प्र० सिंह, एन० सी० चटर्जी, रा० ब० महेश्वर प्र० ना० सिंह, बाबू विश्वनाथ सिंह, प्रो० राजनाथ पांडेय, प्रो० परमेश्वर प्र० शर्मा, राजा महेश्वरी प्र० ना० देव, चौधरी रघुवीर ना० सिंह, ललित ना० मिश्र, पं० रुक्मिणी रमण सिंह, राजा राधिका रंजन चक्रवर्ती, सर हरगोविन्द मिश्र, राजा धीरेन्द्र ना० राय, रा. कवि रामधारी सिंह 'दिनकर', पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह, राजेश्वर प्र० ना० सिंह, स्वामी विमलानन्द सरस्वती, पं० सुदर्शनाचार्य शर्मा, पं० कुलदीप ना० राय 'झकर', डा० अनन्त कुमार राय, 'आग्नेय', पं० तारणीश झा, पं० दामोदर पाठक, प्रो० प्रेमदत्त मिश्र मैथिल, पं० प्रभुदयाल जुझौतिया, ललित विजय सिंह,

(डुमरैत), भदैनी चौधरी, क्यूना के दीक्षित (किनवार) वरुआ के तिवारी (बरुआर), मालवे, वसोतिया ।

वत्स :—द्रोणवार, जलैवार, सोनभदरिया, बगौछिया, वेल सूइया, करमहे, शमशेरिया, हरिअम्बे, रांगटिकैत, नरवरिया आदि ।

वशिष्ठ :—कस्तूवार, डरवलिया, मार्जनी मिश्र, त्रिफला, पांडेय आदि ।

पराशर :— सहदौलिया, एकसरिया, मैसूरिया, (महिसौरिया), हुरगाये, हसागामे के पांडेय आदि ।

कौशिक :—निकुतवार, नेकतीवार, दुधनैत, कठेश, कौशिक, कुसौंझिया आदि ।

शांडिल्य :—दिघवैत, दिघवे सम्दहपुर, नैनीजोर के तिवारी, रमैया पांडेय, डुमरा के ओझा (डुमरैत), सझवारे, लदौरे, कोदरिये, करमहे, शनैवार, कोरांचे, अनरिये, ब्रह्मपुरिये, चकसेरिया, सिहोगिया, पिलखियैत, गोआइत, बढाने, अइलवार, याजी, नेरियार, भोलरैत, चिकसौलिया, जक्कधारी आदि ।

गौतम :—गौतम, गौतमिया, वररमिया, दात्यायन, कर्णावती, सुरौरे कांटी, ब्रह्मपुरिये, सरबरिया, केसरवानी ।

भृगु भार्गव :—असवरिया, कोठहा, भृगुवंश ।

विष्णुवृद्ध :—कोथवैत, भट्टाणे, (भट्टनायक) ।

आत्रेय-कृष्णात्रय :—वेलथुवार, इनरवार, करणावती, करमौतिया, कुमितवार ।

गर्ग :—वेलौरिया, मामखोर के शुक्ल, वसहे पोखराम, वसमैत ।

कात्यायन :— अरैत ।

सावर्ण्य :—हलसरिया, सर्वाणिया, अरापे, बेमुआर, मलितवार, राढ़ी, मनकौलिया, भटकरजिया, दोमक्षवार, पंचोभेपद्मपुर, रमैया पांडेय ।

मैथिल पंजी में नोनीतवार का गोत्र काश्यप और कात्यायन लिखा है ।

उपाधि

वैदिक काल में और उसके बाद तक किसी के नाम के साथ कोई उपाधि नहीं थी। जैसे—कश्यप, पराशर, विश्वामित्र, नारद, कण्व, गौतम, भरद्वाज आदि।

बाद में मनु ने चार वर्णों के लिये अपनी स्मृति में चार उपाधियों का उल्लेख किया है: -

'शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षा समन्वितः।
वैशस्य गुप्त संयुक्त शूद्रस्य सेव्य संयुतन् ॥"

शर्मायुक्त ब्राह्मण का, रक्षायुक्त क्षत्रिय का, गुप्तयुक्त वैश्य का और सेवायुक्त नाम शूद्र का होता है।

बौद्धायन ने भी चार वर्णों के लिए चार उपाधि का उल्लेख किया है:--

"शर्मान्तं ब्राह्णस्योक्तं वर्मानां क्षत्रियस्य तु
गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं शूद्र जन्मतः ॥"

नाम के अन्त में शर्मान्त पद्धति (पदवी) ब्राह्मण की, वर्मन्त क्षत्रिय की, गुप्तान्त वैश्य की और दासान्त शूद्र की है।

इस प्रकार चार वर्णों के द्योतक शर्मा, वर्मा, गुप्त और दास उपाधियाँ मनुकाल में थी, जिनका व्यवहार आज भी यज्ञादि के समय तथा कुछ लोग नामान्त में हमेशा उसका प्रयोग करते हैं।

बहुत समय के बाद गुण, कर्म, वृत्ति के द्योतक तथा प्रशासकों (राजाओं) द्वारा प्रदत्त उपाधियों का प्रयोग होने लगा। अधिकाश उपाधियां मुस्लिम काल में प्रचलित हुई। उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के ब्राह्मणों की उपाधियां प्रायः भिन्न हैं। भिन्न-भिन्न ब्राह्मण दलों की उपाधियों मे भी कुछ विशेषता है। एक वंश में सदा एक ही उपाधि नहीं रही। एक ही वंश में अब तक कई उपाधियाँ बदलती आयी हैं। कहीं गुण कर्मानुसार उपाधियाँ बदली तो कहीं राजसत्ताधारियों द्वारा प्रदत्त उपाधियों के कारण। स्मृति पुराण के बाद भट्ट, मिश्र उपाधि का ही प्रयोग ब्राह्मणों के लिए मिलता है।

महाराजा गोविन्द चन्द्रदेव आदि गहरवार राजाओं के समय 'ठाकुर' और 'राउत' उपाधि भी ब्राह्मणों के लिये प्रयुक्त होने का प्रमाण मिलता है। जैसे काश्यप गोत्रीय मनेरिया मूल के पूर्वज ठाकुर गणेश्वर शर्मा के ताम्रपत्र में 'ठाकुर' तथा महाराज जयचन्द्र द्वारा प्रदत्त ताम्रपत्र की प्रतिलिपि में एक जगह 'राउत' उपाधि का उल्लेख मिलता है।

मिश्र, पांडेय, शुक्ल, द्विवेदी, त्रिबेदी, चतुर्वेदी आदि उपाधियाँ हिन्दू समाज द्वारा प्रदत्त हैं और जिस समय की है उसी समय की राय, सिंह आदि भी, लेकिन यह शासन द्वारा प्रदत्त है। पांडेय, त्रिवेदी आदि भी राजदरबार में प्रतिष्ठा होने से राय, सिंह और चौधरी आदि उपाधि मिल जाने से उसे ही धारण कर लेते थे। अंग्रेजों के समय में भी सर, राय बहादुर, दीवान बहादुर आदि शासक द्वारा दी हुई उपाधि प्रतिष्ठाजनक समझ उसकी प्राप्ति के लिए लोग प्रयत्न करते थे। उसी प्रकार उस समय भी शासन द्वारा प्रदत्त उपाधि प्रतिष्ठाजनक समझी जाती थी। इसलिए राय, सिंह आदि उपाधियाँ ब्राह्मणों में भी प्रचलित होने लगीं। प्रसिद्ध वैयाकरण 'पाणिनी' ने भी उपाधि को प्रतिष्ठा का द्योतक कहा है—'आस्पद प्रतिष्ठायाम्' वर्तमान काल में कुछ लोग स्वयं भी पांडेय और मिश्र के स्थान पर राय और सिंह लिखने लगे हैं। जबकि पिता तक परम्परागत उपाधि पांडेय और मिश्र की रही है।

"'कान्यकुब्ज' वंशावली"[26] के एक ही कश्यप गोत्र के देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मदारपुर के अधिपति भूमिहार ब्राह्मण के बालक गर्भू नामक ब्राह्मण के पुत्र कुतमऊ के तिवारी और उनके लड़के विनौर के अग्निहोत्री और आगे चलकर उनके ही पुत्र-पौत्रादि विनहारपुर के दुवे, कृपाणपुर के मिश्र, भागीर के दीक्षित, विघौली के शुक्ल और मिगलानी के आरथी आदि कहलाये।"

बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डा० श्री कृष्ण सिंह के पूर्व पुरुष की उपाधि तिवारी की थी - प० बासुदेव तिवारी। छठे पुश्त में उपाधि राय हो गयी—श्री प्राण राय। श्री प्राण राय के चौथे पुश्त में उपाधि सिंह हो

२६—ब्रह्मर्षिवंश विस्तर, पृष्ठ ११६

गयी—श्री जीवन सिंह, जिनके पौत्र डा० श्री कृष्ण सिंह थे और प्रपौत्र श्री बन्दी शंकर सिंह हैं।

ओइनवार मूल के ब्राह्मणों की उपाधि ठाकुर की थी। बाद में सिंह भी हो गयी। इस समय सिंह, ठाकुर और कुमर उपाधि का प्रचलन है। चकवार मूल के ब्राह्मणों की उपाधि मिश्र की थी पं० चिरायु मिश्र। बाद में खां उपाधि हुई - श्री धर्म खां, श्री आनन्द खां। अकबर के शासन काल में शाही उपाधि मिली—श्री संग्राम शाही। फिर उपाधि सिंह की हुई और इस समय सिंह, राय और खां उपाधि का प्रचलन है। दिघवे (दिघवैत) मूल के ब्राह्मणों की उपाधि तिवारी की थी, लेकिन इस समय तिवारी, शाही, सिंह, राय, ठाकुर, चौधरी, कुमर, झा आदि उपाधियाँ प्रचलित हैं।

सहस्रामे मूल के ब्राह्मणों की उपाधि ठाकुर की थी। इस समय ठाकुर तथा चौधरी उपाधि का प्रचलन है।

एकसरिया मूल के ब्राह्मणों के मूल पुरुष की उपाधि दीक्षित की थी—पं० जगन्नाथ दीक्षित। इस समय दीक्षित, शाही, सिंह, मिश्र आदि उपाधियाँ प्रचलित हैं।

जैथरिया मूल के ब्राह्मणों के पूर्व पुरुष की उपाधि देव की थी—श्री देवहरदेव। इस समय सिंह और राय उपाधियों का प्रचलन है। द्रोणवार मूल के ब्राह्मणों की प्राचीन उपाधि पांडेय की थी। मधुवनी जिले के हिसार, भगवतीपुर, छपरा जिले के बभनगामा, बसही तथा पूर्णियाँ जिले के ढोल-बज्जा आदि में पांडेय तथा अन्यत्र राय, सिंह और ठाकुर उपाधि का प्रचलन है। खड्गधारी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण नवाही, देवनाथपट्टी और कवड़ा में झा उपाधि धारी तथा वनगांव में चौधरी उपाधिधारी हैं।

पटना जिले के कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मणों के आदि पुरुष की उपाधि भट्ट की थी—श्री न्याय भट्ट। इस समय सिंह उपाधि का प्रचलन है।

सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों की उपाधि दीक्षित की थी—बाद में आचार्य, यश आदि होते हुए वर्तमान में मिश्र, सिंह, चौधरी और चौबे आदि उपाधियाँ प्रचलित हैं।

भूमिहार ब्राह्मण समाज

काशी नरेश के पूर्व पुरुष की उपाधि थी–पं० श्री कृष्ण मिश्र। इस वंश के काशी राज्य प्राप्त कर्त्ता श्री मनसाराम मिश्र तक मिश्र उपाधि का व्यवहार रहा। उनके द्वारा चलाये गये सिक्के में इसका उल्लेख मिलता है:—"शिव-शिव जपत आठो याम। कहियत मिश्र मनसा राम।" बाद में सिंह उपाधि हो गयी—महाराजा बलवन्त सिंह। इस समय भी सिंह उपाधि का प्रचलन है।

भूमिहार ब्राह्मणों में प्रचलित उपाधियाँ प्रायः ये हैं :—

मिश्र, पांडेय, शुक्ल, द्विवेदी (दुवे), त्रिवेदी (तिवारी), चतुर्वेदी (चौवे), दीक्षित, उपाध्याय, पाठक, मालवीय, याजी, दत्त, देव, शाही, कार्यी, प्रधान, ईश्वर, झा, ओझा, कुमर, खां, राय, सिंह, ठाकुर, चौधरी, महतो, मौआर, हजारी आदि।[27]

वर्तमान समय में कुछ राजनीतिज्ञ तथा अन्य लोग अपने नाम से उपाधियाँ हटा चुके हैं। जैसे–श्री महेन्द्र प्रसाद (सांसद), श्री जगतानन्द (भू० पू० पुलिस महानिदेशक), डा० श्री निवास, डा० वीरेन्द्र किशोर आदि।

कुछ लोग उपाधि के स्थान पर गाँव के नाम का व्यवहार करते हैं। जैसे :—श्री रामनिहोरा हरिपुरी श्री देवेन्द्र बेनीपुरी आदि। कुछ लोग उपाधि के स्थान पर गोत्र का व्यवहार करते हैं, जैसे—श्री रामचन्द्र भारद्वाज (सांसद), श्री रमण शांडिल्य आदि।

मौरीशस निवासी श्री गजाधर सिंह और श्री गोवर्धन सिंह के वंशज अपने नाम के अन्त में सिंह के साथ या सीधे गजाधर और गोवर्धन भी लिखते हैं, जैसे—श्री राधा मोहन सिंह गजाधर, श्री मदन मोहन गजाधर (भारत में मौरीशस के भू० पू० राजदूत), श्री रामचन्द्र गोवर्द्धन आदि।

---

२७ -मिश्र, पांडेय, शुक्ल, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, आदि उपाधियां कान्यकुब्ज और सरयूपारीण ब्राह्मण भी धारण करते हैं। ईश्वर, झा, कुमर, खां, राय, सिंह, ठाकुर, चौधरी आदि उपाधियाँ मैथिल ब्राह्मण भी धारण करते हैं। मौआर और महतो की उपाधि गया वास पंडों की भी है, हजारी उपाधि कान्यकुब्ज ब्राह्मण की भी है।

कुछ लोग नामान्त में विद्यार्थी भी लगा चुके हैं, जैसे—श्री गणेश शंकर विद्यार्थी (भू० पू० विधायक, मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी, बिहार के नेता) तथा डा० नन्दकिशोर विद्यार्थी आदि। सभी वर्ग की महिलाओं की उपाधि देवी की रही है। लेकिन अब पढ़ी लिखी महिलायें भी अपने पति की उपाधि ही धारण करने लगी है। जैसे—प्रो० डा० श्रीमती प्रतिमा ठाकुर डा० रंगीला सिंह, श्रीमती रेणुका शर्मा आदि।

पुरोहिती

प्राचीन काल में ब्राह्मणों के आज जैसे पुरोहित नहीं होते थे। इसीलिए कश्यप, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, गर्ग, शांडिल्य, गौतम आदि किसी ब्राह्मण के घर किसी ब्राह्मण पुरोहित के रखे जाने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है।

पुरोहित का अर्थ है आगे स्थापित या रहनेवाला। प्रत्येक ब्राह्मण श्रौत स्मार्त कर्म में आगे में अग्नि की स्थापना कर आहुतियां दिया करते थे। ऋग्वेद में अग्नि को पुरोहित कहा गया है :—"अग्नि मीले पुरोहितम्। यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारम रत्नधातमम्।। ब्राह्मण लोग स्वयं ही अपने धर्म-कर्म करते थे। बड़े-बड़े यज्ञों में अनेक ऋत्विजों की आवश्यकता होने पर विद्वान ब्राह्मणों को आमंत्रित किया जाता था और वे ऋत्विजों [१४] का काम किया करते थे। अग्नियों का आधान लोप हो जाने से ब्राह्मण पुरोहित शून्य हो गये और ब्राह्मणों ने भी प्रतिनिधि रूप में ब्राह्मण को पुरोहित बनाये। क्षत्रिय आदि दूसरे वर्णों के पुरोहित आचार्य तो ब्राह्मण होते ही थे, क्योंकि दक्षिणा का अधिकार मात्र ब्राह्मणों का था। पुरोहिती को मन्द कहनेवाले वशिष्ठ भी क्षत्रिय के पुरोहित थे ही। धीरे-धीरे पुरोहिती वंश परम्परागत— ठीकेदारी जैसी हो गयी। संस्कृत शिक्षा के ह्रास

१८—पटना जंक्शन स्टेशन के निकट पुनर्निर्मित हनुमान मंदिर में नवीन प्रतिमाओं के प्रतिष्ठापन में मंदिर के पुजारी श्री रामदास के अतिरिक्त काशीस्थ हिन्दू वि० वि० के ज्योतिष विभागाध्यक्ष श्री राजमंगल उपाध्याय (स० ब्रा०) एवं प्रख्यात पुलिस अधिकारी श्री किशोर कुणाल (भू० ब्रा०) ऋत्विज का काम कर रहे थे और यज्ञ के आचार्य थे पं० राजेन्द्र पांडेय।
(देखिये—'आर्यावर्त', पृष्ठ १, ४ मार्च १९८५)

है यजमान और पुरोहित दोनों धार्मिक शिक्षा से अनभिज्ञ होने लगे तथा कर्म के मर्म को न समझ जैसे-तैसे कर्म कराते रहे।

ब्राह्मणों में पुरोहिती करनेवाले और न करनेवालों का दो दल हो गया। इस परिस्थिति को देखते हुए दल भेद मिटाने और सभी ब्राह्मणों (मैथिल, भूमिहार, गौड़, कान्यकुब्ज, सरयूपारीण आदि) में एकता लाने की दृष्टि से स्व. श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर विभिन्न भाषा के ग्रंथों तथा समाज का अध्ययन कर एक पुस्तक 'ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर' की रचना की तथा जन्म से मरण तक के सभी संस्कारों से युक्त एक बड़ा ग्रन्थ 'कर्म कलाप' हिन्दी विधि सहित लिखकर ब्राह्मणों के लिए कर्म की दिशा में मार्ग दर्शन दिया तथा भूमिहार ब्राह्मणों में भी संस्कृत शिक्षा का विशेष प्रचार तथा पुरोहिती आन्दोलन प्रारम्भ किया। संस्कृत के अनेकों विशिष्ट विद्वान तैयार हो गये। पुरोहिती आन्दोलन में अनेकों विशिष्ट और सामान्य लोगों ने सहयोग दिया।

पुरोहिती आन्दोलन के समर्थक कन्हैयाचक, खगड़िया निवासी श्री अयोध्या प्र० मिश्र (तत्कालीन अध्यापक मारवाड़ी पाठशाला दुमका) ने काशी के तत्कालीन महाराज कुमार आदित्य ना० सिंह को पत्र लिखकर उनका विचार जानना चाहा। १६-४-२५ को पत्र लिखकर महाराज कुमार ने अपना विचार प्रकट किया:—"कोई ब्राह्मण छः कर्म करते हैं, कोई तीन ही कर्म करते हैं। तीन कर्म करनेवाले ब्राह्मण सनातन काल से चले आते हैं। कोई आज नये पैदा नहीं हुए हैं। छः कर्म में तीन जीविका के लिए हैं। अस्तु जीविका के लिए ब्राह्मण मात्र भिक्षुकी वृत्ति कर सकते हैं और भू. ब्रा. अपनी अयाचक वृत्ति से जीवन न कर सकें तो दान लेकर या पुरोहिती वृत्ति करने में कोई हानि नहीं है। श्री प्रयाग राज में त्रिवेणी संगम पर सैकड़ों भूमिहार ब्राह्मण इस समय भी दान ले रहे हैं। उनको कोई निन्दित नहीं कहता है।

काशी राज्य के तत्कालीन मुख्य सचिव कर्नल विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह सी० आई० ई० ने कुम्हारपाड़ा (संथाल परगना) के पंडित सत्य नारायण चौधरी द्वारा लिखे पत्र के उत्तर में ६-५-२५ को पुरोहिती पर अपनी सम्मति इस प्रकार दी थी :—"मेरी राय में पुरोहिती वृत्ति करने में

श्री मुक्तेश्वर प्रसाद सिंह अभियन्ता, उजाँय, सीवान :—"इतने कम कीमत में आपने गागर में सागर भर कर समाज के लिए एक अमूल्य तोहफा भेंट किया।"

श्री विन्ध्यवासिनी सिंह, सम्पादक 'ब्रह्मर्षि सन्देश' कानपुर :—"इतने छोटे कलेवर में इतना ज्ञान समेटे यह पुस्तक यहां बड़ी लोकप्रिय हो गयी है। प्रायः हर बन्धु इसे पहले पढ़ना चाहता है।"

विद्यासागर, विद्यावाचस्पति डा० अनिल कुमार राय 'आंजनेय' पी-एच० डी० (महामंत्री अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन तथा अ. भा. अन्तर जनपदीय परिषद् एवं सम्पादक 'ज्ञान तरंगिनी') उजियार, बलिया:— आपकी ललक और एकांत निष्ठा का सबूत है, 'भूमिहार ब्राह्मण समाज' नाम की यह पुस्तक। यह पुस्तक आपके अन्तः प्रकाश से आलोकित है। ऐसे स्वाभिमान पूर्ण कार्य के लिए हम आपके आभारी हैं।"

'ब्रह्मर्षिवंश' पर सम्मतियां :—

प्रसिद्ध साहित्यकार पं० शिवसागर मिश्र (भू. पू. निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालय, भारत सरकार) :—"ब्राह्मणों को जाग्रत करने तथा देश भर में फैले ब्राह्मणों के बीच यह पुस्तक मील के पत्थर का कार्य करेगी। लेखक की यह पुस्तक ब्राह्मण समाज के बीच घनिष्ट मैत्री और अपनत्व की भावना भरने में सहायक सिद्ध हो सकेगी। यह एक वर्ग का लघु इतिहास है और इसे इसी रूप में देखा जाना चाहिए।"

विद्यासागर विद्यावाचस्पति पं० कुलदीप ना० राय 'झड़प' :—"पुस्तक में ब्राह्मण समाज के विषय में जानकारी की बहुत सी बातें भरी हुई है। पुस्तक महत्वपूर्ण है। ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक की उपलब्धि हेतु शतशः बधाई।"

मैथिल ब्राह्मण वंशावतंश पं० ताराचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' (ओल्ड स्टेशन रोड, अलवरः राजस्थान) "आपने ब्रह्मर्षिवंश लिखकर अति सराहनीय कार्य किया है,—जो शब्दों में वर्णित नहीं हो सकता।"

प्रो० पं० प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल' एम. ए. (त्रय) हिन्दी, संस्कृत और ब्रज के कवि तथा श्रीकृष्ण चैतन्य इन्टर कालेज, नन्दगांव, मथुरा :—"इस पुस्तक को लिखकर आपने सचमुच ब्राह्मण वर्ग का बड़ा हित किया है। आपका श्रम जो 'ब्रह्मर्षिवंश' के रूप में मूर्त्त हुआ है, निस्सन्देह महोपकारी

सिद्ध होगा। इस पुस्तक के लेखक के कारण आप निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं।"

श्री उपेन्द्र राय, आर० पी० एफ०, एस० ई० रेलवे, वाल्टेयर, विशाखा पत्तनम् (आंध्र) "आपका अथक परिश्रम और लगन ने समाज को ऐसा मणि 'ब्रह्मर्षिवंश' दिया कि इसके प्रकाश में सारी शंकायें में निमूंल हो गई। भगवान आपको शतायु बनावें।"

श्री विष्णु कुमार शर्मा (दधीचि ब्राह्मण मंडल, नागपुर) :—'ब्रह्मर्षिवंश उत्तम कोटि का सुन्दर एवं दुर्लभ चीज है। आपने बहुत सुन्दर ढंग से ब्राह्मणों का मिलान किया है।"

श्री वसन्त कुमार पारीक (कानपुर) :—'ब्रह्मर्षिवंश' में देश काल के अनुसार विभिन्न नामों से विख्यात ब्राह्मण जाति के सम्बन्ध में जो जानकारी आपने दी है, वह वस्तुतः अति प्रशंसनीय है।"

ब्रह्मर्षिवंश भाग २ पर सम्मतियाँ—

विद्या विद्यावाचस्पति पं० कुलदीप नारायण राय 'झड़प' :—"ब्रह्मर्षिवंश (२) संक्षिप्त तथा उपयोगी संकलन है। अपनी जाति का विश्वकोश है। आपका यह प्रशंसनीय प्रयास इतिहास का एक महत्वपूर्ण अभिलेख बनकर अपनी ज्योति फैलायगा।"

प्रो० पं० रामचन्द्र शर्मा एम० ए० एम० फिल :—"यह ग्रन्थ लिखकर आपने समाज का बहुत कल्याण किया है। नागरिक सुविधाओं से वंचित गांव में रहकर भी आपने यह कार्य कर डाला। यह देखकर दांतो तले उंगली दबानी पड़ती है। आपकी यह पुस्तक हर परिवार के पास होनी चाहिए। इस पुस्तक के लेखन और प्रकाशन के लिए मैं आपको शतशः साधुवाद देता हूँ।

श्री रामनरेश शर्मा (अभियन्ता) गणेशदत्त परिषद्, पटना ६ :— "आपकी पुस्तक की यहां काफी प्रशंसा हो रही है। ब्रह्मर्षि-वंश कोश बनाने की दिशा में पहला प्रयत्न आपका ही रहेगा। सुदूर गांव में निवास करते हुये इतनी सारी सामग्री एकत्र कर लेना आपके सतत प्रयत्न और उद्यमशीलता का परिचय देता है। यह पुस्तक हमेशा संदर्भ ग्रंथ की तरह उपयोगी होगी।"

—:०:—